पक्षी-ग्रंथावली—५

उथले जल के पक्षी

[उथले जल में चारा चुगने वाले तथा वैसे ही अन्य पक्षियों की पहचान, रंग-रूप, आकार-प्रकार आदि का वर्णन]

लेखक

जगपति चतुर्वेदी,

स० सम्पादक 'विज्ञान'

चित्रकार

हरिदास चटर्जी



किताब महल इलाहाबाद

प्रथम संस्करण १९५४

लेखक की अन्य पुस्तकें

विलुप्त जन्तु	तत्वों की खोज में
बिजली की लीला	कीटाणुओं की कहानी
समुद्री जीव-जन्तु	शल्य-विज्ञान की कहानी
वनस्पति की कहानी	आविष्कारकों की कहानी
जीने के लिए	तारा-मंडल की कहानी
ज्वालामुखी	शिकारी पक्षी
भूगर्भ विज्ञान	जलचर पक्षी
पेनिसिलिन की कहानी	उथले पानी के पक्षी
वैज्ञानिक आविष्कार भाग १, २	बन वाटिका के पक्षी
परमाणु के चमत्कार	अद्भुत जन्तु
कोयले की कहानी	विलक्षण जन्तु
विलुप्त वनस्पति	स्तनपोषी जन्तु

प्रकाशक—किताब महल, इलाहाबाद।
मुद्रक—डिक्सनरी प्रेस, प्रयाग।

विलुप्त वनस्पति

अरबों वर्ष पूर्व किस प्रकार वनस्पतियों का उदय तथा विकास हुआ, बहुत से वर्ग किस प्रकार लुप्त हुए तथा उनसे उत्कृष्ट वनस्पति वर्ग उत्पन्न होते गए? वनस्पतियों की वृद्धि के साधनों का कैसे विकास हुआ? बीजाणु क्या है, बीजाणु की तथा बीजाणु के पश्चात् कैसे बीजों की उत्पत्ति हुई? पत्तियों का उदय कैसे हुआ? करोड़ों वर्ष पूर्व काल में (कारबोनिफेरस) में कैसे घोर जंगल उत्पन्न होकर धरती की कोख में दब गये तथा पत्थर कोले का जन्म दे सके? गोंडवाना देश की विचित्र स्थिति कैसी थी? जिह्वापत्री नामक जाति के वनस्पति क्यों इन गोंडवाना महादेश के भागों, भारत, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, दक्षिण अमेरिका आदि में ही मिलते हैं? यूरोप, उत्तरी अमेरिका आदि में वे क्यों नहीं मिलते? इसी प्रकार के विचित्र प्रश्नों का समाधान इस पुस्तक में पढ़ें।

मूल्य २)

किताब महल * प्रकाशक * इलाहाबाद

अच्छी पुस्तकें अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण करती हैं

और

हम आपको आपके व्यक्तित्व के निर्माण-कार्य में यथाशक्ति सहायता प्रदान करने के लिए उत्सुक हैं। यदि आपका नाम अन्य हजारों ग्राहकों की भाँति हमारी उस सूची पर लिखा हुआ नहीं है, जिन्हें हम बराबर अपने नये प्रकाशनों की सूचना देते रहते हैं तो आज ही एक कार्ड अपने नाम पते सहित हमारे पास लिख भेजें। एक बार आपका कार्ड मिल जाने पर हम आपको नियमित रूप से विविध प्रकार के मनोरंजक साहित्य के—जिनमें उपन्यास, (जासूसी और सामाजिक) कहानी संग्रह तथा अन्य साहित्य आदि भी सम्मिलित हैं—नये प्रकाशनों की खबरें भेजते रहेंगे। अपने यहाँ के किसी भी पुस्तक-विक्रेता से हमारी पुस्तकें माँगें। अगर कोई दिक्कत हो तो सीधे हमें लिखें।

एक और परामर्श

(१) आप आजकल के बढ़े हुए डाकखर्च से परिचित ही होंगे। स्थिति यह है कि एक रुपये की पुस्तक डाक द्वारा मँगाने पर लगभग एक रुपया ही व्यय पड़ जाता है। इसलिए अपने यहाँ के पुस्तक-विक्रेता से अनुरोध कीजिये कि वह आपकी रुचि की पुस्तकें हमसे मँगाये। हम पुस्तक-विक्रेता को भी सुविधाएँ देंगे और आपकी भी बचत में सहायक होंगे।

(२) यदि कोई पुस्तक-विक्रेता आपके अनुरोध पर विचार न करे तो आप उसका नाम-पता हमें लिख भेजिये। आपकी सुविधा के लिए हम उनसे आग्रह करेंगे कि वे आप द्वारा माँगी गयी पुस्तकें अपने यहाँ रखें।

किताब महल ● प्रकाशक ● इलाहाबाद

आविष्कारकों की कहानी

इन जीवन-कथाओं में उन वातावरणों का मनोरम चित्रण है जिनमें आविष्कारकों को रह कर अपनी अनुपम बुद्धि तथा कार्य-शक्ति का उदाहरण रखना पड़ा होगा। बेल, एडिसन, मारकोनी आदि के नाम तो हमें जब-तब सुनने को भी मिलते हैं; परन्तु हम यह नहीं अनुभव करते कि किस प्रकार अपने परिवार के सदस्यों से भी छिप कर, उनके तानों से बचने का उद्योग कर मारकोनी को रात-दिन ऐसी कल्पना को मूर्त्त रूप देने का साहस रखना पड़ा जिसे आज बेतार का तार कहा जाता है। इन प्रसिद्ध नामों के अतिरिक्त अपने पुत्र को मनोरंजन की सामग्री देने के लिए वयोवृद्ध डनलप को अकस्मात् पहिये की ठोस हाल के स्थान पर वायुभरी रबड़ नली रखने की सूझ उस समय विशेष महत्त्व की भले ही न जान पड़ी हो; परन्तु आज हमें उस घड़ी की स्मृति विशेष उत्प्रेरणा का कारण होती है। फोर्ड को अपनी भीषण आर्थिक विपत्ति तथा दर्जनों अभियोगों में पराजय से साहस छोड़ देने का एक भी क्षण आ सका होता तो आज हम फोर्ड द्वारा निर्मित इतनी सस्ती जनसुलभ मोटर गाड़ियाँ न देख पाते। विलियम फ्रीज़ी ग्रीनी का नाम आज फिर से स्मृत किया जाने लगा है जिसने चलचित्र का आविष्कार कर संसार को विलक्षण मनोरंजन की सामग्री उपस्थित किया; परन्तु अपने जीवन में दिवालिया बन कर वह अनेक बार जेल की हवा खाता रहा। इसी तरह सभी कहानियाँ विलक्षण हैं।

मूल्य २) रु०

किताब महल * प्रकाशक * इलाहाबाद

विलुप्त जन्तु

चट्टान के अन्दर जीवों की ठठरी के अवशेष कैसे रह सकते हैं ? हाथी की ऊँचाई के बराबर कौन पक्षी होता था ? कौन-सा जन्तु ३० फीट तक ऊँचा होता था ? किस जानवर के जाँघ की हड्डी ६ फीट की पाई जाती थी ? कौन से भारी जंतु दो पैर पर चलते थे ? किस चिड़िया के फैले हुए पंख उसके शरीर को २५ फीट चौड़ा बना सकते थे ? पैर से साँस लेने वाला त्रिफंकांगी जंतु कैसा होता था ? पूँछ में भाले और पीठ पर हड्डियों की खड़ी ढालें किस जंतु के होती थीं ? छः सींगों और ८० मन बोझ का षट्शृङ्गी जंतु कब और कहाँ पैदा हुआ ?

ऐसी समस्याओं को समझने के लिए आप यह पुस्तक पढ़ें जिसमें ५० करोड़ वर्ष पूर्व से आज तक के उन जंतुओं का वर्णन है जिनका संसार से लोप हो गया। उनकी कहानी उपन्यास या जासूसी कथा से अधिक रोमांचक है। विलुप्त जंतुओं की कथा के साथ पृथ्वी की कहानी की झाँकी भी देखने को मिलेगी।

मूल्य २) रु०

किताब महल * प्रकाशक * इलाहाबाद

प्राक्कथन

पता नहीं किस युग में अगस्त्य ऋषि ने समुद्र का जल आचमन कर सोख लिया था। टिटिह, टिटिहिरी पक्षियों के निवेदन पर उन्होंने कृपा की थी, परन्तु कविता कहानी में हम केवल कथा तथा टिटिह टिटिहरी का नाम भर सुनकर चुप हो जाते हैं। हमारे हृदय में कदाचित् कभी यह जानने की उत्सुकता होती हो कि टिटिह टिटिहरी (टिट्टिभ) या ऐसे ही अन्य पक्षियों के क्या रंग रूप हो सकते हैं। हिन्दी में प्रथम बार इन पक्षियों का कुछ विशेष विवरण चित्रों सहित इस पक्षी ग्रंथावली में प्रस्तुत हो रहा है। इस पुस्तक में उथले जल में चल कर आहार ढूँढने वाले तथा भूमि पर ही कहीं ओट में घोंसले बना कर सन्तानोत्पादन करने वाले पक्षियों का वर्णन दिया जा रहा है। हिन्दी में ऐसे रूप के पक्षियों को प्रकट करने के लिए कोई एक शब्द कदाचित् नहीं है अतएव हमें 'जलपंकचारी' या 'पंकचारी' (Waders) बहुत सुन्दर जँचता है। किन्तु पुस्तक का नाम जानबूझकर यह न रखकर परिचित रूप में 'उथले जल के पक्षी' ही रक्खा गया है। आशा है हमारे पाठक इस पुस्तक को रुचिकर तथा ज्ञानवर्द्धक पाएँगे।

जगपति चतुर्वेदी

विषय-सूची

वन-उपवन के पक्षी

बाग-बगीचों, उपवनों, विरल जङ्गलों या बस्तियों के आस-पास रहने वाले जिन पक्षियों का वर्णन 'वन वाटिका के पक्षी' में नहीं आ सका है। उनका वर्णन इस पुस्तक में दिया गया है। उनमें से अधिकांश को हम साधारण प्रयत्न से ही देख सकते हैं, परन्तु उनकी पहचान, नाम, आकार-प्रकार, निवास, रहन-सहन तथा सन्तानोत्पादन आदि के सम्बन्ध में विशेष जानकारी नहीं रखते। इस सम्बन्ध की जिज्ञासा पूर्ति के लिए इस पुस्तक में उनका सरल वर्णन दिया जिनमें अधिकांश के चित्र भी दिये गये हैं। यह पक्षी ग्रन्थावली की चौथी पुस्तक है। हिन्दी में अभी तक कोई भी पुस्तक इतने विस्तृत तथा मनोरंजक विवरण के सम्बन्ध पक्षियों के सम्बन्ध में प्रकाशित नहीं हुई है।

मूल्य २) रु०

किताब महल * प्रकाशक * इलाहाबाद

शल्य विज्ञान की कहानी

प्राचीन काल में प्रागैतिहासिक युग में भी चीर-फाड़ के प्रमाण किस प्रकार मिलते हैं? जब किसी विज्ञान का ही सर्वथा अभाव नहीं था, बल्कि सभ्यता का भी विकास नहीं हुआ था; लोहे, ताँबे, काँसे आदि के भी हथियार नहीं बने थे, तब भी संसार के किसी कोने में कठोर, नोकीले पत्थरों से ही मनुष्य अपनी खोपड़ी क्यों स्वेच्छा से फोड़वाता था? सभ्यता का उदय होने पर भारत, चीन, मिस्र, यूनान, रोम, अरब आदि देशों ने किस तरह चीर-फाड़ की विद्या या शल्य-विज्ञान का प्रारम्भ किया? मध्य युगों में किस प्रकार घोर अंधकार का फैलाव रहा? किस तरह कब्र से मुर्दे उखाड़ या चोरी कर कहीं-कहीं लोगों ने चीर-फाड़ का विशेष ज्ञान प्राप्त करना प्रारम्भ किया? इन बातों की लोमहर्षक तथा विलक्षण कहानी इस पुस्तक में दी गई है।

भारत में प्राचीन काल में किस प्रकार के यंत्र तथा शस्त्र भारतीय प्राचीन चिकित्सकों द्वारा प्रयोग किये जाते थे? धन्वंतरि कौन थे? उन्होंने शल्य विज्ञान का किस प्रकार प्रारम्भ किया? सुश्रुत संहिता में शल्य-विज्ञान का वर्णन किस प्रकार मिलता है? इन बातों की चर्चा भी मूल श्लोकों को देकर की गई है।

इन रूपों में शल्य-विज्ञान के प्राचीन तथा मध्यकालीन इतिहास के साथ आधुनिक शल्य-विज्ञान का अत्यन्त विलक्षण, उन्नत तथा भव्य वर्णन भी इस पुस्तक में पढ़ें। हिन्दी में नवीन तथा प्राचीन शल्य-विज्ञान की चर्चा प्रथम बार एकत्र पढ़ने का अवसर इस पुस्तक द्वारा प्राप्त करें।

मूल्य २) रु०

किताब महल * प्रकाशक * इलाहाबाद

वनवाटिका के पक्षी

हमारे बाग-बगीचों, ग्रामों आदि में सैकड़ों पक्षी होते हैं जिनका हम कदाचित् नाम भी बताने में असमर्थ हैं। बहुत से पक्षी बारहमासी होते हैं, जो सदा एक क्षेत्र में ही दिखाई पड़ते तथा अण्डे देकर सन्तान वृद्धि करते हैं किन्तु बहुत से पक्षी खञ्जन की भाँति अन्यत्र से आकर केवल शरद् ऋतु में बाग-बगीचों, खेतों आदि में दिखाई पड़ते हैं। इन सब बारहमासी तथा प्रवासी पक्षियों के नाम-धाम, आकार-प्रकार, निवास आदि का वर्णन इस पुस्तक में दिया गया है। जिन पक्षियों को केवल देखकर ही हम चुप लगा जाते हैं, उनका स्थानीय या पर्याय नाम देकर वैज्ञानिक रूप में विवरण दिया गया है। अधिकांश जाति के पक्षियों के चित्र भी हैं। हिन्दी में पक्षियों के सम्बन्ध में यह प्रथम पुस्तक है। जिसमें बाग-बगीचों के इतने अधिक पक्षियों का वर्णन उनके अधिकांश सुन्दर चित्रों के साथ दिया गया है।

मूल्य २) रु०

किताब महल * प्रकाशक * इलाहाबाद

जलचर पक्षी

हंसो का रङ्ग-रूप, आकार-प्रकार कैसा होता है, उनका जनन-स्थान कहाँ है, प्रवास कर कहाँ-कहाँ तक जाते हैं, मोती चुगने तथा नीर-क्षीर विवेक की साहित्यिक मान्यता रखने वाले पाठक हंस के सम्बन्ध में उपर्युक्त प्रश्नों का उत्तर तथा हंसों का वैज्ञानिक वर्णन इस पुस्तक में देख सकते हैं। बक वंश, क्रौंच वंश, दिवाकुररी वंश, जलकाक वंश, दीर्घपाद वंश, दर्वीमुख वंश आदि के जलचारी पक्षियों का भी आकार-प्रकार, भेद-प्रभेद, निवास तथा प्रवास स्थल, जीवन क्रम आदि का विशद वर्णन उनके अधिकांश चित्रों के साथ प्रस्तुत पुस्तक में वर्णित है। प्राचीन युगों से पक्षियों के चित्रांकन के कैसे-कैसे प्रयत्न हुए हैं इस पर भी एक अध्याय है। पक्षियों की उपयोगिता बता कर एक अध्याय में यह भी बताया गया है कि यदि पक्षी न हों तो तीन वर्ष में कीटों की इतना संख्या-वृद्धि हो जाय कि धरती पर कहीं हरियाली न रह जाय। हिन्दी में जलचारी पक्षियों का वर्णन एक स्थान पर देने वाली यह प्रथम पुस्तक ही है।

मूल्य २) रु०

किताब महल * प्रकाशक * इलाहाबाद

चित्र-सूची

वृक्षशायी जलपंकचारी

पंकचारी से हम उस प्रकार के पक्षियों का अर्थ लेते हैं जो नदियों, जलाशयों के तटीय जलखंडों के उथले जल में पैरों से चलकर अपना शिकार ढूँढ़ते हैं। नये शब्द गढ़कर इस विशेष प्रकार के पक्षियों का द्योतन करने के लिए हम विवश हैं। इस वर्ग के पक्षियों की हम कुछ गुणों के कारण गिनती तो करा लेते हैं, परन्तु उनको सदा जलखंड के निकट ही पाया जाना आवश्यक नहीं। सच बात तो यह है कि हम पंकचारी या जलपंकचारी वर्ग में गिनने वाले पक्षियों को केवल घोर जङ्गलों को छोड़ कर अन्य सभी स्थलों में पा सकते हैं। कौए और चीलों के पश्चात् पक्षियों में इन्हीं को सर्वाधिक संख्या में पाया जाता है। वे बागों, ग्रामों, मैदानों आदि में भी पाये जाते हैं। शिकारियों के लिए जलपंकचारी पक्षी अधिक प्रिय होते हैं किन्तु हम कुछ स्थानीय पक्षियों को छोड़कर इन जलपंकचारी पक्षियों की अनेक जातियों से अपरिचित ही रहते हैं। अतएव इनकी पहचान तथा वर्णन मनोरञ्जक विषय हो सकता है।

पंकचारी या जलपंकचारी पक्षियों के समान ही गुण रखने वाले अनेक पक्षी जलखण्डों के निकट नहीं पाये जाते, किन्तु कुछ समानताओं के कारण उनकी चर्चा जलखण्डों के निकट रहने वाले पक्षियों के साथ ही करनी पड़ती है। पहली बात हम यह देख सकते हैं कि कहीं छोटा-मोटा नाला या उथला पानी पार करना हो तो हम पैरों का कपड़ा समेट कर ऊपर कस लेते हैं, इसी प्रकार जल पंकचारी पक्षियों को भी हम

अपने पैर अधिकांशतः पतत्रों (परों) से शून्य, नग्न रूप का ही पा सकते हैं। उथले पानी में चल सकने के लिए उनके पैर लम्बोतरे भी होते हैं। अतएव ऐसे पक्षी दीर्घचरण नाम भी पा सकते हैं। अपवाद स्वरूप चहा (पंककीर) तथा बगुले (वक) आदि कुछ पक्षी ऐसे अवश्य होते हैं जिनके पैर पतत्रशून्य या नंगे नहीं होते किन्तु इन पक्षियों की पहचान में सन्देह नहीं हो सकता। अतएव हमें जल पंकचारी पक्षियों की रूपरेखा उनकी पहचान करा सकती है।

जिन जलपंकचारी पक्षियों को पानी से अधिक मतलब रहता है, वे सभी पानी में तैर सकने की सामर्थ्य रखते हैं। उनमें से कुछ के पैर की उँगलियाँ झिल्ली (अंगुलिजाल) से आबद्ध होती हैं। कुस्या चहा (कषीका) तथा हंसावर (वक हंस या बलाक) पक्षी इस तरह के ही अपवाद हैं किन्तु इनके भी पैर इतने अधिक लम्बे होते हैं कि केवल झिलीवद्ध उँगलियों (अंगुलिजाल) के कारण इनको बत्तख होने का सन्देह नहीं हो सकता। केवल इनके पैरों की झिल्लीवद्ध उँगलियों के कारण बत्तख से ही समानरूपता की आशङ्का हो सकती है। इसके विपरीत स्वभावतः तैराक जल पंकचारी पक्षियों में कोई भी अन्य पक्षी बत्तख (हंसक) की भाँति अंगुलिजाल युक्त पैर नहीं रखता।

दीर्घचरण तथा नग्नपाद होने तथा साथ ही लम्बे चंचु रखने के अतिरिक्त अन्य कोई भी ऐसा समान गुण या लक्षण नहीं पाया जाता जो सभी जल पंकचारी पक्षियों में होता हो। यथार्थतः उपर्युक्त कतिपय बाह्य रूपरेखा को छोड़कर जलपङ्कचारी पक्षियों के अनेक विभिन्न वंश होते हैं। स्थूल रूप से उनके दो विभाग किये जा सकते हैं। इन दोनों विभागों के पक्षियों में केवल दीर्घचरण रूप के अतिरिक्त स्वभाव तथा गुण में कोई भी समानता नहीं पाई जाती। उनके शरीर की रचना में भी अन्तर होता है।

सारस, बगुले (वक), सफेद बुज्जा, मुंडा (श्वेत आटी) कड़ाकुल (कृष्णआटी) तथा दाबिल या चमचबाज (दर्वी मुख) आदि पक्षियों को एक विभाग या वर्ग का मान सकते हैं जो अपने नवजात शिशुओं को जीवन यापन के लिए शिक्षण देने की आवश्यकता अनुभव करते हैं। उनकी सीख के बिना नया जन्म धारण किये, शिशु पक्षी संसार क्षेत्र में अपने बूते पर कूदने तथा स्वयं आहार प्राप्त करना प्रारम्भ करने का साहस नहीं कर सकते। जन्म के समय वे असहाय ही होते हैं। उनका पालन-पोषण घोंसलों में होता है जो वृक्षों के ऊपर बना होता है। उनको माता-पिता द्वारा बाहर से वहाँ ही आहार प्राप्त होता रहता है। इस विभाग के पक्षी मांसभक्षी ही होते हैं। किसी भी छोटे जीव को पकड़ सकने पर ये अपना आहार बना सकते हैं। ऐसे पक्षी रात को वृक्षों पर बसेरा लेते हैं अतएव वृक्षों की डालियों पर बैठ सकने योग्य ही इनके पैरों की उँगलियाँ बनी होती हैं। अतएव इनको वृक्षों पर बसेरा लेने तथा घोंसला बना कर रहने के कारण ही वृक्षशायी या वृक्षगृही पक्षी कह सकते हैं। डालों को पकड़ सकने में समर्थ बनाने के लिए इनके पैर की पिछली अँगुली यथेष्ट विकसित होती है। इस अङ्ग का आकार भी बड़ा होता है।

वृक्षशायी जलपङ्कचारी पक्षियों के अतिरिक्त अन्य सभी जल-पङ्कचारी पक्षी भूशायी या भूगृही होते हैं। उनके बच्चे अण्डे से निकलते ही चपल तथा सामर्थ्यवान होते हैं। वे अपने माता-पिता के पीछे स्वयं चल-फिरकर आहार ढूँढ़ना प्रारम्भ कर देते हैं। छोटे-मोटे कीड़े-मकोड़े तथा कुछ वानस्पतिक पदार्थ भी ये भोजन की सामग्री बनाते हैं। ये पक्षी भूमि पर ही अपने घोंसले बनाते हैं। वृक्षों पर इन्हें बैठने का अवसर नहीं आता। इस स्वभाव का यह परिणाम होता है कि पैर की पिछली उँगली छोटी ही रह जाती है तथा अनुपयोगी ही होती है। वह प्रायः लुप्त भी हो जाती है गाय, बैल आदि के पैर में पीछे के भाग में

भूमि से कुछ ऊपर निरर्थक उँगलियों के चिन्ह मात्र की भाँति होती है। ऐसे वर्ग के पक्षियों की संख्या तो अधिक नहीं होती, परन्तु जाति-प्रजाति या वंशों के भेद-प्रभेद अवश्य बहुत अधिक होते हैं। इन स्वावलम्बी शिशुओं की प्रथा का सञ्चालन करने वाले पक्षियों में निम्न पक्षियों की गिनती कर सकते हैं :—

टिटिहरी (टिट्टिभ), चहा (पंक कीर), कुक्कुटी, सारस, महा सारङ्ग, जलकपोत, तथा जालांगुलिक, हंसावर (वक हंस) आदि। इनमें हंसावर की गिनती शरीर-रचना की दृष्टि से वृत्तग्रही पक्षियों में ही करना अधिक उचित हो सकता है। किन्तु उधर जल-पक्षियों में बत्तख (हंसक) से भी उनका कुछ रूप मिलता है इसलिए वक हंस (हंसावर) को एक विचित्र प्रकार का पक्षी ही समझना चाहिए। स्वभाव तथा पैरों की पिछली उँगली की क्षीण रूपरेखा के कारण उसे भूशायी पक्षीवर्ग में ही रक्खा गया है। वृत्तग्रही जल पङ्कचारी में कठोर चंचुओं के पक्षी बारहों मास हमारे देश में ही रहने वाले होते हैं अतएव उनकी गिनती बारहमासी पक्षियों में करना चाहिए। वे कहीं से प्रवास कर शरद ऋतु की अल्प अवधि के लिए ही नहीं आते; किन्तु अपनी सुविधा के लिए वे ऋतु-परिवर्तन के कारण जल के निकट होने के लिए थोड़ा बहुत स्थान-परिवर्तन अवश्य कर लेते हैं।

अपने आकार तथा विचित्र रङ्गों के कारण भी अन्य पंकचारी पक्षियों से अधिक आकर्षक होते हैं। इनमें कुछ की तो स्पष्ट ही पहचान है।

दाबिल या चमचबाज (दर्वी मुख) को तो अपना चंचु चमच (दर्वी) की तरह रखने से ही यह नाम धारण करते देखा जाता है।

आटी पक्षी (सफेद बुज्जा, कड़ाकुल आदि) लम्बी तथा पतली चोंच वाले होते हैं जो धीरे-धीरे पूर्ण आकार में मुड़ी-सी होती है।

बक तथा महाबकों की चोंच लम्बी होती है किन्तु वह बहुत दृढ़ नहीं होती। चित्रित सारस में एक विशेषता होती है। उसकी चोंच सिरे की ओर मुड़ी होती है।

बकों की नासिका चोंच में लगभग सिरे तक जाने वाले गड्ढे के अन्त में स्थित होती है। उनके पैर में अगली उँगलियों की दो बाहरी उँगलियों में ही आधार स्थल में झिल्ली का पर्दा (जाल) लगा होता है।

महाबक की चोंच में कोई लम्बा गड्ढा नहीं होता।

आटी तथा दर्वीमुख

बुज्जा (आटी) पक्षी का वंश महाबकों की अपेक्षा कुछ भारी शरीर का होता है। वे बहुत लम्बोतरे पैरों के नहीं होते। उनका चंचु घुटने से नीचे के अधापाद की लम्बाई से अधिक बड़ा होता है। यह प्रारम्भ से छोर तक के भाग में हँसिया की तरह मुड़ा होता है। बुज्जा (आटी) पक्षियों के चंचु की यह विशेषता उन्हें अन्य सभी तटचारी पक्षियों से विभिन्न प्रकट कर देती है। केवल बड़ा गुलिंदा (नक्त कुररी) पक्षी ही अपवाद है। इस कारण इन दोनों की पहचान में कुछ धोखा होने की सम्भावना है, परन्तु बड़ा गुलिंदा (नक्त कुररी) के पैर में पिछली उँगली छोटी तथा निरर्थक होती है तथा पङ्ख पर रेखाएँ बनी होती हैं। इसके विपक्ष बुज्जा (आटी) पक्षियों के पैर की पिछली उँगली यथेष्ट विकसित होती है। भारतीय बुज्जा (आटी) पक्षियों के पंख का रङ्ग सदा शरीर के रङ्ग के अनुरूप ही साधारण होता है। सन्तानोत्पादन विधि में भी अन्तर होता है। बुज्जा (आटी) तो वृक्षग्रही हैं। जन्मधारण करने पर उसके बच्चे असहाय ही होते हैं। किन्तु बड़ा गुलिंदा (नक्त कुररी) पृथ्वी पर ही घोंसला बनाकर अण्डे देता है। उसके बच्चे उत्पन्न होते ही दौड़ लगाना प्रारम्भ कर देते हैं।

यथार्थ में नक्त कुररी को चुपका या चोबहा (जलरंक) पक्षी का ही परिवर्द्धित रूप कहा जा सकता है।

बुज्जा (आटी) को मुर्गी के आकार का पक्षी समझना चाहिए। वह बड़ा चपल होता है। इसका भोजन घोंघे, कीड़े-मकोड़े आदि हैं किन्तु यह बंधन में पड़ने पर कुछ वानस्पतिक पदार्थ भी ग्रहण करता है। दाने भी चुग लेता है। इसे पालना बड़ा ही सुगम होता है तथा पालतू पक्षी अण्डे भी दे सकता है। अपनी लम्बी चोंच का यह दुरुपयोग कर अन्य पक्षियों को भय न दिखाकर उनमें मिलकर ही रहता है। इनको शिकारी भोजन भी बनाते हैं। यह संसार भर के उष्ण भूखंडों में पाया जाता है। वृक्षों के घोंसलों में बुज्जा को झुण्ड में रहते पाया जाता है। बच्चा पैदा होने पर उसकी चोंच में अपनी चोंच डालकर नर और मादा उसे आहार चुगाते हैं।

जब बुज्जा (आटी) के बच्चे कुछ बड़े हो जाते हैं तो उनकी चोंच लम्बी हो जाती है। वे अपने माता-पिता के पीछे-पीछे पङ्ख फटफटा कर दौड़ते हैं तथा उनके गले में अपनी चोंच डालकर आहार निकाल लेते हैं। उनको अपने पैरों पर दृढ़तापूर्वक चल सकने का विश्वास नहीं होता। अल्पवय महाबकों की तरह आहार ढूँढ़ने में उन्हें शीघ्र ही संलग्न नहीं पाया जाता। उनके पङ्खों का रङ्ग वयस्क बुज्जा की तरह नहीं होता। किन्तु बच्चों में एक दूसरे का रङ्ग एक समान ही होता है। नर और मादा के भेद से शिशु आटी में आकार का तनिक भेद हो सकता है। अण्डे सादे या चित्तीदार होते हैं।

महाबक की तरह बुज्जा (आटी) भी गर्दन आगे की ओर सीधी कर उड़ते हैं, परन्तु पङ्खों के फटफटाने की गति तीव्र होती है। बीच में पङ्ख स्थिर रख कर भी चील की तरह उड़ान भर लेते हैं अतएव उड़ान में इनकी पहचान हो सकती है। ये वृक्षों पर अधिक बैठते हैं। इनमें स्वर यंत्र भी होता है। इस कारण कभी-कभी यथेष्ट शब्द भी उत्पन्न करते हैं।

बुज्जा (आटी) वंश बड़ा कहा जा सकता है। किन्तु भारत में केवल चार जातियाँ ही पाई जाती हैं। अतएव उनकी पहचान सुगम ही है। निम्न चार जातियाँ हैं :—

(१) श्वेत आटी (सफेद बुज्जा या मुंडा)

(२) कृष्ण आटी (काला बुज्जा या कडांकुल)

(३) ,, (ब्रह्म देशीय)

(४) पत्राटी (छोटा बुज्जा या कबरी)

श्वेत आटी को तो रङ्ग से ही तुरन्त पहचाना जा सकता है। कृष्ण आटी के दोनों भेदों में चोंच से भी अधिक लम्बी पूँछ होती है।

पत्राटी गहरे रङ्ग का पक्षी है। परन्तु उसकी पूँछ चोंच से कम लंबी होती है।

चमचबाज (दर्वी मुख) का वंश पृथक् है परन्तु उसे आटी वंश से मिलता-जुलता कह सकते हैं। बहुत बड़ा अन्तर नहीं होता। दर्वी मुख पक्षियों की चोंच सिरे पर चौड़ी तथा चपटी होती है। इस वंश के पक्षियों की थोड़ी ही जातियाँ हैं। उनमें एक जाति ही भारत में पाई जाती है। कोई महत्वपूर्ण भेद न होने से कितने लोग इसे भी आटी वंश का समझते हैं और दर्वीमुख आटी कहते हैं।

चमचबाज बुज्जा या दर्वीमुख आटी नाम सुनकर कुछ हैरानी हो सकती है। परन्तु चमचबाज (दर्वीमुख) और बुज्जा (आटी) पक्षियों को इतना निकट का देखा जाता है कि इनमें एक जाति के नर तथा दूसरी जाति की मादा का जोड़ा बनकर सन्तान उत्पन्न हो सकती है। जर्मनी के बर्लिन स्थित जन्तुशाला में एक ऐसी दोगली सन्तान विद्यमान थी जिसका धड़ तो दर्वीमुख पक्षी के समान था और चोंच आटी पक्षी सदृश थी, केवल सिरे पर तनिक-सी चपटी बन गई थी। यह किस प्रकार सम्भव हो सका, यह विस्मय की ही बात है।

महाबक

महाबक पक्षी बृहदाकार पक्षियों के एक छोटे परिवार हैं जो संसार भर के उष्ण भूखंडों में पाये जा सकते हैं। कुछ जातियाँ ग्रीष्म ऋतु में सन्तानोत्पादन के लिए शीतोष्ण कटिबन्ध के भूभागों में प्रवास कर जाती है। महाबकों को हम लम्बे आकार तथा प्रमुख रङ्गों का होने के कारण सहज पहचान सकते हैं। उनको मन्दगति किन्तु शक्तिशाली उड़ान में भली-भाँति देखा जा सकता है। अपने पङ्खों को अनवरत फटफटा कर वे उड़ते हैं, परन्तु पङ्खों को स्थिर रखकर चील की तरह मँडराने का कृत्य भी वे कर सकते हैं। सभी पंकचारी पक्षी उड़ान के समय अपने पैरों को पीछे मोड़कर आड़ा बना लिये होते हैं। कहा जाता है कि नाव के पतवार की भाँति महाबक भी अपने पैर पीछे फेंके होने के कारण अपनी उड़ान का दिशा नियंत्रित करने में उपयुक्त करते हैं। इसका कारण यह बताया जाता है कि इनकी दुम बहुत छोटी होती है, इसीलिए पैरों को पीछे फैलाकर पतवार का काम लेने की आवश्यकता होती है। परन्तु एक तो यह बात स्पष्ट देखी जा सकती है कि कबूतर, बाज आदि बहुत से बड़ी पूँछों वाले पक्षी भी उड़ान के समय अपने पैर पीछे फेंके दिखाई पड़ते हैं। दूसरी बात यह है कि इतने कृशकाय दो दंडों की तरह के इन पैरों से सारस अपनी उड़ान के गति-नियंत्रण में काम ही क्या ले सकता है!

महाबकों के पैर ही लम्बे नहीं होते बल्कि गर्दन और चोंच भी उसी प्रकार लम्बी होती है। उनके पङ्ख भी लम्बे चौड़े होते हैं। वृक्षगृह पंकचारी पक्षियों में पिछली उँगलियाँ लम्बी होती हैं जिससे डाली पकड़ सकने में सुविधा हो, परन्तु महाबक के पैरों की पिछली उँगलियाँ अन्य वृक्षगृही पंकचारी पक्षियों समान लम्बी नहीं होतीं। फिर भी भूमि पर उतरने के समय सिरों द्वारा भूमि स्पर्श करने योग्य बड़ी अवश्य होती हैं। सारस के चंचु बड़े पुष्ट और शक्तिशाली होते हैं। वे सभी प्रकार के छोटे

जन्तुओं को उदरस्थ कर सकते हैं। मेढ़क, मछलियाँ, साँप, टिड्डियाँ तथा चूहे उनके चंचुओं की पकड़ में आते ही आहार बन जाते हैं। कुछ महाबक शवभोजी भी होते हैं। महाबक पक्षियों को सीधा तथा उपयोगी पक्षी कहा जा सकता है। उनको लोग पसन्द कर पालते भी हैं। कुछ महाबकों को मांसाहारी खाते भी हैं।

नर और मादा महाबक का रङ्ग समान ही होता है परन्तु मादा आकार में कुछ छोटी होती है। बच्चे वृहद बक भी समान रङ्ग के ही होते हैं किन्तु उनके परों (पक्षपत्र या पतत्र) का रङ्ग विशेष रूप का हो सकता है। वयस्क सारसों का रङ्ग काला, श्वेत तथा धूसर (खाकी) होता है।

भारती महाबक वृक्षों पर छोटी-छोटी लकड़ियाँ द्वारा बड़ा घोंसला बनाते हैं। जो सारस ग्रीष्म काल में प्रवास कर जाते हैं वे शीतोष्ण कटिबन्धों में कहीं पुराने भवनों में ही स्थान पा जाने पर अपने घोंसले बनाते हैं। सभी सारसों के अण्डे बिल्कुल श्वेत रंग के होते हैं। उनकी संख्या न्यून ही होती है।

महाबकों को सङ्घचारी कहा जा सकता है। वे झुण्डों में ही रहने का स्वभाव रखते हैं। जिन पक्षियों को वे निगल सकने में अपना गला पतला पाते हैं उन सब पक्षियों के प्रति वे निरापद ही होते हैं तथा उनके साथ निवास कर सकते हैं। इनके गले में स्वर यंत्र का अभाव होता है, अतएव इनको मूक पक्षी ही कहेंगे, परन्तु किसी प्रकार अपने चंचुओं को टकराकर मूक और बधिरों की भाँति कोई ध्वन्यात्मक भाषा निकाल सकने में समर्थ पाया जाता है। वे उन ध्वनियों से ही कुछ संकेत अन्य सारसों के प्रति प्रकट कर सकते हैं। इतनी अर्द्धमूक ध्वनि से ही उनका काम निकल जाता है। किन्तु हरगिल्ल (वृहद बक) पक्षी एक भारी अपवाद माना जा सकता है। उसके शरीर की रचना इस वंश के पक्षियों के

अनुरूप होने पर भी उसे सन्तानोत्पादन ऋतु में रँभाने सा शब्द उत्पन्न करते देखा जाता है।

भारतीय महाबक की आठ जातियाँ पाई जाती हैं :—

(१) हरगिल्ल या गरुड़ (बृहद बक)
(२) छोटा गरुड़ (श्वेताक्ष बृहद बक)
(३) जंघील या राम झंकार (चित्रित महाबक)
(४) मानिकजार या लगलग (शितिकंठ महाबक)
(५) घोंघिल (शिथिल बक)
(६) लगलग (राजबक)
(७) सुरमई (कृष्ण महाबक)
(८) लोह सारंग (कृष्णग्रीव महाबक)

बृहद बक (हरगिल्ल) तथा श्वेताक्ष बृहद बकों (छोटे गरुड़) की स्पष्ट पहचान यह है कि उनका आकार बड़ा तो होता ही है, परन्तु उनकी गर्दन नंगी (परों से शून्य) होती है।

अन्य सभी महाबकों की गर्दन पर पतत्र निकले होते हैं। वह नग्न नहीं होती। उन सब में कृष्णग्रीव महाबक (लोह सारंग) सबसे बड़े आकार का होता है। उसकी लम्बाई चंचु के सिरे से पूँछ के छोर तक चार फीट होती है। अन्य सभी महाबक, केवल नग्न कण्ठ के उपर्युक्त महाबकों को छोड़कर कृष्णग्रीव महाबक की अपेक्षा छोटे होते हैं।

चित्रित महाबक (राम झंकार) की चोंच सिरे की ओर थोड़ी-सी मुड़ी होती है किन्तु अन्य सभी के चंचु सीधे ही होते हैं।

शितिकण्ठ महाबक (मानिकजार) की पूँछ गहरे रङ्ग की तथा विचित्र रूप के दो फाँकोंयुक्त होती है। परन्तु अन्य सभी महाबकों की पूँछ एक फाँक की साधारण रूप की होती है।

शिथिल बक (घोंघिल) की क्षुद्राकार चंचु तथा धूसर (खाकी) या धूसर श्वेत मिश्रित रङ्ग से पहचाना जा सकता है। चंचु की लम्बाई केवल

छः इञ्च ही होती है किन्तु अन्य महाबकों के चंचु आठ इञ्च या इससे भी अधिक लम्बे होते हैं। केवल शितिकंठ (मानिकजार) ही अपवाद है जिसका रङ्ग गहरा होता है।

राजबक (लगलग) तथा कृष्ण महाबक (सुरमई) की गर्दन, पूँछ या चोंचों में कोई विशेषता नहीं होती। उनको मध्य आकार के महाबक समझना चाहिये। उनकी लम्बाई चोंच से सिरे के पूँछ के छोर तक डेढ़ गज होती है तथा चोंच की लम्बाई आठ इञ्च होती है। इस तरह उनकी पहचान के लिए कोई विशेष रङ्ग-रूप न होने पर भी हम उनकी पहचान कर सकते हैं। ये मध्यवर्गीय महाबक ही योरोपीय देशों में पाये जाते हैं।

वक (बगुले)

बगुलों का वंश वृक्षगृही पंकचारी पक्षियों में सबसे बड़ा है। इनको छोटे या बड़े आकार का पाया जाता है। छोटी जाति का बगुला मैना के बराबर होगा। बड़ी से बड़ी जाति का बक महाबक के बराबर हो सकता है। किन्तु वंश के बड़े होने तथा आकार में छोटे बड़े अनेक भेद होने पर भी बगुलों का पहचानना सरल है। जब ये उड़ते हैं तो इनकी गर्दन दुबककर धड़ से सट गई होती है। लम्बी गर्दन के सभी पक्षियों की अपेक्षा यह उनकी विशेषता होती है। लम्बग्रीव पक्षियों में केवल वृहद बक तथा श्वेताक्ष वृहद बक ही अपवाद है। उड़ान के समय उनकी गर्दन और चोंच भी आगे की ओर सीधी तनी नहीं रहती है। किन्तु वृहद बक (हरगिल्ल या गरुड़) तथा श्वेताक्ष वृहद बक (छोटा गरुड़) को अन्य लक्षणों से स्पष्ट पहचान लिया जा सकता है। उनके सिर बिल्कुल नग्न होते हैं तथा चोंच इतनी स्थूल होती है कि बगुले का भ्रम हो ही नहीं सकता। एक बात और भी होती है। ये महाबक उड़ान के समय अपनी चोंच नीचे की ओर लटकाये रहते हैं, परन्तु बगुलों की चोंच

सीधी ही रहती है। बड़े बगुले उड़ान के समय अनवरत रूप से पङ्ख फटफटाते ही रहते हैं। चील या गिद्ध की तरह पङ्खों को गतिहीन कर हवा में तैरते-से रहने का गुण उनमें नहीं होता। केवल नीचे उतरने के समय वे पङ्खों का फटफटाना बन्द कर उन्हें फैलाये रख छतरी की भाँति उतरते हैं। उनके पङ्खों के छोर नीचे की ओर झुके ही रहते हैं, परन्तु महाबकों के पङ्ख या तो चपटे फैले होते हैं या ऊपर की ओर सिरे मोड़े होते हैं।

बगुलों को उड़ान के समय पहचान सकने के लिए तो ये लक्षण हैं, परन्तु हाथ में लेने पर कुछ अन्य उल्लेखनीय बातें ज्ञात हो सकती हैं। उनकी चोंच महाबकों की तरह ही लम्बी तो होती है परन्तु उतनी स्थूल नहीं होती। वह सदा कुछ चपटी या कटारनुमा होती है। नाक के नीचे चोंच के छोर तक एक नाली-सी भी बनी होती है। बगुलों के पैरों में भी विशेषता होती है। अनेक पक्षियों में जहाँ उँगलियों के आधार स्थल पर झिल्ली का छोटा बन्धन (अंगुलिजाल) होता है वहाँ बगुलों में यह केवल बाहरी उँगलियों में ही सीमित होता है, किन्तु महाबक तथा आटी पक्षियों में दो भीतरी उँगलियाँ भी झिल्ली से आबद्ध होती हैं।

पंकचारी पक्षियों में बगुलों में ही पैर की पिछली अँगुली यथेष्ट विकसित होती है। वह अगली अँगुलियों के समान ही नीचे भूमि पर स्थित हो सकती है। इस कारण वे डालों पर भली भाँति बैठ सकते हैं तथा डाल को उँगलियों से दोनों ओर से पकड़ कर अच्छी तरह सँभले बैठे रह सकते हैं। मध्य चङ्गुल के निचले तल पर एक दाँतेदार कंघी-सी मढ़ी होती है। बुज्जा (आटी) और महाबक पक्षियों को इस अस्त्र से रहित ही पाया जाता है। महाबकों में इसके होने का कुछ आभास मिलता है, मानो वह खरोचकर कुछ पाने का उद्योग करने की अभिलाषा रखता हो। बगुले के मुँह का चीरा बिल्कुल आँखों तक पहुँचता है। मुँह फैलाने पर वहाँ तक का भाग ऊपर और नीचे के दो जबड़ों रूप में पृथक्

हो जाता है। इसका पीला रङ्ग उसे भयावह रूप प्रदान करता है। बगुलों के कलहप्रिय स्वभाव के लिए ऐसा रूप उचित भी है। एक परिवार रूप में उन्हें झगड़ालू पाकर भी सन्तानोत्पादन ऋतु में समाज-प्रिय पाया जा सकता है। वे इस ऋतु में वृक्षों पर समीप-समीप ही घोंसले बनाये पड़े रहते हैं मानों झगड़ने में सुभीता होने के लिए उन्होंने अपने घोंसले अन्य पड़ोसियों के इतने निकट बनाया हो।

बड़े बगुले वीर पक्षी कहे जा सकते हैं। आहत होने पर वे प्राण रहने तक सङ्घर्ष करते हैं अतएव शिकारी को उनकी दयनीय दशा समझ कर निकट जाने से धोखा हो सकता है। घायल होने पर निहत्थे शिकारी पर बड़ा बगला चोट कर देता है और अपने प्रहार का लक्ष्य शिकारी की आँख ही बनाता है। इसलिए हाथ में डण्डा या छड़ी लिये बिना घायल बगुले के निकट पहुँचना भयानक हो सकता है।

बगुलों का आहार मछली के अतिरिक्त केकड़े, मेढक, कीट, अन्य छोटे जन्तु तथा छोटे पक्षी तक हैं। बकोध्यान प्रसिद्ध बात ही है। अपने शिकार के पीछे भागे-भागे फिरने, या शिकार की खोज में भटकने की अपेक्षा वे एक स्थान पर योगी सदृश ध्यानावस्थित-सा होकर शिकार के अपने पास ही आने की प्रतीक्षा करते रहते हैं। जहाँ कहीं निकट शिकार दिखाई पड़ा कि ध्यानावस्थित रूप में दिखाई पड़ने वाले नेत्र भी चैतन्य रहकर उसे लक्ष्य भेद करने के लिए सन्नद्ध करते हैं। शिकार तुरन्त उनके मुँह में पहुँच जाता है। पुनः दूसरे शिकार की खोज में ध्यान रमा देते हैं।

सुश्रुत ने जलपक्षियों को प्लव नाम देकर निम्न नामों से व्यक्त किया है :—हंस, सारस, कारण्ड, बक (बगुला), क्रौंच, शरारिका, नन्दीमुखी, कादम्ब और बलाका (बगुली)।

मदनपाल निघंटु में बक के नाम निम्न रूप में गिनाये हैं जो पर्यायवाची शब्द प्रतीत होते हैं :—

बको बकोटो धवलो बलाका बिसकंठिका ॥७५॥

इन पत्तियों का रूप निर्धारण अथवा वर्तमान भेदों से समन्वय करना कठिन कार्य ही है। किन्तु वर्तमान भेद-प्रभेदों का कोई भी नामकरण रखकर विद्वान् प्राचीन साहित्य के नामों से उनका मेल कर हम भविष्य में बता सकेंगे कि उन प्राचीन नामों से वर्तमान जातियों में से किनका बोध किया जाय। अतएव उपयुक्त नामों की केवल चर्चा कर हम बगुलों की वर्तमान जातियों का उल्लेख कर रहे हैं।

संसार में बकों की बहुसंख्यक जातियाँ हैं। भारत में जितने भी बगुले पाये जाते हैं उनमें एक जाति ही यहाँ का बारहमासी पत्ती नहीं है जिसे ज्योत्सना बक (Bittern) कह सकते हैं। किन्तु सभी बकों का शरीर हल्का होने तथा पङ्ख गोला विशालरूप का होने से लम्बी उड़ान की सामर्थ्य उनमें होती है। उनकी पूँछ सदा ही छोटी और गौण होती है। कुछ महाबकों तथा आटी पत्तियों की भाँति उनका सिर गञ्जा नहीं होता। चोंच से नेत्रों तक एक रङ्गीन पट्टी निश्चित रूप से होती है। उनके पङ्ख भी भव्य रूप से रञ्जित होते हैं। उनके कटिप्रदेश तथा वत्त-स्थल में दोनों ओर धब्बे रूप में एक श्वेत चूर्ण पोटली होती है। उनसे चूर्ण निकाल कर अपनी चोंचों से पङ्खों पर मर्दित करने की क्रिया पाई जाती है जिससे बगुलों के पङ्ख पालिश करने के समान चमकीले हो जाते हैं। इसी कारण तो अत्यन्त श्वेत चमकीली वस्तु के रङ्ग की प्रशंसा कर लोग कह उठते हैं कि 'वह इतनी श्वेत है मानों बगले के पङ्ख।'

बगुलों के नर-मादा समान रूप के ही होते हैं किन्तु शिशु बकों का रङ्ग कुछ भिन्न होता है। वयस्क बकों में रञ्जित पङ्ख कदाचित् दाम्पत्य आकर्षण के लिए पाये जाते हैं। बगुलों के शिशु के शरीर पर जो आवरण होता है वह रोएँ सदृश जान पड़ता है। उसे सिर पर कुछ लम्बा पाया जाता है। यह रूप अन्य सभी पंकचारी पत्तियों के शिशुओं से भिन्न-सा होता है। बच्चे गट-गट सी ध्वनि करते रहते हैं। बगुलों

का स्वर यन्त्र युक्त होना तटचारी पक्षियों से भिन्नता ही है। इसके अण्डे चित्तियों से शून्य तथा मटमैले नीले, या श्वेत होते हैं। घोंसले लकड़ी, नरकुल आदि के बने होते हैं।

वक पक्षी अधिकांशतः उष्ण भूभाग के ही पक्षी हैं। इनकी लगभग इक्कीस जातियाँ हमारे देश में पाई जाती हैं। इस कारण इनकी या सभी जातियों का पहचानना कुछ कठिन प्रतीत हो सकता है, परन्तु रङ्ग-रूप, आकार आदि के विचार से इनको तीन वर्गों में विभाजित माना जा सकता है।

पहला विभाग शुद्ध वकों का मान सकते हैं जो बड़े आकार के पक्षी होते हैं। उनके शरीर की लम्बाई एक गज से भी अधिक होती है। उनका रङ्ग कभी भी पूर्णतः श्वेत, धूसर (खाकी) नहीं होता और न पूर्णतः चितकबरा ही होता है।

बलाका या बगुली नाम से हम दूसरा विभाग व्यक्त कर सकते हैं। उनका रङ्ग पूर्णतः श्वेत या धूसर अथवा चितकबरा होता है। श्वेत बड़ा बलाका एक गज लम्बा हो सकता है, परन्तु अन्य सभी बलाका इससे बहुत कम ही लम्बे होते हैं।

तीसरा विभाग ज्योत्सना बकों का है जो रात्रिचारी पक्षी होते हैं। इन सब की लम्बाई एक गज तक होती है। ज्योत्स्ना बकों को कभी भी पूर्णतः श्वेत या धूसर रङ्गों का या चितकबरा नहीं पाया जा सकता। वे अनेक रङ्गों के ही होते हैं। उनकी गर्दन पर परों की पूर्ण बाढ़ होती है। उनके पैर उतने लम्बोतरे नहीं होते। किन्तु कुछ बलाका इनके आकार की समता कर सकते हैं, इस कारण इनको रङ्गों की विशेषता से ही पहचाना जा सकता है। इस वर्ग के साथ नक्त बक (तार बगला) की भी गिनती की जा सकती है।

साधारण बक लम्बोतरे पगों के पक्षी हैं। उनकी गर्दन घने परों से आच्छादित होती है किन्तु सिर पर पतली शिखा तथा वक्षस्थल पर

लटकते परों को पाया जाता है। नर और मादा समान रङ्ग-रूप के होते हैं। शिशुओं का रूप कुछ भिन्न होता है। उनमें लम्बे पर नहीं उगे होते। ये छोटी जाति के बगुलों की तरह बहुसंख्यक नहीं होते। सबसे बड़े आकार की जाति तो अत्यल्प होती है। उन्हें अलभ्य पक्षी समझना चाहिए। बकों की बड़ी जातियों को चोंच से पूँछ तक साढ़े चार फुट लम्बा पाया जाता है। बकों के भेद निम्न आकार के होते हैं :—भीमकाय बक के सिर और गर्दन का रङ्ग बादामी होता है। लम्बाई साढ़े चार फुट होती है।

धूमिल धूसर बक चार फीट तक लम्बा होता है। रङ्ग धूसर होता है तथा कुछ श्वेत रङ्ग के धब्बे भी पाये जाते हैं।

सितोदर दीर्घ बक उपर्युक्त दोनों के मध्य आकार का पक्षी है। उदर का रंग श्वेत देखकर इसे पहचानना सुगम है।

अन्य प्रचलित बकों में अनेक को साढ़े तीन फुट तक लम्बा पाया जाता है।

साधारण बक का रङ्ग स्पष्टतः धूसर (खाकी) होता है तथा आरक्त बक के रङ्ग में बादामी का मिश्रण होता है।

बलाका

बलाका पक्षी की आठ जातियाँ मानी जा सकती है। इनका विभेद कर सकना कठिन अवश्य है, परन्तु इनको चार उपवर्गों में बाँट सकते हैं।

शुद्ध या श्वेत बलाका इसमें तीन जातियाँ होती हैं। इनका रङ्ग सदा ही श्वेत होता है। उनकी विशेषता शरीर का हलका आकार तथा लम्बोतरे पैर तथा अँगुलियाँ हैं। चोंच, घुटने से लेकर अँगुलियों तक के पैर (गुल्फ) की लम्बाई से अधिक लम्बी नहीं हो सकती। घुटने

से ऊपर से पैर (उर्ध्वपाद) की लम्बाई भीतरी अँगुली (चंगुल रहित) की लम्बाई से अधिक होती है ।

गो बलाका की पहचान उसकी चोंच है जिसकी लम्बाई उसकी मध्य अँगुली के (चंगुलयुक्त) की लम्बाई के बराबर होती है । अन्य सभी बलाका पक्षियों में चोंच की लम्बाई मध्य अँगुली की लम्बाई से अधिक होती है ।

अन्ध बक या अन्ध बलाका की दो जातियाँ होती हैं । वे चित्रित (चितकबरे) रंग की होती हैं, उनका शरीर अन्यों से पुष्ट होता है । उनकी चोंच चंगुयुक्त मध्य अँगुली से अधिक लम्बी होती है ।

ज्योत्स्ना बक तथा नक्तबक

ज्योत्स्ना बकों में ही नक्तबक की गिनती की जा सकती है । इनको बक वंश में एक पृथक् स्थान ही देना चाहिये ।

बकों की अपेक्षा इनका आकार छोटा किन्तु शरीर पुष्ट होता है । अधोपाद की लम्बाई से चोंच की लम्बाई विशेष अधिक होती है । ऊर्ध्वपाद छोटा तथा नग्न होता है । गर्दन बड़े लम्बे परों से ढकी होती है किन्तु गर्दन का पिछला भाग नग्न होता है किन्तु अपने परों को उस पर फैला कर उस का गंजापन वे ढक लेते हैं ।

ज्योत्स्ना बकों का रंग बकों से सर्वथा भिन्न होता है । उनको कभी भी पूर्णतः धूसर श्वेत या चितकबरा नहीं पाया जा सकता । नर और मादा का रूप भी सदा एक समान नहीं होता । शिशुओं का रूप तो निश्चय रूप से विभिन्न होता है । इस परिवार के पक्षियों को कभी भी बहुत बड़े आकार का नहीं देखा जा सकता । बड़े से बड़े ज्योत्स्ना बक की लम्बाई एक गज तक हो सकती है । एक भारी विशेषता यह भी है कि ज्योत्स्ना बक झुण्डों या समाज में नहीं रहते । वे रात्रिचारी तथा प्रायः एकाकी रहने वाले पक्षी ही हैं । यों तो बक भी साथ रहने में एक दूसरे से कलह

ही करते रहते हैं। बलाका भी अधिक समाजप्रिय नहीं होते। परन्तु ज्योत्स्ना बक तो समाजप्रिय वृत्ति से सर्वथा शून्य होते हैं। यदि ज्योत्स्ना बकों को बरबस साथ कर दिया जाय तो वे परस्पर लड़-कट कर मर जायँगे।

इन पत्तियों के आठ भेद भारत में पाये जाते हैं। उनको निम्न विभागों में कर सकते हैं :—

साधारण ज्योत्स्ना बक बड़े आकार के होते हैं। उनकी लम्बाई दो फुट तक होती है। अन्य कोई भी ज्योत्स्ना बक दो फुट तक लम्बा नहीं होता।

लघु ज्योत्स्ना बक की तीन जातियाँ होती हैं। वे बहुत छोटे पत्ती हैं। पन्द्रह इञ्च से भी कम लम्बे होते हैं।

लघु चंचु नक्त बक की चोंच अधोपाद (गुल्फ) से बहुत कम लम्बी होती है। अन्य सब की चोंच उस से लम्बी होती है। साधारण नक्त बक की चोंच मोटी तथा आँख लाल होती है।

काले तथा हरे ज्योत्स्ना बकों में काला ज्योत्स्ना बक लगभग दो फीट तथा हरा अठारह इञ्च लम्बा होता है। काले की दुम में दस पर होते हैं, हरे में उससे भी दो अधिक परों की दुम होती है।

—:०:—

भूगृही जलपंकचारी

उथले जल और पङ्क में चल फिरकर अपना आहार ढूँढ़ने वाले पक्षियों को जलपङ्कचारी (Waders) नाम दिया गया है परन्तु उनमें कुछ को पैर की पिछली उँगली विकसित या अर्द्ध विकसित रखे पाया जाता है अतएव उनका जीवन आहार के लिए भूमि पर भले ही व्यतीत हो, किन्तु बसेरा लेने तथा सन्तानोत्पादन धर्म, अंडे-बच्चे का पोषण की पूर्ति के लिए वृक्षों पर आश्रय लेना पड़ता है। अतएव वृक्षगृही नाम दिया जाता है किन्तु भूमि पर ही अंडा देकर ही सन्तान उत्पन्न करने वाले भूगृही जलपङ्कचारी ही कहलाते हैं। वृक्षों पर घोंसले बनाने या बसेरा लेने की प्रवृत्ति उनमें नहीं होती। फलतः डालों पर बैठ सकने के लिए उनके पैर की पिछली उँगली निकम्मी ही हो सकती है। इन पक्षियों के बच्चे अण्डे से बाहर होते ही चलने-फिरने लगने की सामर्थ्य रखते हैं। इन भूगृही जलपङ्कचारी पक्षियों के यों तो अनेक वंश हैं जो एक दूसरे से बिल्कुल ही विभिन्न होते हैं, परन्तु कुछ वंशों के पहचानने के लिए निम्न लक्षणों को ध्यान में रखा जा सकता है :—

बलाक पक्षी बड़े आकार के होते हैं जिनकी गर्दन बड़ी लम्बोतरी होती है। उनकी चोंच स्थूल, छोटी तथा नीचे की ओर झुकी होती है, पैरों में झिल्ली का बंधन (अङ्गुलिजाल) होता है।

सारस पक्षी का आकार लम्बा और कृशकाय होता है। उनकी चोंच सीधी किन्तु छोटी ही होती है। पैर की उँगलियों में झिल्लीबद्ध (अङ्गुलि-जाल) नहीं होता, केवल बाहरी उँगलियों में छोटा अङ्गुलिजाल होता है।

जलकुक्कुट का आकार मझोला या छोटा ही कहा जा सकता है। पङ्ख और पूँछ छोटी होती हैं। अङ्गुलिजाल का सर्वथा अभाव होता है।

जालांगुलिक पक्षी के पैर बहुत छोटे होते हैं। उँगलियाँ फंकनुमा अङ्गुलिजालयुक्त होती हैं। पूँछ यथेष्ट विकसित होती है।

महा सारङ्ग का सिर और चंचु छोटे आकार का होता है। उनकी उँगलियाँ भी बहुत छोटी और केवल तीन होती हैं। इन पक्षियों को बड़े या मझोले आकार का समझना चाहिए।

किनारों पर के जलपङ्कचारी भूगृही पक्षी मझोले या छोटे आकार के पक्षी होते हैं। उनमें टिट्टिभ तथा पङ्ककीट आदि की गिनती होती है। इनमें कोई समान लक्षण नहीं पाया जाता। टिट्टिभ को कबूतर सदृश चंचु, बड़े सिर और आँखयुक्त पाया जाता है। पङ्ककीर पक्षियों का सिर कबूतर की अपेक्षा छोटा होता है तथा आँखें और चोंच कबूतर से ही बड़ी नहीं, बल्कि प्रायः अत्यधिक लम्बी होती हैं।

पाणविक पक्षी का सिर बड़ा और आँख पीली होती है। चोंच स्थूल होती है। पैर में तीन छोटी उँगलियाँ ही होती हैं।

क्षिप्रचला तथा हापुत्री पक्षी टिट्टिभ की भाँति ही होते हैं। किन्तु उनका मुख कपाल से अधिक पीछे पहुँचा होता है।

जल कपोतों को भी एक पृथक वंश में रखा जाता है। उनकी उँगलियाँ पतली और लम्बी होती है, उनमें बड़े लम्बे लगभग सीधे चंगुल होते हैं।

इन पक्षियों में एक दूसरे वंशों से क्या सम्बन्ध है या अन्य जल-पङ्कचारी पक्षियों के भी वंशों का परस्पर क्या सम्बन्ध है तथा उनके विभाग किन आधारों पर किस-किस रूपों में किये गये हैं, यह जटिल विषय है। किन्तु इनकी जानकारी इनकी साधारण पहचान के लिए अत्यावश्यक नहीं कही जा सकती।

———

जलकुक्कुट वंश

जल कुक्कुट वंश के पत्ती बड़ी चिल्लाहट मचाने वाले होते हैं। इनको अपना जीवन शोर मचाते व्यतीत करने में आनन्द मिलता है। इनको बुद्धिमान पत्ती कहा जा सकता है। उनमें साहस भी अधिक होता है, अपने से बड़े पत्ती का भी सामना कर सकते हैं। इनकी अनेक जातियाँ भारत में पाई जाती हैं। उनमें कई बड़ी रोचक हैं।

जलकुक्कुट वंशीय पत्ती दुबले तथा पार्श्व भागों में चपटे होते हैं। वे पैरों पर ऊँचे खड़े रहते हैं तथा अपनी छोटी दुम को अधिकांश पत्ती नीचे-ऊपर गिराते और उठाते ही रहते हैं। उनके पङ्ख छोटे ही होते है। किन्तु उन सब के पैर की उँगलियाँ निश्चित रूप से बड़ी लम्बी होती हैं। तीन अग्रिम अङ्गुलियाँ आधार तल में अङ्गुलिजालयुक्त नहीं होतीं किन्तु सभी जातियाँ पानी में तैर सकती हैं। पिछली उँगली इतनी ही लम्बी होती है कि उसका उपयोग किया जा सके। चोंच को विभिन्न लम्बाई का देखा जाता है किन्तु नासारंध्र सदा एक छिद्र रूप में होता है जो एक नाली में स्थित होता है तथा चोंच के आधार स्थल से यथेष्ट दूर होता है। चोंच को मझोले रूप का मोटा कहा जा सकता है। वह लम्बा होने पर भी पतला नहीं होता। कुछ-कुछ मुर्गी समान चोंच का रूप होता है।

राजीव अँबुकुक्कुट जलकुक्कुट वंश का ही होता है। परन्तु उसकी चोंच स्थूल होती है। उसे जलकुक्कुटों में विशेष रूप प्राप्त होता है। सभी जलकुक्कुटों की आँखें लाल रङ्ग की होती हैं।

जलकुक्कुट किसी वस्तु की आड़ में रहते हैं। पङ्क, या उथले जल के पौधों या पानी पर तैरते वनस्पतियों पर जहाँ कहीं उन्हें आश्रय प्राप्त होता है, वहीं डेरा जमा देते हैं। उनको दौड़ लगाते, तैरते या डुबकी लगाते,

या वनस्पतियों पर जाकर बैठते या चढ़ जाते देखा जाता है। उनकी उड़ान विचित्र होती है। उड़ना प्रारम्भ करने पर उनके पैर ऐसे लटके दिखाई पड़ते हैं मानो टूट कर लटक रहे हैं। किन्तु थोड़ी दूर उड़ने के बाद ही वे उन्हें पीछे फेंककर आड़े रूप में कर लेते हैं। पङ्ख की शिथिल फटफटाहट से ही उनकी उड़ान होती है परन्तु ये पक्षी बड़ी लम्बी आकाशीय यात्रा पार करने में समर्थ होते हैं। बहुत से जलकुक्कुटीय पक्षी प्रवासी होते हैं। वे दूर के निर्जन स्थलों में जा पहुँचते हैं। समुद्र में जहाजों पर भी उतरकर उन्हें विश्राम करते पाया जाता है। यह भी सम्भव है कि वायु वेग द्वारा ही वे दूर के स्थलों तक प्रवाहित हो जाते हों। ऐसा देखने में ज्ञात होता है कि उनका कृशकाय शरीर वायु के प्रबल वेग में टिक नहीं सकता।

साँप की केचुल उतारने की भाँति पक्षी भी अपने पर झाड़ते हैं। जलकुक्कुट वंशी पक्षियों को पर गिराने की ऋतु में पर से शून्य इस रूप का पाया जा सकता है कि बत्तख की भाँति वे उड़ न सकते हों। बत्तखों (हंसक) की भाँति उन्हें माँसाहारी और शाकाहारी दोनों की संयुक्त वृत्ति रखते पाया जाता है। कीट, अनाज के दाने तथा वानस्पतिक तथा जान्तव आहार, उन्हें ग्रहण करते देखा जाता है। कहीं धरती पर ही भद्दा सा घोंसला वे बना लेते हैं तथा कई चितकबरे अंडे देते हैं। अण्डे से निकलते ही बच्चे फुर्ती से दौड़ना और भागना प्रारम्भ करते हैं। किन्तु कुछ समय तक उनके माता पिता उनको आहार देने में सहायता करते रहते हैं या कहीं एकत्र कर उनके चुगने के लिए रख देते हैं। नर और मादा के रूपों में जलकुक्कुट वंश अन्तर नहीं रखता।

जलकुक्कुटों की पहचान सहज हो सकती है। उनका रङ्ग प्रायः भव्य होता है, परन्तु चमकीला नहीं होता। जलकुक्कुटों के तीन विभाग किये जा सकते हैं :—

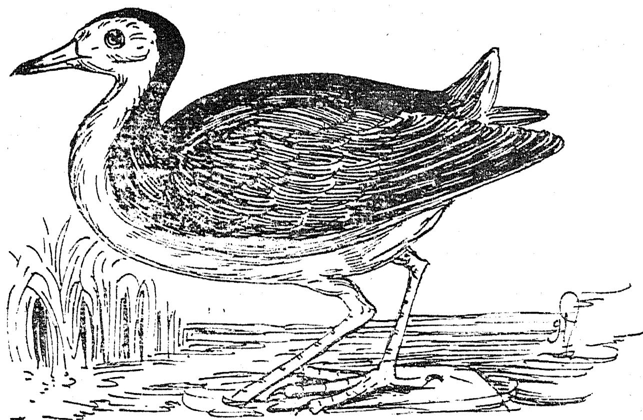
शुद्ध या साधारण जलकुक्कुटों की चार जातियाँ होती हैं। उनकी चोंच

लम्बोतरी होती है। उसे अधोपाद (गुल्फ) की लम्बाई के बराबर समझना चाहिए। कुक्कुटिका की दस जातियाँ होती हैं। उनकी चोंच छोटी होती है जो उनके (गुल्फ) से कम लम्बी होती है। जलकुक्कुटी तथा कारण्ड कुक्कुट की चोंच बहुत छोटी होती है। इस तीसरे विभाग में पाँच जातियाँ समझना चाहिए। इनके कपाल पर एक ढाल या पट्टिका होती है जो उल्लेखनीय है।

सितकंठ जलकुक्कुटिका (सितकंठ मलिनी)

स्था० नाम—दावक, दाहक, डौक (हि०) किनाती (अवध)
कुरही (सिंध), कालूग्वेत (वर्मा)

सितकंठ जलकुक्कुटिका बहुत प्रचलित जलकुक्कुट वंशीय पक्षी है। इसके विचित्र रङ्ग से इसकी ठीक पहचान हो सकती है। शरीर के ऊपरी



सितकंठ जलकुक्कुटिका

तल का रङ्ग स्लेटी काला, तथा अधोतल का शुद्ध श्वेत होता है। माथा भी श्वेत रङ्ग का होता है। पिछला भाग बादामी होता है। चोंच का रंग पीला-

पन मिश्रित हरा होता है। उसके आधार स्थल तथा कपालीय क्षुद्र कवच का रङ्ग लाल होता है। पैरों का रङ्ग पीला होता है। नर और मादा का रंग-रूप समान होता है। किन्तु शिशुओं में ऊपरी तल भूरा तथा श्वेत भागों में छोरों पर परों का धूमिल रंग होता है।

सितकंठ जलकुक्कुटिका की लंबाई एक फुट तथा पंखों की लम्बाई आधी फुट होती है। अधोपाद (गुल्फ) ढाई इञ्च लम्बा होता है।

यह पक्षी भारत भर में पाया जाता है। यह परिचित पक्षी है। यह घरों के पास भी रहता है। दाना फेंकने पर चुगने उतर आ सकता है। यह कुक्कुट की भाँति विशेष तैराक नहीं होता।

मई से सितम्बर तक यह पक्षी अंडे देता है। इसके घोंसले कुछ ऊँचाई पर बने होते हैं। नरकुलों या जलीय वनस्पतियों पर ही घोंसले बनते हैं। एक उदाहरण ऐसा देखा गया है जिसमें इस पक्षी ने चढ़कर ताड़ के वृक्ष पर अपना घोंसला बनाया। इसकी शक्ल तो छोटी होती है। पर उसके मुकाबले में आवाज भारी होती है। उसे चिंघाड़ना-सा कह सकते हैं। एक विद्वान का कथन है कि इस पक्षी का चिंघाड़ तो उस भालू के समान उच्च नाद का होता है जो अति वेदना सहन कर जीवित ही भस्म किये जाने पर घोर शब्द कर सकता हो किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि यह उपेक्षा योग्य पक्षी है। पालतू होने पर यह चिड़ियाघर की शोभा-वृद्धि ही कर सकता है। मई से सितम्बर तक में इसके अंडे उत्पन्न होते हैं। चार से आठ तक अंडे होते हैं। अंडे की लम्बाई डेढ़ इंच होती है।

अम्बु कुकुट

स्था० नाम—जलमुर्गी, पानी मुर्गी (हिन्दी) डकार पैरा (बग०)

अम्बु कुक्कुट या जलमुर्गी सब से अधिक परिचित जल कुक्कुट है। इसका रंग गहरा स्लेटी होता है। पंख तथा पीठ का रंग हल्के हरे रंग

(जैतूनी) युक्त भूरा होता है। बगल में श्वेत रेखाएँ होती है तथा दुम के अधोतल में एक अविच्छिन्न श्वेत पट्टी होती है। चोंच छोर पर पीली किन्तु आधार स्थल पर लाल होती है। वह रङ्गीन कपाल स्थित कवच पर भी चटकीले रूप में फैला रहता है। तथा उस कवच के पिछले भाग तक भी घेरे रहता है। पैरों का रङ्ग हलका हरा (जैतूनी) होता है। घुटनों के ऊपर उसमें लाल रङ्ग की अँगूठी बनी होती है। उँगलियाँ नीचे की ओर चपटी तथा किनारों पर एक चमड़े की पतली झालरयुक्त होती हैं।

अम्बुकुक्कुट (जलमुर्गी) के नर मादा का रङ्ग-रूप समान होता है। किन्तु नवजात अम्बुकुक्कुट का रङ्ग बहुत अधिक हल्का तथा उपर्युक्त वर्णन से अधिक भूरा होता है। अधोतल अधिक श्वेत होता है और चोंच तथा कपालीय कवच का रङ्ग लाल नहीं होता, बल्कि धूमिल हरा होता है। पहले पहल देखने पर तो वे किसी अन्य जाति के ही पक्षी जान पड़ते हैं।

जलमुर्गी की लम्बाई एक फुट होती है। पङ्ख का फैलाव साढ़े छः इञ्च होता है। अधोतल की लम्बाई दो इञ्च होती है। किन्तु आकार में विभिन्नता भी पाई जाती है। भारतीय अम्बुकुक्कुट छोटे होते हैं।

अम्बुकुक्कुट का व्यापक प्रसार पाया जाता है। यह एशिया, यूरोप, तथा अफ्रीका के सभी भागों में पाया जाता है। अमेरिका में भी इसकी एक जाति है जो इसकी ही उपजाति कही जा सकती है। उसका कुछ बड़ा आकार होता है। उसका कपालीय कवच गोल न होकर चौकोर होता है।

अम्बुकुक्कुट हमारे देश में बारहमासी ही है। जलाशय के अभाव में यह स्थानीय प्रवास कर सकता है। उपयुक्त जलप्रचुर स्थानों में जाकर प्रश्रय लेता है। यह तैराक उतना ही है जितना भूमि पर दौड़ने वाला है। वृक्ष पर भी बैठ सकता है। शाकाहार तथा मांसाहार दोनों ही करता है. इसे जो भी दे दिया जाय, ग्रहण कर लेता है। इसका घोंसला जलीय

वनस्पतियों पर बना होता है। पाँच से लेकर नौ अंडे तक देता है। अंडे की लम्बाई डेढ़ इञ्च तक होती है। यह धूमिल चट्टानी रङ्ग का होता है जिसमें लाल रङ्ग के धब्बे होते हैं। भारत में यह पक्षी उतना अधिक नहीं पाया जाता जितना पाश्चात्य देशों में पाया जाता है। यहाँ पर यह जंगली रूप में नहीं पाया जाता। पालतू ही पाया जाता है।

जल कुक्कुभ (यष्टिक जल कुक्कुभ)

स्था० नाम—कोरा, कोंगरा (हिन्दी) खोरा सोरई (आसाम)

जलकुक्कुभ लम्बोतरे पैर तथा लम्बी उँगलियों का पक्षी है। उसके कपाल पर स्थित कवच पीछे की ओर नोकीला बना होता है। सन्तानोत्पादन काल में नर पक्षी में यह पीछे बढ़कर सींग-सा बना होता है। नर जलकुक्कुभ मादा से विभिन्न होता है तथा आकार विशेष बड़ा होता है।

सन्तानोत्पादन ऋतु से विभिन्न समयों में नर और मादा दोनों का रङ्ग धूमिल भूरा होता है जिसमें ऊपरी तल की बहुसंख्यक रेखाएँ होती हैं और अधोतल में उसी रङ्ग की आड़ी स्फुट पट्टियों की पंक्तियाँ होती है। सन्तानोत्पादन काल में नर के सारे शरीर का रङ्ग प्रायः स्लेटी काला हो जाता है।

नर जलकुक्कुभ में चोंच, कपालीय कवच तथा पैर लाल होते हैं। मादा की चोंच पीलेपन रङ्ग की होती है और पैर गहरे हरे रङ्ग के होते हैं। नर की आँख लाल तथा मादा की भूरी होती है। शिशु जलकुक्कुभ मादा की तरह होते हैं, परन्तु अधोतल में आड़ी रङ्गीन स्फुट पट्टियाँ अपेक्षाकृत थोड़ी होती हैं।

नर जलकुक्कुभ का शरीर डेढ़ फुट लम्बा तथा पङ्ख आठ इञ्च लम्बी है। गुल्फ तीन इञ्च लम्बा होता है। मध्य उँगली इससे भी

लम्बी होती है। मादा के शरीर की लम्बाई केवल चौदह इञ्च और पङ्ख की लम्बाई सात इञ्च होती है। अधोपाद (गुल्फ) ढाई इञ्च लम्बा होता है।

जलकुक्कुभ का प्रसार भारत के उष्ण जल-प्रधान भूमागों में है। यह पूर्व में जावा और जापान तक पाया जाता है। यह रात्रिचारी पक्षी है। आसाम में यह पक्षी पालतू होता है तथा उसे जंगली जलकुक्कुभ पकड़ने के लिए छोड़ा जाता है। इस तरह जंगली पक्षी भी पकड़ में आ जाता है। जुलाई अगस्त में नरकुलों या जलवाही वनस्पतियों पर बने घोंसले में यह पक्षी अण्डे देता है। इस पक्षी को शिकारी अधिक पसन्द करते हैं। यह सन्तानोत्पादन काल में उच्च स्वर उत्पन्न करता है।

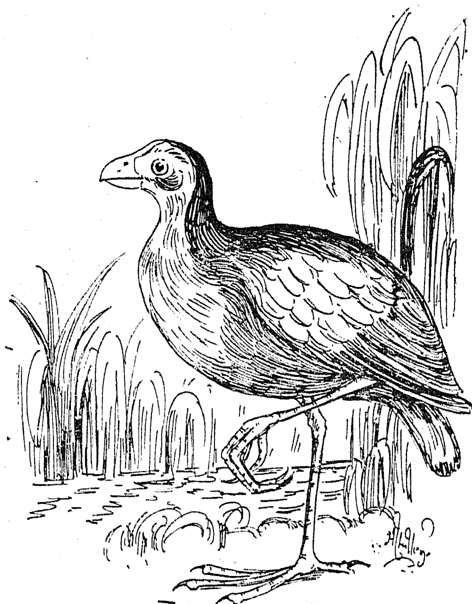
राजीव अम्बु कुक्कुट

स्था० नाम—कईम, कलीम, खरीम, खीमा (हिन्दी)

राजीव या नीलारुण अम्बुकुक्कुट का आकार मुर्गी के बराबर होता है। इसका रङ्ग बैंजनी (नीलारुण) होता है। इसकी चोंच तूती (चटक) की तरह स्थूल और एक छोटे गोल छिद्र रूप में नासारंध्रयुक्त होती है। भाल के ऊपर चौखूंटा कवच होता है। पैर तथा उँगलियाँ बड़ी लम्बोतरी होती हैं। चोंच, कपाल, कवच तथा चरण का रङ्ग चमकीला, लाल होता है। शरीर के परों का रङ्ग अनेक रूप के भव्य नीले रंग का होता है। दुम के अधोतल में श्वेत धब्बा होता है। सिर का रङ्ग साधारणतया धूसर (खाकी) होता है। नर और मादा का रंग-रूप समान होता है। नर कुछ बड़े आकार का तथा बलिष्ठ होता है। शिशु राजीव अम्बु-कुक्कुट में परों तथा चारों ओर चरण का रंग स्पष्टतया धूमिल होता है।

राजीव अम्बुकुक्कुट की लम्बाई लगभग डेढ़ फुट होती है। अधोपाद (गुल्फ) की लम्बाई तीन इञ्च तथा पङ्ख की लम्बाई दस इञ्च और आकार गोल होता है।

राजीव अम्बुकुक्कुट का प्रसार कैस्पियन सागर से लेकर बर्मा तक है। दलदली स्थलों की शोभा इस पक्षी द्वारा अत्यधिक बढ़ती है। यह घने आच्छादन में रहना चाहता है। वृक्ष पर झट चढ़ जाता है परन्तु साधारण अम्बुकुक्कुट को भाँति तैराक नहीं होता। जलकुक्कुट वंशीय सभी



राजीव अम्बुकुक्कुट

पक्षियों में राजीव अम्बुकुक्कुट अधिकांशतः शाकाहारी होता है। धान की फसल को यह भारी हानि पहुँचाता है। अन्य सभी जलपंकचारियों से विभिन्न विधि से इसको आहार करते पाया जाता है। यह खाते समय आहार की वस्तु को प्रायः एक चरण से उठा लेता है। जुलाई से सितंबर तक इसके अंडा देने का ऋतु है। दलदलीय वनस्पतियों में इसका

घोंसला बनता है। एक ऋतु में दस अंडे तक देता है किन्तु प्रायः इससे कम अंडे ही देता है। अण्डों का रग गुलाबी तथा लाल और बैंज़नी धब्बों युक्त होता है। उसकी लम्बाई दो इञ्च होती है। बच्चों का रंग काला होता है। शिशु को माता-पिता दाने चुगाते हैं। वयस्क पक्षी एक दूसरे से पङ्खों की मार से युद्ध भी करते हैं। क्रोध में अपनी दुम का श्वेत अधोतल फैला लेते हैं। मुर्गों की तरह अपने दोनों पङ्ख भी टकराते हैं।

कारण्ड कुक्कुट

स्था० नाम—दूसरी, दसार्नी, आरी, खुसकुल, बिकारी
टिकरी (हिन्दी) बड़ा गोदन (पूर्णिया)

सुश्रुत ने जल पर तैरने के कारण जल पक्षियों को प्लव नाम देकर उनके भेदों में कारण्ड का नाम लिया है। हँस, सारस, कारण्ड, वक, क्रौंच, शरारिका, नन्दी मुखी, कादंब तथा बलाका उसके बताये भेद हैं। किन्तु आधुनिक वैज्ञानिक विभाजन में यह जल कुक्कुट वंश का एक पक्षी मानी गया है। यह पक्षी अन्य जल कुक्कुटों के सदृश प्रायः उतना कृशकाय नहीं होता। यह अपनी छोटी दुम भी नहीं हिलाता। इसकी उँगलियों में अर्द्धवृत्ताकार छोर इसकी विशेषता होती है। इसकी चोंच तथा सिर भी विशेष रूप का होता है।

कारंड कुक्कुट के परों का रङ्ग स्लेटी काला होता है। नर और मादा का एक ही रङ्ग होता है। इसकी चोंच तथा कपाल स्थित कवच का रङ्ग श्वेत होता है। इसके अधोपाद (गुल्फ) का रङ्ग हरा मिश्रित धूसर-सा होता है। अल्पवय कारंड कुक्कुट का अधोतल कुछ श्वेत तथा शरीर का रङ्ग भूरा होता है।

इस पक्षी की लम्बाई १६ इञ्च होती है। अतएव जलकुक्कुटों में इसे बड़ा पक्षी कहना चाहिये। पङ्ख फैलने पर आठ इञ्च लम्बा होता है। अधोपाद दो इञ्च लम्बा होता है। बिचली उँगली यथेष्ट लम्बी होती है

किन्तु चोंच छोटी होती है। मुख के छेद से छोर तक एक इञ्च लम्बी होती है। चङ्गुल लम्बे तथा तेज होते हैं। इस कारण यह कुछ वस्तु खरोच सकता है तथा पञ्जा मार सकता है।

कारंड कुक्कुट बहुत विस्तृत पत्ती है। योरप और एशिया के अधिकांश भाग में पाया जाता है। भारत तथा बर्मा में भी पाया जाता है परन्तु सीलोन में नहीं मिलता। बहुत से कारंड कुक्कुट शरद् ऋतु में प्रवास करने ही आये होते हैं, परन्तु वे हमारे देश में ही बस कर सन्तानोत्पादन भी करते देखे जाते हैं। यह पत्ती जलकुक्कुट की अपेक्षा हसक (बत्तख) से अधिक मेल खाता है। यह खुले जल का प्रेमी है। यह जल पङ्कचारी वृत्ति नहीं रखता। उथले जल में चलने के स्थान पर पानी में तैरना पसन्द करता है। किन्तु भूमि पर चल सकता है।

कारंड कुक्कुट उड़ना प्रारम्भ करने में कुछ कठिनाई अनुभव करता है, परन्तु वायु में उठकर यह अन्य जल कुक्कुटों से अधिक दृढ़ता से उड़ता है।

कारंड कुक्कुट का आहार जलीय वनस्पति तथा जलीय जन्तु हैं। आहार की टोह में डुबकी भी लगा लेता है। यह उछाल मार कर डूबता है। इस कारण शीघ्र पानी से ऊपर शरीर कर लेता है। इसे झुंडों में पाया जाता है। हँसक (बत्तख) भी इसके झुंड के साथ रहता है। इसलिए हंसकों के दल पालने पर कारंड कुक्कुटों को उनके निकट बुलाया जा सकता है। पहाड़ी स्थानों में यह मई जून मास में अण्डे देता है। परन्तु मैदानी भागों में कुछ बाद में अण्डे देता है। एक ऋतु में बारह अण्डे साथ देता पाया जाता है। उथले पानी के नरकुलों तथा वनस्पतियों में यह अपना भद्दा घोंसला बना लेता है। अण्डे खाकी या मटमैले भूरे रङ्ग के होते हैं जो चितकबरे काले रङ्ग की चित्तियों या धब्बों युक्त होते हैं। उनकी लम्बाई दो इञ्च होती है।



भारत जलकुक्कुटी

इस पक्षी की लम्बाई एक फुट होती है। बंद पङ्ख का विस्तार पाँच इञ्च, चोंच की लम्बाई पौने दो इञ्च तथा गुल्फ की कुछ उससे कम होती है।

जलकुक्कुटी पक्षियों में भारत जलकुक्कुटी की चोंच सबसे लम्बी होती है। इसके ऊपरी तल पर काले तथा भूरे रङ्ग की रेखाएँ होती हैं। मुख पर सादा स्लेटी धूसर रङ्ग होता है। अधातल में वक्षस्थल पर भूरे रङ्ग की झलक होती है तथा पार्श्व भागों में काले तथा श्वेत रङ्ग की आड़ी स्फुट पट्टियाँ होती हैं। हनु श्वेत होता है। अधोतलीय पुच्छ-आच्छादक काला होता है जिसमें श्वेत किनारी होती है। चोंच से लेकर सिर के दोनों ओर एक गहरे रङ्ग की रेखा होती है नर मादा समान रङ्ग के होते हैं, परन्तु अल्पवय में पङ्ख-आच्छादक पर श्वेत आड़ी स्फुट पट्टियाँ होती हैं। चोंच का रङ्ग गहरा होता है। वयोवृद्ध पक्षियों में निम्न हनु का आधार स्थल रक्तवर्ण होता है और अल्पवयों में पीलापन युक्त होता है। पैरों का रङ्ग मन्द भूरा गुलाबी होता है।

भारत जलकुक्कुटी का प्रसार-क्षेत्र सिंध से लेकर जापान तक है। यह शीत ऋतु में पूर्वी बङ्गाल, आसाम तथा बर्मा में प्रवास करता है। दक्षिण भारत में नहीं पाया जाता। ग्रीष्म ऋतु में उत्तर पूर्वी चीन, पूर्वी साइबेरिया तथा जापान में रहता है।

यूरोपीय जलकुक्कुटी में सिर के धूसर पार्श्वों के साथ भूरी रेखा नहीं होती। अधिक पीछे तो वह बिल्कुल नहीं होती। वक्षस्थल पर शुद्ध धूसर रङ्ग होता है। अधोपुच्छ-आच्छादक में कालापन की अपेक्षा श्वेत रङ्ग अधिक होता है। यह कभी-कभी गिलगिट, कुल्लू, देहरादून या एकाध अन्य स्थानों में मिलती है।

नीलोरस जलकुक्कुटी

स्था० नाम—काना कोली (तामि०), वाडे कोली (तेल०)

नीलोरस जलकुक्कुटी की लम्बाई दस इञ्च से कुछ अधिक होती है। बन्द पङ्ख का फैलाव पाँच इञ्च होता है। चोंच तथा गुल्फ प्रत्येक डेढ़ इञ्च लम्बे होते हैं।

नीलोरस जलकुक्कुटी की चोंच छोटी तथा मोटी होती है किन्तु उसकी लम्बाई गुल्फ के बराबर ही होती है। यह बहुत स्पष्टतः रङ्ग की होती है। शीर्ष तथा गर्दन के पीछे बादामी, शेष ऊपरी अंग पर भूरे रङ्ग के धब्बोयुक्त श्वेत, मुख पर श्वेत, अग्र ग्रीवा तथा वक्षस्थल पर श्वेत तथा अन्य अधोतल के भागों तथा पार्श्व में मन्द काला तथा कंठ का रङ्ग श्वेत होता है। नर की अपेक्षा मादा धूमिल रङ्ग की होती है तथा उदर के मध्य में मटमैला श्वेत रङ्ग होता है। अल्पवयों में भूरा शीर्ष होता है तथा पीठ पर श्वेत आड़ी पट्टियाँ नहीं होतीं।

यह पक्षी सारे भारत में पाया जाता है। पूर्व में दक्षिण चीन, फिलीपाइन तथा जावा तक पाया जाता है। यह बारहमासी पक्षी है और मई से अक्टूबर तक संतानोत्पादन करता है। घोंसले के लिए केवल घास की गद्दी बना लेता है पाँच से सात अंडे तक एक बार में देता है।

शस्य कुक्कुटी

आकार — पङ्ख (नर) ६ इञ्च तक, (मादा) ६ इञ्च से कम, पूँछ—२ इञ्च, गुल्फ — पौने दो इञ्च, चोंच — १ इञ्च से कम।

शस्य कुक्कुटी की चोंच तथा उंगलियों का आकार भारत जलकुक्कुटी से अपेक्षाकृत छोटा होता है। इसके शरीर का ऊपरीतल धूमिल भूरा किन्तु काली रेखाओं युक्त तथा पार्श्व भागों में भूरी तथा श्वेत आड़ी और खड़ी पट्टियों युक्त होता है। पङ्ख सपाट रूप से बादामी होता है। अल्पवय

में कुछ श्वेत पट्टियाँ भी होती हैं। चोंच तथा पैर भी भूरे होते हैं। आँख का रङ्ग भी भूरा होता है।

शस्य कुक्कुटी का प्रसार-क्षेत्र सारा योरप तथा पश्चिमी और मध्य एशिया है। शीतकाल में यह प्रवास कर उत्तरी अफ्रीका पहुँचती है। गिलगिट (काश्मीर) में भी इस पक्षी का नमूना पाया जा सका है। यह भारत का पक्षी नहीं कहा जा सकता। यह कभी भारत में सन्तानोत्पादन नहीं करता। यह पाश्चात्य शीत देशों में ग्रीष्म काल में ६ से १४ या १८ अंडे तक एक बार में देता है।

विन्दुकित कुक्कुटिका

स्था० नाम—गुड़गुड़ी खैरी (बंग०), वेन्ना मुडी कोडी (तामि०)

आकार—पूर्ण शरीर—८ या ८$\frac{३}{४}$ इंच, पंख—४$\frac{३}{४}$ इंच, पूँछ—२ इंच, गुल्फ—१$\frac{१}{२}$, इंच, चोंच —$\frac{३}{४}$ इंच।

विन्दुकित कुक्कुटिका का ऊपरी तल भूरा होता है जिस पर काली रेखाएँ होती हैं। निम्न तल धूसर होता है। ऊपरी तथा निम्न दोनों ही तल श्वेत रंग से विन्दुकित होते हैं। पार्श्व में भूरे तथा श्वेत रंग की स्फुट पट्टियाँ होती हैं। नर मादा समान रंग के होते हैं किन्तु अल्प-वय पक्षी में भूरा वक्षस्थल तथा श्वेत कंठ होता है। इसकी चोंच पीली तथा पैर जैतूनी हरा होता है।

यह पक्षी प्रवासी है। ग्रीष्म में योरप तथा पश्चिमी मध्य एशिया में रहता है। परन्तु शीतकाल में भारत में प्रवास करता है। अफ्रीका भी इसका प्रवास-क्षेत्र है। आसाम तथा बर्मा में इसे पाया जा सका है। दक्षिण में बेलगाँव तक इसके प्रवास करने का प्रमाण मिलता है किन्तु दक्षिण भारत में यह भूले-भटके ही पहुँचता है।

वर्त्ति कुक्कुटिका

स्था० नाम—झिल्ली (नेपाल)

आकार—पूर्ण शरीर—८ इंच, पंख—३½ इंच, पूँछ—२ इंच से कम, गुल्फ—एक इंच से अधिक, चोंच—½ इंच।

वर्त्तिकुक्कुटिका सबसे छोटे आकार की कुक्कुटिका है। इस का आकार गौरैया के बराबर होता है। ऊपरी तल का रंग काले रंग की रेखाओंयुक्त भूरा तथा वक्षस्थल और मुख का रंग धूसर तथा उदर का रंग काले तथा श्वेत रंग की आड़ी पट्टियों युक्त होता है, पीठ पर प्रमुख रूप से श्वेत रेखाएँ होती हैं। चोंच से प्रारम होकर एक भूरी रेखा मुख पर बनी होती है। नर मादा एक समान होते है। चोंच तथा पैर हरे होते हैं।

—:०:—

जलकोपि वंश

कांस्यपक्ष जलकपोत

स्था० नाम – दलपीपी, जलपीपी, करटिया

कांसे के रंग के पङ्खयुक्त होने से इस पक्षी का नाम कांस्य (कांसा) पक्ष जलकपोत है। इसका आकार तीतर के बराबर होता है। इसके पैर लम्बोतरे होते हैं। सिर, गर्दन तथा वक्ष का रंग चिकना काला होता है। पीठ तथा पङ्ख हरापन युक्त कांसे के रंग के होते हैं। पूँछ बाँड़ी तथा बादामी लाल होती है। इनके नर और मादा समान रंग-रूप के होते हैं। परन्तु अल्पवय मुख्यतः उजले से, लाल मिश्रित भूरे और भूरे होते हैं। जलकपोतों की यह विशेषता है कि उनके पैर में मकड़े के पैरों की भाँति लम्बोतरी पादांगुलियाँ होती हैं। यह झीलों तथा तालाबों में एकाकी या झुंड रूप में रहता है।

कांस्यपक्ष जलकपोत का प्रसार-क्षेत्र सारे भारत में है। पश्चिमी राजपूताना में नहीं पाया जाता। आसाम में भी इसका प्रसार है। पूर्व में पूर्वी द्वीपसमूह तक पाया जाता है।

कांस्यपक्ष जलकपोत या जलपीपी झीलों तथा तालाबों में आने वाले जलीय वनस्पतियों कुमुद, सिंघाड़े आदि के जल-तल पर तैरते हुए पत्तों पर विहरण करता है। इनके ऊपर उसकी अत्यन्त लम्बोतरी हल्की पादांगुलियाँ सुविधापूर्वक चल सकने में समर्थ बनाती हैं। यह प्रातः सायं ही अधिक क्रियाशील रहता है। यदि तंग न किया जाय तो तालाबों में पानी भरने आते-जाते लोगों तथा धोबी-घाटों पर कपड़ा धोने में व्यस्त धोबियों के रहने पर भी कहीं जल-वनस्पति के ऊपर कांस्यपक्ष जलकपोत निर्द्वन्द्व रूप से विहार करता रह सकता है।

कहीं प्रपीड़ित किया जाता है तो नदी पर मनुष्य के आगमन पर जलपीपी निकट ही जलखण्ड में उगे नरकुलों के झुरमुट में जा छिपता है या जलीय वनस्पतियों के किसी डंठल पर बैठ जाता है। यदि छिपने का कोई अन्य साधन न हो और खुला जल-तल हो तो कहीं जलीय वनस्पति के पत्तों के नीचे अर्द्ध जलमग्न सा होकर दुबक जाता है। विवशता होने पर सूखी भूमि पर खड़ी फसलों के मध्य भी पौधों के डंठलों



कांस्यपक्ष जलकपोत

पर जा बैठता है। यह पानी में डुबकी लगाने में कुशल होता है तथा जलतल पर भली भाँति तैर भी सकता है किन्तु उड़ने में बहुत दुर्बल होता है। यदि उड़ना ही पड़ता है तो बड़ी कठिनाई से पङ्ख तीव्र गति से फड़फड़ा कर वायु में उड़ता है। उड़ान के समय गर्दन आगे की ओर

निकली होती है तथा पैर पीछे पूँछ के नीचे फैले होते हैं। इस प्रकार कुछ गज तक जल-तल से कुछ ही ऊँचाई पर उड़कर पुनः किसी जलीय वनस्पति पर आ बैठता है। इसका आहार बीज, मूल आदि है किन्तु कीड़े तथा घोंघे आदि भी खाता है।

जलपीपी या कांस्यपक्ष जलकपोत का सन्तानोत्पादन वर्षा ऋतु के प्रारम्भ से सितम्बर तक होता है। इसका घोंसला पानी पर तैरती हुई पत्तियों के ऊपर नरकुलों तथा अन्य जल-वनस्पतियों के डंठल शिथिल रूप में एकत्र कर बना होता है। यह कभी अर्द्ध जलमग्न पत्तियों पर बना होता है। और कभी तटीय वनस्पतियों के मध्य में बना हो सकता है। एक बार में ४ अण्डे देता है।

असिपुच्छ जलकपोत

स्था० नाम—पिहू, पिहूया, सुरहल, सकदल, मीवा, दलकुकरा, मेपी, जलमार्जार, चित्र बिलाई।

असिपुच्छ जलकपोत या पिहू पक्षी का आकार पूँछ छोड़कर तीतर के बराबर होता है। इसका रंग कत्थई तथा श्वेत होता है। इसके पैर बड़े लम्बोतरे होते हैं तथा नोकीले हँसिया के आकार की पूँछ होती है। सन्तानोत्पादन काल के अतिरिक्त समय में इसका रंग मुख्यतः धूमिल भूरा और श्वेत होता है। ऊपरी वक्ष पर काला कण्ठा होता है। लम्बी पूँछ का अभाव होता है। नर और मादा का रंग समान होता है। सन्तानोत्पादन काल के अतिरिक्त समय में यह तालाबों में पटे पड़े जलीय वनस्पतियों के ऊपर बड़े झुंडों में रहता है।

असिपुच्छ जलकपोत का प्रसार-क्षेत्र सारे भारत में है। काश्मीर में ६००० फुट ऊँचाई तक पाया जाता है। पूर्व में दक्षिणी चीन, फिलीपाइन तथा जावा तक पाया जाता है।

कमल, कुमुद तथा सिंघाड़ों से भरे तालाबों में असिपुच्छ जलकपोत

प्रायः पाया जाता है। यह बारहमासी पक्षी है। किन्तु तालाबों का पानी सूख जाने पर इसे उड़कर अन्यत्र निवास करना पड़ता है। तालाबों के पानी में तैरते हुए वनस्पतियों के ऊपर चल फिर सकने योग्य पैर की लम्बोतरी अङ्गुलियाँ होती हैं। लम्बी पादांगुलियाँ के कारण उसके शरीर का भार बट जाता है। अतएव वह तैरते हुए अत्यन्त हल्के पत्तों पर बैठा रहकर तनिक भी लहर उठाए बिना ही जल में दूर तक पहुँच सकता है। सन्तानोत्पादन काल के अतिरिक्त समय में ५० या १०० के झुंड में एकत्र होता है तथा नाक से "टिडँ टिडँ" का शब्द करता रहता है। इसका आहार वानस्पतिक पदार्थ तथा कीड़े और घोंघे हैं। असिपुच्छ जलकपोत में पङ्ख के जोड़ के निकट एक काँटा या शल्य होता है। वह प्रहार करने के लिए प्रयुक्त होता है।

इसका सन्तानोत्पादन काल जून से सितम्बर तक है। इसके घोंसले जलपीपी समान ही बने होते हैं। कभी-कभी तैरते हुए वनस्पतियों के तनों से बाड़ा-सा बना लेता है या कभी-कभी सिंघाड़ा या कुमुद के बड़े पत्तों पर ही अण्डे देता है। एक बार में ४ अण्डे देता है। मादा अण्डे सेती है। खटका होने पर वह अण्डे को उठाकर कुछ गजों दूर अन्यत्र रख देती है। अण्डे को चोंच द्वारा वक्ष से दबाकर सावधानी से उठा ले जाती है। अण्डे को इस प्रकार सँभाल कर पीछे की ओर चलती जाती है तथा उसे प्रायः पत्तियों के ऊपर घसीटती-सी जाती है।

—:०:—

जालांगुलिक वंश

कृष्णमुखी जालांगुलिक

कृष्णमुखी जालांगुलिक एक विचित्र वंश का पक्षी है। यह जल पङ्कचारी नहीं होता, बल्कि प्लव या जलचारी होता है तथा जल में ही तैरता आहार प्राप्त करता है। यह पनडुब्बी पक्षियों की तरह डुबकी भी लगा लिया करता है। ऐसे स्वभाव के होने पर भी इसका सम्बन्ध कुछ जल-पङ्कचारी पक्षियों से इतना है कि इसकी जल पङ्कचारी में गिनती की जाती है। चोंच, पङ्ख तथा सिर की रचना में जालांगुलिक पक्षी को जल-कुक्कुट का निकटवर्ती कहा जा सकता है। इसमें अग्रिम तीन पादांगुलियाँ तथा एक पिछली पादांगुलि होती है। पादांगुलियाँ कारंड कुक्कुट के सदृश झिल्ली के फंकोंयुक्त होती हैं जिनके सिरे अर्द्धवृत्ताकार होते हैं। किन्तु गुल्फ (घुटने से लेकर पादांगुलियों तक पैर का भाग) बहुत छोटा होता है। पूँछ यथेष्ट विकसित होती है। इसकी तीन ही जातियाँ होती हैं। एक अफ्रीका में, दूसरी पूर्वी एशिया में तथा तीसरी दक्षिणी अमेरिका में पाई जाती है।

कृष्णमुखी जालांगुलिक का रङ्ग ऊपरी तल पर भूरा, तथा निम्न तल पर श्वेत होता है। नर का मुख तथा कण्ठ काला होता है। मादा का कण्ठ श्वेत रङ्ग पर काले गोटे युक्त होता है। शिशु पक्षी मादा समान होते हैं। नर की चोंच चमकीली पीली, तथा मादा की मन्द रङ्ग की होती है। चरण का रङ्ग हरा होता है। फंकीय झिल्लियों (पृथक्-पृथक् फाँके रूप के अँगुलिजाल) पर नर में चमकीले पीले रङ्ग की गोट होती है। मादा में यह रङ्गीन गोट बहुत कम होती है। नर की आँखें भूरी तथा मादा की आँख पीली होती हैं।

कृष्णमुखी जालांगुलिक की लम्बाई दो फुट, पङ्ख की लम्बाई दस इञ्च और दुम की लम्बाई उसकी आधी होती है। गुल्फ दो इञ्च लम्बा होता है। चोंच उससे लगभग आधी इञ्च बड़ी होती है। नर पक्षी मादा से कुछ बड़ा होता है।

कृष्ण मुख या अन्य उपजातियों के भी सम्बन्ध में सन्तानोत्पादन क्रिया का ज्ञान नहीं हो सका है। एक बार अमेरिकीय उपजाति के एक नर जालांगुलिक पक्षी को दो बच्चे साथ लेकर उड़ते पाया गया था।

जालांगुलिक की भारतीय या एशियाई उपजाति आसाम से लेकर सुमात्रा तक फैली पाई जाती है। जल के स्थानों में इसे इस क्षेत्र में सर्वत्र पाया जा सकता है। तटीय भाग से लेकर पहाड़ी नालों तक में यह पाया जाता है। यह पक्षी अधिक सुलभ नहीं है। इसके कुछ नमूने ही प्राप्त होते हैं। यह भूमि पर भली-भाँति दौड़ता है तथा उड़ने में भी कुशल है। जल तल पर तैरने में तो विशेषता रखता है। पानी में केवल सिर और गर्दन ही दिखाई पड़ती है। यह कवचीय मत्स्य और कीड़े-मकोड़े आदि खाता है। मछलियाँ भी उदरस्थ करता है। इस पक्षी को मांसाहारी पसन्द करते हैं। इस पक्षी के बारे में विशेष अधिक बातें ज्ञात नहीं हैं। यह दुर्लभ पक्षी ही है।

—:०:—

कुनाल वंश

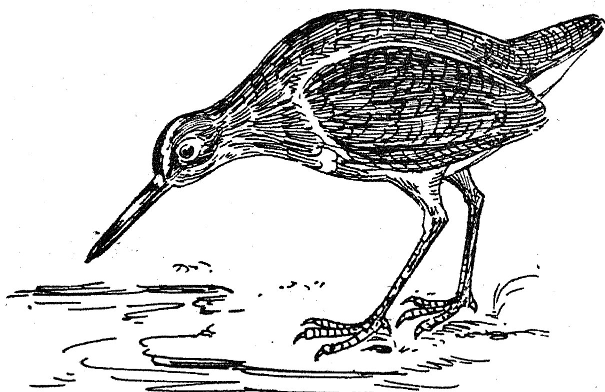
चित्रित कुनाल

नाम—तिब्रड़, पनलवा (रत्नगिरि), बग्गरजी (बंग),
राजचहा (सागर)

चित्रित कुनाल की चोंच सीधी नहीं होती, बल्कि सिरे की ओर थोड़ी झुकी होती है। सिरे पर कुछ चौड़ी भी होती है। इसकी चोंच पर छिद्र भी नहीं दिखाई पड़ता। आँखें बड़ी होती हैं। वे बहुत अधिक पीछे की ओर नहीं होतीं। पैर बड़े होते हैं, पूँछ बहुत छोटी तथा चौकोर होती है। पङ्ख बड़े तथा कुन्द छोरोंयुक्त होते हैं। शरीर विशेष पुष्ट होता है। शीर्ष पर मन्द पीत वर्ण की रेखाएँ नीचे गिरती दिखाई पड़ती हैं। पीठ पर भी दो रेखाएँ होती हैं किन्तु पङ्खों के पतत्र (पर) तथा पूँछ का रङ्ग धूसर तथा काले रङ्ग की हल्की पुटयुक्त होता है। उसमें बड़े रक्तवर्णीय धब्बे भी होते हैं। उदर का रङ्ग श्वेत होता है। ये रङ्ग तो नर और मादा में एक समान होते हैं परन्तु कुछ अन्य भिन्नता भी होती है। नर के सिर, गर्दन तथा वक्षस्थल का रङ्ग धब्बोंयुक्त मन्द भूरा होता है। आँख के चारों ओर रक्त वृत्त होता है जो रेखा रूप में पीछे बढ़ गया होता है। ऊपरी तल का रङ्ग हल्के हरे तथा श्वेत रङ्ग के धब्बों की विचित्र गंगा-जमुनी रूप में रहता है जिसमें पङ्ख के भीतरी भाग में रक्त धब्बा का क्षेत्र होता है तथा पीठ के दोनों पार्श्व में रक्त रेखा होती है। मादा विशेष महत्व रखने वाली होती है। उसके मुख, कंठ तथा गर्दन का रङ्ग मन्द किन्तु प्रचुर बादामी होता है। वह काले रूप में बदल कर नीचे श्वेत उदर में जा मिला होता है। आँख को घेरने वाले वृत्त तथा उसमें से पीछे तक फूट निकली रेखा श्वेत रङ्ग की

होती है। नर की तरह रक्त वर्ण की नहीं होती। पीठ तथा पङ्ख नर की अपेक्षा न्यून रङ्गों के होते हैं। उनका रङ्ग चमकीला हरा तथा काले रङ्ग की हल्की पुटयुक्त होता है। उसके साथ दोनों ओर उज्ज्वल रंग होता है जो नोकीले तथा लम्बे पतत्रों (परों) से बना होता है। अल्पायु मादा पक्षी का रङ्ग नर से मिलता है तथा अल्पायु नर का रङ्ग प्रायः मादा समान दिखाई पड़ता है। इस जाति के पक्षी की आँखें भड़कीली होती हैं। आँख के कोष्ट का रङ्ग हल्का भूरा होता है। पैरों का रङ्ग नीलापन मिश्रित हरा होता है। उसके रङ्ग में विभिन्नता भी होती है। नर की चोंच सदा हल्की भूरी होती है। मादा में उसके आधार तल का रङ्ग भूरा होता है जो छोरों पर रक्तवर्ण हो गया होता है।

नर कुनाल की लम्बाई दस इञ्च, बन्द पङ्खों की लम्बाई पाँच इञ्च,



चित्रित कुनाल

मुख्यपाद की लम्बाई पौने दो इञ्च तथा पूँछ की लम्बाई डेढ़ इञ्च होती है। वयस्क मादा इससे निस्सन्देह बड़ी होती है।

कुनाल पक्षी प्रवासी वृत्ति का नहीं है। यह बारहमासी होता है।

अफ्रीका के अधिकांश भाग, मडागास्कर द्वीप तथा दक्षिणी एशिया में पाया जाता है। इसका प्रसार-क्षेत्र मिस्र से जापान तक कहा जा सकता है। यह भारत में होता है किन्तु हिमालय में दुर्लभ ही है। जल-प्रचुर स्थानों की खोज में यह स्थानीय प्रवास कर लेता है। यथार्थ जलमय स्थान की अपेक्षा आर्द्र भूमि ही इसको अधिक पसन्द होती है। इसका भोजन कीड़े-घोंघे आदि हैं। धान, जङ्गली घास के बीज भी खा लेता है। यह उड़ना प्रारम्भ करते समय पैर नीचे रखे रहता है। इसे उड़ने के लिए भूमि पर दौड़ लगानी पड़ती है। तुरन्त ऊपर वायु में नहीं उठ सकता।

कुनाल कहीं भूमि पर गड्ढे बनाकर या घासपात पर अण्डे देता है। वर्ष भर अण्डा देने का समय है। कदाचित् वर्ष में दो बार सन्तानोत्पादन करता है। एक समय में चार अण्डे दिये जाते हैं।

—:०:—

सारंग वंश

जालांगुलिक पक्षी तैराक और पनडुब्बे पक्षी होने पर जहाँ जल पङ्कचारी पक्षियों की पंक्ति में बैठाये जाते हैं, वहाँ वंशगुणों में जल पङ्कचारी पक्षी का बाह्य लक्षण न होने पर सारङ्गवंशीय पक्षियों की भी गिनती जल पङ्कचारी में की जाती है। ये पक्षी न तो तैराक ही होते हैं और न उथले जलों में चलने वाले (जल पङ्कचारी)। कुछ विशेष सम्बन्धों के कारण ही उनकी गिनती जलपङ्कचारी में की जाती है।

शिकार किये जाने वाले पक्षियों में सारंगवंशीय पक्षियों को बेजोड़ कहा जा सकता है किन्तु इनकी अल्पसंख्या या दुर्लभता शिकारियों को निराशा में डालती है। इसकी लगभग तीस जातियाँ है जो अधिकांश में अफ्रीका में पाई जाती हैं। भारत में पाँच छ: जातियाँ मिलती हैं। इनमें से तीन पक्षियों को तो सर्वथा देशी कहा जा सकता है। वे बारहमासी हैं। अमेरिका में कोई सारंग पक्षी नहीं पाया जाता। कनाडा के एक हंस को सारंग नाम से भ्रमपूर्वक कभी पुकारा जाता था। आस्ट्रेलिया में एक जाति अवश्य पाई जाती है।

सारंग पक्षियों को शुष्क मैदानी भूखण्ड में पाया जाता है। वे उत्तराखण्ड के देशों में फैले नहीं पाये जाते। अधिक उष्ण वातावरण सहन की शक्ति उनमें पाई जाती है। इनका मांस शिकारी रुचिकर पाते हैं। छोटे सारंगों को तीतर की तरह ही मारा जा सकता है। बड़े सारंगों का शिकार सावधानी से करना पड़ता है। छोटी जाति के सारंग तीव्र-गति से पङ्ख फटफटा कर उड़ते हैं, परन्तु बड़ी जाति के सारंग शनैः शनैः तथा दृढ़ता से ही पङ्ख फटफटा कर उड़ सकते हैं।

सारंग पक्षी टिट्टिभों की भाँति होते हैं। उनकी ही तरह विशाल पङ्ख तथा लम्बोतरे पैर होते हैं। पैर की निम्नसन्धि पर-शून्य (नग्न) होती है। सिर छोटा तथा गर्दन लम्बी होती है। पीठ चौड़ी तथा चपटी होती है। चरण विचित्र होते हैं। पादांगुलियाँ इतनी छोटी होती हैं मानों कुन्द नखों से दबा दी गई हों, पिछली पादांगुलि का अभाव होता है। मुख्यपाद पर छोटे छिछड़े मढ़े होते हैं। चोंच टिट्टिभों या कबूतरों की तरह होती है। वह तीतर की तरह शीघ्र नोकीली बनकर शंकु के आकार की बनी होती है। मुख चौड़ा तथा आँखों तक फैला होता है। आँखें विशाल तथा प्रायः पीली होती हैं।

सारंग पक्षी अपनी टाँगों तथा गर्दन धड़ के साथ समकोण-सा बनाकर रखते हैं। यह उनकी विशेषता होती है। उनके सिर तथा पीठ का चपटापन भी विशेष पहचान है। ऊँट की भाँति अपनी चोंच झुकी सी रखकर निर्बुद्धि का प्रदर्शन करते हैं। वे भूजीवी पक्षी हैं किन्तु आशङ्का होने पर उड़ने के लिए सन्नद्ध पाये जा सकते हैं। जहाँ तक हो सकता है, वे दौड़कर ही आपत्ति से अपनी रक्षा करते हैं।

उड़ना भी सारंग पक्षी ने छोड़ा नहीं है। सन्तानोत्पादन ऋतु में तो नर पक्षी को उड़ान की अठखेलियाँ कर बड़ा आनन्द अनुभव करते देखा जाता है। अधिकांश जातियाँ भारत में बारहमासी हैं। ये भूमि में एक साधारण गर्त बनाकर उससे घोंसले का काम निकालते हैं। अण्डे का रंग हल्का हरा तथा गहरे रंग की चित्तियोंयुक्त होता है। नर और मादा के आकार या रंग या दोनों में ही विभेद पाया जाता है।

सारंग पक्षी का आहार झरबेरियाँ, जड़मूल, दाने हैं, किन्तु साधारण वृत्ति शाकाहारी की जगह कीटाहारी ही है। इनसे फसलों को विशेष हानि नहीं पहुँचती, बल्कि विशेष लाभ ही पहुँचता है। इनकी संख्या कहीं पर अत्यधिक नहीं हो सकती। अतएव इनसे हानि की भी

क्या सम्भावना मानी जाय। इस पक्षी को रक्षित करने की आवश्यकता है।

सारंग पक्षी पानी बहुत कम पीता है। पानी में पंख भिगो कर स्नान करने की भी वृत्ति नहीं रखता, बल्कि गधों या मुर्गों की तरह धूल में लोटना चाहता है। पालने पर भी पिंजड़े में लकड़ी का बुरादा बालू या धूल रखना इसके सुख की बात हो सकती है।

सारंग पक्षी के निम्न भेदों की पहचान नीचे दी है :—

भारत महा सारंग या धर्म चिड़िया एक गज से लम्बी होती है। कपोलों के अनुरूप गहरे रंग की या चितकबरी टोपी होती है।

योरोपीय महासारंग इतना ही बड़ा होता है किन्तु सिर की टोपी सादे हल्के खाकी रंग की होती है। ऐसा रंग किसी अन्य भारतीय सारंग पक्षी में नहीं होता।

पश्चिमोत्तर सारंग या तिलूर पक्षी सवा दो फीट लम्बा होता है। नर और मादा दोनों में ही वक्षस्थल का रंग खाकी तथा गले का रंग काला तथा श्वेत कंठेयुक्त होता है।

तृण मयूर या चरट पक्षी इसी आकार का होता है। नर पक्षी रञ्जित रूप धारण करने पर काला वक्षस्थल तथा गले में काला कण्ठायुक्त होता है, रंग उतर जाने पर वक्ष तथा गले का रङ्ग चित्तीदार धूमिल पीला रखता है। मादा का रङ्ग इस रूप का सदा ही रहता है।

लघु तृण मयूर या छोटा चरट पक्षी और लघु सारङ्ग या छोटा तीतर पक्षी आकार में बड़े तीतर समान होते हैं। लघु तृण मयूर के पङ्ख के बाह्य खण्ड के परों में काली तथा धूमिल पीले रग की पतली आड़ी पट्टियाँ होती हैं। लघु सारंग में वे पट्टियाँ अधिक चौड़े रूप की किन्तु काले तथा धूमिल पीले रंग की ही होती है।

आकार की दृष्टि से पक्षियों का पारस्परिक सम्बन्ध ज्ञात करना संभव नहीं है। योरोपीय महासारंग तथा लघु सारंग के आकारों में भेद होने

पर भी उन्हें एक दूसरे की निकट जाति का पाया जाता है। भारत महा-सारंग तथा पश्चिमोत्तर सारंग उनसे पृथक होते हैं।

पाश्चात्य महासारङ्ग

नाम—देवदाग (चित्राल)

महासारङ्ग भारी भरकम पत्ती है। नर की लम्बाई लगभग ३½ फुट तथा तौल बाईस सेर तक होता है। उड़ाकू पत्तियों में यह सब से भारी पत्ती है। मादा की लम्बाई २½ फीट होती है। इस पत्ती का ऊपरी तल बलुहे रङ्ग का होता है जिस पर काली स्फुट पट्टियों की भरमार होती है। उड़ान के समय श्वेत भाग अधिक दृश्य होता है। यह शनैः शनैः किन्तु दृढ़तापूर्वक पङ्खों की फटफटाहट के साथ सीधा उड़ता है। यह छोटे या मझोले झुंडों में रहकर आहार ढूँढ़ता है। खुले मैदानों में बोई फसल या जङ्गली पौधे, घास-पात आदि खाता है। यह शाकाहारी वृत्ति का होता है किन्तु कीड़े-मकोड़े, केचुये तथा मकड़े भी खाता है। यह बड़े ही लज्जालु स्वभाव का पत्ती है। यह गले से कुछ शब्द भी करता है।

इस पत्ती का सन्तानोत्पादन-क्षेत्र बहुत सीमित स्थानों में ही है। आइ-बेरियन प्रायःद्वीप (स्पेन, पुर्तगाल) के दक्षिण पश्चिम भाग में जिब्राल्टर के मुहाने से उत्तरी अफ्रिका के समीपवर्ती खण्ड तक के कुछ भाग में यह अंडे देता है। एक दूसरा क्षेत्र पूर्वी जर्मनी तथा पोलैंड में है। तीसरा क्षेत्र हंगारी से लेकर दक्षिण में बालकन तथा पूर्व में रूमानिया तथा उक्रायन (योरोपीय रूस) तक के भाग में है। यह तीसरा क्षेत्र किरगिज के स्टेपी मैदानों से होकर एशियाई रूस के दक्षिण पश्चिम तक फैला हैं। चौथा सन्तानोत्पादन क्षेत्र एशियाई कोचक (माइनर) तथा उसके निकटवर्ती स्थानों में है।

लघु सारङ्ग

नाम—छोटा तीतर, ओबारा (पञ्जाब)

लघु सारङ्ग को छोटा तीतर भी नाम दिया जाता है। इसकी लम्बाई लगभग १७ इञ्च होती है। कपोलों का रङ्ग बलुहा तथा उदर का श्वेत होता है। नर पक्षी का रङ्ग ग्रीष्म में सिर तथा गर्दन पर नीलापनयुक्त श्वेत तथा काला होता है। यह सीधी उड़ान नहीं करता। यह खड़खड़ा कर आकाश में उठता है तथा महासारंग की अपेक्षा अधिक वेग से उड़ता है। इसका अधोतल उड़ान के समय अधिक श्वेत दिखाई पड़ता है। यह मझोले या बड़े झुण्डों में चारा चुगता रहता है। खुले भाग के खेतों में विशेषतया मूल तथा दाने खाता है। यह कीड़े-मकोड़े, केचुए, घोंघे, मेढक तथा क्षुद्र दुग्धपायी जन्तु भी खा जाता है। बड़ा ही लज्जालु तथा चपल होता है। भूमि पर तेज दौड़ सकता है। शब्द भी करता है।

लघु सारंग की दो उपजातियाँ है। पश्चिम उपजाति फ्रांस, आइ-बेरियन पेनिनसुला, एटलस पर्वत क्षेत्र में सन्तानोत्पादन करती है। पौर्वात्य उपजाति डैन्यूब नदी की घाटी के देशों, बालकन से लेकर युक्रायन किरगिज स्टेपीज प्रदेश से लेकर दक्षिणी पश्चिमी एशियाई रूस तक सन्तोनोत्पादन-क्षेत्र रखती है। सिरिया, फिलस्तीन में भी एशिया कोचक के दक्षिण में इसका एक पृथक् सन्तानोत्पादन-क्षेत्र है। इस प्रकार महासारंग के ही सन्तानोत्पादन क्षेत्रों में इसे भी अण्डे देता देखा जाता है। महासारङ्ग प्रवास करने की वृत्ति नहीं रखता। उसके विपरीत लघुसारङ्ग प्रवासप्रिय है। दोनों उपजातियों के पक्षी अपने सन्तानोत्पादन-क्षेत्र की दक्षिणी सीमा के दक्षिण भागों में शीत ऋतु में प्रवास करने चले जाते हैं।

भारत महासारङ्ग

स्था० नाम—हिन्दी—सोहूँ, गुघुंभरे, हुकना, धर्म चिड़ियाँ (मिर्जापुर) भेरार (सागर) सेरायलू (नर्मदा), गुराइन (हरियाना) टुगदर (पञ्जाब), घोरार (काठियावाड़), गुरहना (सिंध) मरडोंक, मलढोंक, काराढ़ोंक, करलूंक (दक्षिण),

भारत महासारङ्ग या धर्म पक्षी योरोपीय महासारङ्ग से कुछ लम्बा किन्तु हल्के भार का होता है। इसकी चोंच टिट्टिभ सरीखी बड़ी होती है। पैर लम्बे होते हैं। पङ्ख भी विशाल और चौड़े होते हैं। परन्तु नर आकार में विशेष बड़ा होता है। दोनों में एक छोटी कलँगी होती है तथा गर्दन पर लम्बे पर होते हैं।

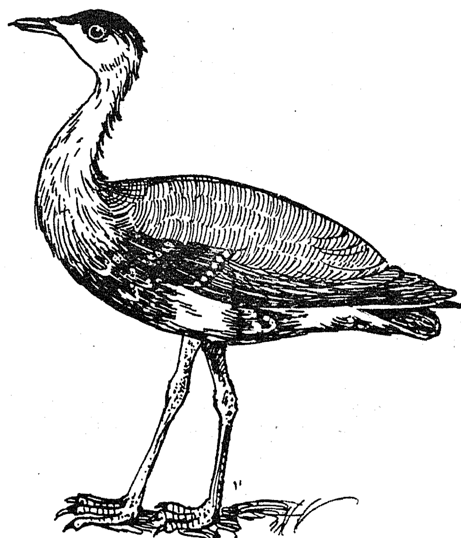
नर में सिर पर काली टोपी तथा गर्दन पर काली पट्टी होती है। शरीर का अधोभाग श्वेत होता है। पट्टी को छोड़कर गर्दन का रङ्ग भी श्वेत होता है। शरीर का ऊपरी तल भूरा होता है, जिसमें काले तथा हल्के पीले रंग की पुट दी होती है। पङ्ख का मुख्य खण्ड गहरा भूरा, गौण खण्ड धूसर तथा पङ्ख के अनेक परों तथा पूँछ के परों के सिर श्वेत होते हैं।

मादा में गर्दन पर काले रंग की पुट होती है। शिशु पक्षी में भी ऐसा रंग होता है। वक्षस्थल की काली पट्टी अधूरी होती है। नवजात शिशु में टोपी तथा पीठ पर हल्के पीले रंग का चित्रण होता है।

भारत महासारङ्ग की चोंच गहरे रंग की, आँखें तथा पैर धूमिल रंग के छींटेयुक्त पीले रंग के होते हैं। नर की लम्बाई चार फुट तक होती है। बन्द पङ्ख २७ इञ्च लम्बे होते हैं। मुख्य पाद की लम्बाई आठ इञ्च तथा चोंच की साढ़े चार इञ्च होती है। दुम लगभग एक फुट लम्बी होती है। भार में यह पक्षी बीस सेर होता होगा। मादा की लम्बाई एक

गज से कुछ अधिक होती है। अन्य अंगों का आकार इसी अनुपात में होता है। उसका भार दस या पाँच सेर ही हो सकता है।

भारत महासारङ्ग शुद्ध भारतीय पत्ती है। किन्तु हमारे देश या



भारत महासारंग

निकटवर्ती भूभागों में भी बर्मा, सीलोन बिहार उड़ीसा, बंगाल तथा मलाबार तट पर नहीं पाया जाता।

भारत महासारंग का निवास मैदानी भागों में शुष्क खंड में होता है। पेड़-पौधों के आच्छादन की चाह इसमें नहीं होती किन्तु कभी-कभी खेतों की हरियाली या घास-पात बढ़े स्थानों में भी आश्रय लेता है। यह झुण्ड में नहीं रहता। एकांकी ही या दो तीन पत्ती साथ पाये जाते हैं। यह थोड़ी ऊँचाई पर ही उड़ता है। गिद्ध की भाँति भारीपन से धीरे-धीरे ही उड़ता है। फिर भी इस पत्ती को उड़ने के लिए हवा में ऊपर उठ

सकने के लिए भूमि पर दौड़ नहीं लगानी पड़ती। यह तुरन्त हवा में उठ जाता है। कुछ विद्वानों का विश्वास है कि इसे दो-तीन बार उड़ा कर थकाकर पकड़ा जा सकता है।

भारत महासारंग जन्तुभक्षक पक्षी है। यह बड़े कीड़े-मकोड़े, छोटे सरीसृप, साँप तक को खा जाता है। किन्तु इस पर भी मादा तथा शिशु महासारंग का मांस शिकारी रुचिकर पाते हैं। यह पक्षी दुर्लभ होता जा रहा है। एक ऋतु में एक या दो अंडे ही यह दे सकता है। उनका आकार बहुत बड़ा होता है। लगभग तीन इञ्च तक लम्बाई होती है। मार्च से अक्तूबर तक अंडे दिये जाने का समय है। सन्तानोत्पादन ऋतु में नर पक्षी अपनी पूँछ फैलाकर तथा गर्दन फुलाकर मादा को आकर्षित करने के खेल करता है। भौंकने या रँभाने-सा शब्द भी करता है। यह पक्षी एक पत्नीवाद की वृत्ति नहीं रखता।

पश्चिमोत्तर सारंग

नाम—तिलूर (पंजाब), तालूर (सिन्धी), होबारा (पंजाब)

पश्चिमोत्तर सारङ्ग या तिलूर पक्षी की रचना भारत महासारङ्ग सदृश ही होती है। टिट्टिभ सरीखा चंचु, तथा विशाल पङ्खों और पुच्छ युक्त होता है। शरीर हल्के रूप का ही होता है। नर पक्षी मादा से थोड़ा ही बड़ा होता है किन्तु रङ्ग में नर और मादा समान होते हैं। बारहों मास उनमें कलङ्गी तथा कंठा पाया जाता है।

इसके शरीर के ऊपरी तल का रङ्ग धूमिल बलुहा भूरा तथा काले तथा हल्के पीले रङ्ग की पुट युक्त होता है।

चोटी तथा कंठे का रंग काला तथा श्वेत होता है। पङ्ख के पर भी श्वेत और काले होते हैं। वक्षस्थल भूरा होता है। दुम पर उसी रङ्ग की स्फुट आड़ी पट्टियाँ होती हैं। अधो तथा पार्श्व भाग श्वेत होते हैं। चोंच

का रङ्ग ऊपरी भाग में धूमिल तथा नीचे हल्का पीला होता है। आँखें पीले तथा गुल्फ तथा पंजे धूमिल पीले होते हैं।

नर की लम्बाई २६ इञ्च होती है। पंख की लम्बाई पन्द्रह इञ्च, दुम की नौ इञ्च, मुख्यपाद की चार इञ्च तथा चोंच की लम्बाई सवा दो इञ्च होती है। मादा इससे तनिक ही छोटी होती है। पङ्ख तथा दुम की लंबाई एक इञ्च ही छोटी होती है।

पश्चिमोत्तर सारङ्ग पक्षी इतने रङ्गीन रूप को धारण करने पर भी देशी पक्षी नहीं है। यह हमारे देश में प्रवासी पक्षी है। यह लगभग बलुहे मैदानी भाग में रहता है जो लगभग रेगिस्तान-सा ही बना हो। यह उत्तर पश्चिम भाग तक ही पहुँचता है। शरद ऋतु में इसके प्रवास के स्थल पञ्जाब, सिंध, राजपूताना, अरावली पर्वत के उत्तर के भाग, कच्छ और गुजरात हैं। यह बात दूसरी है कि भूले-भटके अन्यत्र भी कोई पक्षी दिखायी पड़ जाय, अफगानिस्तान तथा ईरान में यह अंडे देता है। इसलिए सम्भव है हमारे देश में भी सन्तानोत्पादन करता हो। पश्चिम में मेसोपोटामिया तक इसका निवास-क्षेत्र है। इक्का-दुक्का इङ्गलैंड तक भी पहुँचता मिल जाता है।

यह पक्षी शाकाहारी है और सारंगों में इसी को कृषि का शत्रु कह सकते हैं। सारंगों में वही सबसे अधिक वनस्पतिभोजी है।

पश्चिमोत्तर सारंग मरुभूमि के वातावरण के अनुरूप ही शरीर का बलुहा रंग रखता है। अतएव इसे मरुस्थल के ही रंग के शरीर के कारण दूर से देख सकना कठिन है। यह विचित्र रक्षा विधि भी रखता है। जब इस पर श्येनक पक्षी प्रहार करता है तो यह अपने शरीर से एक प्रकार का रस निःसृत कर उसके ऊपर छिड़क देता है। इससे श्येनक भाग खड़ा होता है और इसकी प्राण-रक्षा हो जाती है।

तृणमयूर

नाम—चरस, चर्ग, चरह

तृणमयूर तथा लघु तृणमयूर का रंग-रूप कुछ मिलता-सा है। अन्य सभी सारंग पक्षियों से इनमें यह विभिन्नता होती है कि गर्दन और पैर का आकार विशेष लम्बा होता है। इस कारण इनका आकार शुतुर्मर्ग सरीखा बन गया होता है। इनकी चोंच पंडुक या टिट्टिभ समान होती है। नर का आकार मादा से छोटा होता है तथा ऋतु-परिवर्तन पर रंग का विशेष अन्तर पाया जाता है। ये दोनों भारतीय पक्षी हैं।

नर तृणमयूर सन्तानोत्पादन ऋतु में लम्बी कलँगी युक्त होता है तथा गर्दन से लेकर वक्षस्थल तक अग्र भाग में लम्बे परों से आच्छादित होता है। शरीर का रङ्ग काला होता है। केवल पङ्ख अधिकांशतः श्वेत होता है। पीठ तथा दुम पर हल्के पीले रङ्ग की पुट दी होती है। कुछ पक्षी एक बार यह रङ्ग-रूप पाकर पुनः परिवर्तित नहीं करते किन्तु अन्य पक्षी रङ्ग बदल देते हैं। नर पक्षी को रङ्ग बदलने पर तथा मादा को बारहों मास बलुहे हल्के पीले तथा काले रङ्ग के सूक्ष्मता मिश्रित छींटों युक्त पाया जाता है। अन्य रंगों का सर्वथा अभाव होने से ऐसे रूप में पक्षी को अन्य सारंगों से पृथक पहचाना जा सकता है। केवल लघु सारंग से रंग में भ्रम हो सकता है, परन्तु वह बहुत ही छोटे आकार का होता है।

तृणमयूर की चोंच ऊपरी खण्ड में गहरे रंग की तथा निचले खंड में पीलेपन रंग की होती है। पैर का रंग धूमिल मटमैला पीला होता है। आँखें पीली होती हैं, किन्तु नर की आँखें प्रायः भूरी होती हैं।

नर की लम्बाई २६ इञ्च होती है। पङ्ख की लम्बाई तेरह इञ्च, चोंच की ढाई इञ्च तथा मुख्यपाद की छः इञ्च होती है। मादा लम्बी होती है। पङ्ख की लम्बाई पन्द्रह इञ्च तक होती है। तृणमयूर शुद्ध

भारतीय पक्षी है। यह भारत में ही पाया जाता है। यह हिमालय तथा गंगा के मध्य के भूभाग में पाया जाता है। आसाम में भी इसका प्रसार है। हिमालय की तराई के जंगलों में यह अपना निवास स्थान रखता है। यह बारहमासी पक्षी है। जमुना की घाटी तक भी इसे भूले-भटके पहुँचा पाया जाता है।

तृण मयूर का नाम सार्थक नहीं कहा जा सकता। क्योंकि यह मिश्रित भोजी पक्षी है। वनस्पतियों तथा कीड़े-मकोड़े, सरीसृप दोनों का आहार करता है। शिकारी इसके मांस को अत्यन्त रुचिकर समझते हैं। जून जुलाई में यह अण्डे देता है। दो अण्डे साथ दिये जाते हैं जो छिपा कर रक्खे होते हैं, परन्तु कोई घोंसला नहीं होता। यह दृढ़तापूर्वक किन्तु मन्द गति से ही उड़ता है। उड़ते समय ध्वनि भी करता है। चिक चिक की पुकार लगाता है। अधिक नहीं उड़ता। दौड़ना या खड़े रहना पसन्द करता है।

लघु तृणमयूर

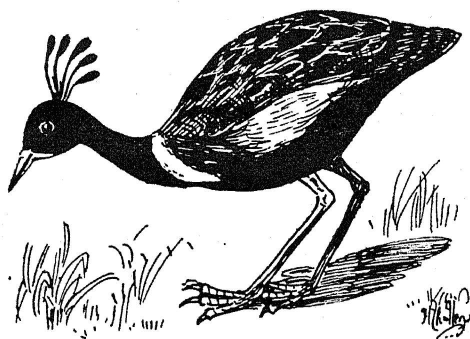
नाम—लिख, छोटा चरट, बरसाती या काला (हिन्दी) चरत,
चुल्ला चरस (दक्षिण), चीनी मोर (बेलगाँव)

लघु तृणमयूर या छोटा चरट सबसे छोटे आकार का सारंग पक्षी है। इसके पैर तथा गर्दन लम्बे होते हैं। पङ्ख छोटा होता है। अन्यथा रंग-रूप में यह बड़े तृणमयूर सरीखा ही होता है।

सन्तानोत्पादन ऋतु में नर पक्षी में कलँगी तथा गर्दन पर परों की झालर नहीं होती किन्तु कान के पीछे से फीते की भाँति परों की तीन लटें निकली होती हैं जो सिरों पर चौड़ी होती हैं। इन आभूषणों का रंग काला होता है जो सिर, गर्दन तथा अधोभाग के काले रंग के समान ही होता है। केवल गले तथा गर्दन के नीचे के खण्ड का रंग श्वेत होता है। पीठ का रंग हल्के पीले तथा काले रंग की छींटों के बारीक

मिश्रण समान होता है। दुम भी इसी प्रकार की-सी होती है परन्तु कुछ धूमिल होती है तथा स्पष्ट रूप की काली आड़ी पट्टियाँ होती हैं। प्रत्येक पङ्ख पर श्वेत धब्बा होता है। मुख्य पङ्ख भाग के पर बहुत पतली नोक-सी बना लिये होते हैं मानों वैसे रूप में विशेष रूप से गढ़े गए हों। उनमें हल्के पीले तथा गहरे भूरे रंग की स्फुट पट्टियाँ आच्छादित होती हैं। ऊपर से सुन्दर गुलाबी तथा हरे रंग का पानी-सा फेरा होता है। नए निकले परों में यह रंग भव्य होता है।

मादा का रंग हल्के पीले तथा गहरे भूरे रंग के मिश्रित छींटोंयुक्त होता है। शरद ऋतु में नर पक्षी का रंग मादा समान होता है परन्तु पङ्ख पर श्वेत धब्बा सदा ही रखता है। नर का आकार मादा से छोटा



लघुतृण मयूर

होता है। नर की लम्बाई डेढ़ फुट होती है। पङ्ख की लम्बाई आठ इञ्च, मुख्यपाद (गुल्फ) की साढ़े तीन इञ्च तथा चोंच की दो इञ्च होती है। मादा की लम्बाई दो इञ्च अधिक होती है।

लघु तृणमयूर पक्षी तृणमयूर की भाँति भारतीय पक्षी है परन्तु इसका अधिक व्यापक विस्तार पाया जाता है। यह अधिक पर्यटक है। दक्षिण भारत तक पाया जाता है। प्रायः इसका सन्तानोत्पादन-क्षेत्र उत्तर

भारत है तथा प्रवास-क्षेत्र दक्षिण भारत है। बंगाल की खाड़ी के पूर्व यह नहीं जाता। अपवाद स्वरूप अराकान में यह पाया गया था।

इसका आहार अधिकांशतः कीट है। यह खेतों और औसत ऊँचाई की घासों के बीच रहता है। सन्तानोत्पादन ऋतु निवास स्थान के अनुकूल होती है। उत्तर भारत में सन्तानोत्पादन करने वाला लघु तृण मयूर सितम्बर अक्टूबर में अण्डे देता है, परन्तु दक्षिण भारत में निवास करने वाला तृणमयूर अप्रैल मई में अण्डे देता है।

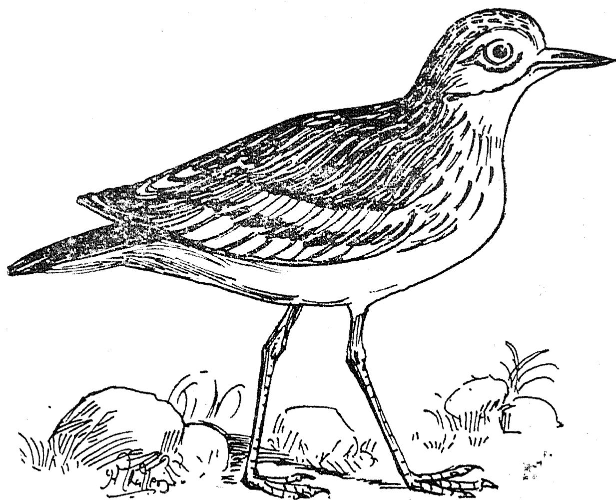
—: ० :—

पाणविक वंश

भारत पाणविक

स्था० नाम—करवानक, बरसीरी (हि०), खरमा (बंग०)

भारत पाणविक पत्ती के शरीर का ऊपरी तल धूमिल भूरा तथा गहरे रंग की रेखाओंयुक्त होता है। पङ्ख तथा पूँछ के पतत्र (पर) काले तथा श्वेत रंग से स्पष्ट चिन्हित होते हैं। पङ्ख बन्द होने पर वे छिपे रहते



भारत पाणविक

हैं। किन्तु उड़ान या पङ्ख उठाकर भागने के समय स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं। मरुप्रदेशीय पत्ती सबसे धूमिल रंग के होते हैं। चोंच का रंग पीला,

तथा छोर पर काला होता है। विशाल नेत्र सुनहले पीले रंग के होते हैं। पलक तथा चरण भी पीले होते हैं।

इस पक्षी के शरीर की लम्बाई सोलह इञ्च, पंख की लम्बाई नौ इञ्च, मुख्यपाद (गुल्फ) की तीन इञ्च तथा चोंच की लम्बाई दो इञ्च होती है।

भारत पाणविक मध्य एशिया से लेकर दक्षिणी एशिया तक पाया जाता है। भारत में भी मिलता है। यह हमारे देश का बारहमासी पक्षी है। योरप में यह प्रवासी वृत्ति का है। उत्तर भागों में जन्म धारण कर दक्षिण भूभागों में प्रवास कर जाता है। यह सूखी भूमि में रहने का अभ्यस्त है। भूमि पर पैर समेटकर बैठ जाता है। गर्दन आगे की ओर बढ़ी रहती है, इससे वह छिपा रह सकता है।

भारत में फरवरी से लेकर अगस्त तक यह पक्षी अण्डे देता है। दो अण्डे एक बार उत्पन्न होते हैं। अण्डों का रंग लाल या हल्का हरा होता है जिसमें काले या नीलारुण (बैंजनी) धब्बे होते हैं। अण्डे की लम्बाई दो इञ्च होती है। अल्पवय पक्षी का घुटना स्थूल तथा फूला होता है।

दीर्घशिर पाणविक

नाम—बड़ा करवानच (हि०) गंग तिलई (वङ्ग)

दीर्घशिर पाणविक मुर्गी के बराबर आकार का होता है। उसके सिर तथा आँखों का आकार बड़ा होता है। चोंच भी बड़ी तथा शक्तिशाली होती है। वह बिल्कुल सीधी होती है। शरीर के ऊपरी तल का रङ्ग हल्का भूरा, तथा निचले तल का रङ्ग धीरे-धीरे उतरकर श्वेत बना होता है। पङ्ख तथा पूँछ के पतत्र (पर) काले चिन्ह होते हैं। मुख में दोनों ओर एक-एक गहरे रङ्ग की पट्टी होती है। पङ्ख पर भी गहरे रङ्ग की पट्टी होती है। चोंच का रङ्ग काला होता है जो मूल भाग में धूमिल पीला

होता है। आँखें हल्के पीले रङ्ग की होती हैं। पैरों का रंग भी पीलापन सा होता है।

दीर्घशिर पाणविक के शरीर की लम्बाई बीस इञ्च, पङ्ख की लम्बाई दस इञ्च, मुख्यपाद (गुल्फ) की लम्बाई सवा तीन इञ्च तथा चोंच की लम्बाई सवा तीन इञ्च से कुछ अधिक होती है।

दीर्घशिर पाणविक भारत का पक्षी है। मैदानी भागों में बड़ी नदियों के तटों पर पाया जाता है। सीलोन में समुद्र तट पर भी रहता है। केकड़े तथा घोंघे आदि ही इसके मुख्य आहार हैं। कदाचित् चूहे, मेढक तथा छोटे पक्षी भी यह खा जाता है।

यह पक्षी दो अंडे देता है जिनके लिए घोंसले बनाने की आवश्यकता नहीं होती। फरवरी तथा मई के बीच अंडे देने का समय है। अंडों की लम्बाई दो इञ्च होती है।

कृष्णद्वीप पाणविक

कृष्णद्वीप पाणविक आस्ट्रेलिया का पक्षी है किन्तु ऐंडमन में भी पाये जा सकने से इसे ऐंडमन पाणविक या कृष्णद्वीप पाणविक नाम दिया गया है। यह दीर्घशिर पाणविक से मिलता है, परन्तु आकार में इससे बड़ा होता है। उसकी चोंच निस्सन्देह बड़ी, मोटी होती है तथा सीधी होने के स्थान पर ऊपरी चंचु दल वक्र होता है। शरीर के रङ्ग में तो छोटे-मोटे रूप में यह दीर्घशिर से विभिन्न होता ही है। परन्तु चोंच तो स्पष्टतया विभिन्न होकर विशेष पहचान करा देती है। यह आस्ट्रेलिया के समुद्र तट का निवासी है। ऐंडमन के भी समुद्रतटों पर रहता है। ऐंडमन तथा कोको द्वीप में मार्च तथा अप्रैल में इसके अंडे पाये जाते हैं। वे दीर्घशिर या भारत पाणविक के अंडों से भी बड़े होते हैं। उनकी लम्बाई ढाई इञ्च होती है।

———

शार्कर वंश

पीताभ क्षिप्रचला

पीताभ क्षिप्रचला का चंचु पतला तथा थोड़ा सा नीचे की ओर मुड़ा होता है। पैर लम्बे होते हैं। शरीर का रंग रक्त वर्ण होता है जो निम्न तल तक धुँधला हो जाता है। सिर का पिछला भाग धूमिल धूसर होता है। भौंहें श्वेत होती हैं। सिर के चारों ओर काली पट्टी होती है। पङ्ख के पतत्र तथा किनारी का रङ्ग काला होता है। पूँछ की छोर पर श्वेत रङ्ग के निकट काली पट्टी होती है। अल्पवय पक्षियों में सर्वत्र काली स्फुट पट्टियाँ होती हैं। चोंच का रङ्ग काला, आँखों का रंग भूरा तथा पैरों का रंग श्वेत होता है।

पीताभ क्षिप्रचला के शरीर की लम्बाई दस इञ्च, पङ्ख की लम्बाई साढ़े छः इञ्च, मुख्यपाद (गुल्फ) की लम्बाई सवा दो इञ्च तथा चोंच की लम्बाई डेढ़ इञ्च होती है।

यह पक्षी पाश्चात्य मरु प्रदेश का रहने वाला है। दक्षिणी योरप के शुष्क भूभागों से लेकर पश्चिमोत्तर भारत तक पाया जाता है।

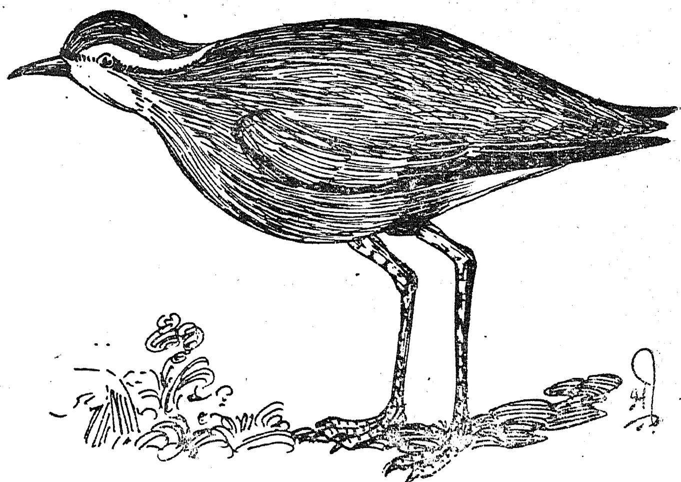
भारत क्षिप्रचला

नाम—नुकरी (हि॰)

भारत क्षिप्रचला पीताभ क्षिप्रचला से बहुत कुछ मिलता-जुलता प्रतीत होता है। परन्तु आकार में निस्सन्देह ही उससे छोटा, रंग में गहरा होता है। रक्त वर्ण की जगह इसका रंग भूरा होता है। सिर तथा वक्षस्थल का रंग बादामी होता है। उदर पर एक काली पट्टी होती है। ऊपरी पूँछ तल श्वेत होता है। कुक्षीय पतत्र (पङ्ख के मूल के नीचे के पर) भूरे

होते हैं। पीताभ क्षिप्रचला के कुक्षीय पतत्र काले होते हैं। भारत क्षिप्रचला के सिर पर धूसर रंग नहीं होता। काले तथा श्वेत रंग की पट्टियाँ ही होती हैं। अल्पायु पक्षी के शरीर पर काले रंग की हल्की पुट होती है।

भारत क्षिप्रचला शुद्ध भारतीय पक्षी है। यह दक्षिण भारत के शुष्क



भारत क्षिप्रचला

भागों में रहता है। मार्च से जुलाई तक इसके अण्डे मिलते हैं। उनकी लम्बाई एक इञ्च होती है। बलुहे रंग पर काले धब्बे होते हैं।

दक्षिण क्षिप्रचला

दक्षिण क्षिप्रचला की चोंच सीधी होती है। आँखें बड़ी होती हैं। शरीर का रंग अधिक बहुरञ्जित होता है। ऊपरी तल भूरा होता है। शीर्ष पर लाल रेखा होती है तथा चारों ओर श्वेत पट्टी होती है। पूँछ

के ऊपरी तल तथा पङ्ख पर एक आड़ी पट्टी का रंग श्वेत होता है। पङ्ख तथा पूँछ के वृंतीय पतत्र (दण्ड वाले पर) काले तथा श्वेत रंग से चिन्हित होते हैं। कण्ठ का रंग पीताभ होता है। वह बादामी रंग में जा मिलता है। उसके नीचे श्वेत पट्टी पर काली किनारी लगी होती है। इसके बाद भूरे रंग का चौड़ा भाग होता है। उसके भी बाद काली तथा श्वेत पट्टी होती है। इन सबके नीचे पीलापन युक्त श्वेत रंग होता है। चोंच का रंग मूल भाग में पीला तथा सिरे पर काला होता है। आँखें गहरे रंग की होती हैं। पैरों का रंग पीलापन युक्त श्वेत होता है।

दक्षिण क्षिप्रचला के शरीर की लम्बाई दस इञ्च, पङ्ख की लम्बाई साढ़े छः इञ्च, मुख्यपाद (गुल्फ) भी लम्बाई पौने तीन इञ्च तथा चोंच की लम्बाई एक इञ्च होती है।

दक्षिण क्षिप्रचला बहुत कम मिलता है। यह झाड़ झङ्खाड़ के भागों तथा पतले जंगलों में पाया जाता है। अफ्रीका में इसकी जातियाँ अनेक पाई जाती है। कदाचित् वहाँ ही इसका मूल स्थान रहा हो। वहाँ से किसी युग में यहाँ आकर अब थोड़ी संख्या में ही रह गया हो।

वृहत् भारत हापुत्री

वृहत् भारत हापुत्री के शरीर का ऊपरी तल भूरा तथा ऊपर का रङ्ग श्वेत होता है। पूँछ दो पतत्रों की तथा छोटी, पर काली होती है। पङ्ख की किनारी बादामी होती है। कण्ठ पीताभ वर्ण होता है जिस पर काली पट्टी की किनारी होती है। अल्पायु पक्षी में यह किनारी नहीं होती। कण्ठ में गहरे रङ्ग की रेखाएँ होती हैं। ऊपरी तल का रङ्ग रक्त वर्ण के धब्बों युक्त होता है।

इस पक्षी के शरीर की लम्बाई साढ़े नौ इञ्च, पङ्ख की लम्बाई सात इञ्च, मुख्य पाद की लम्बाई एक इञ्च से कुछ अधिक तथा चोंच की

लम्बाई एक इञ्च होती है। पूँछ की लम्बाई तीन इञ्च होती है। उसमें छोर से एक इञ्च पहले दो फाँके फूटे होते हैं।

भारत हापुत्री भारत के अतिरिक्त उत्तर में साइबेरिया तथा दक्षिण में आस्ट्रेलिया तक पाया जाता है। यह पक्षी बारहमासी भी है और प्रवासी भी। दक्षिणी बङ्गाल तथा सिन्ध में यह अण्डे देता है। जल के निकट बालू में गड्ढे बनाकर अण्डे दिये जाते हैं। अण्डों की लम्बाई एक इञ्च होती है।

लघु भारत हापुत्री

लघु भारत हापुत्री छोटा किन्तु अत्यन्त सुन्दर पक्षी है। इसकी पूँछ में फाँके नहीं होते। शरीर का रङ्ग भी भारत हापुत्री से विभिन्न होता है। ऊपरी तल हल्का भूरा तथा उदर और पूँछ का मूल भाग श्वेत होता है। पूँछ का अन्तिम भाग तथा पङ्ख की किनारी का रङ्ग काला होता है।

लघु भारत हापुत्री के शरीर की लम्बाई साढ़े छः इञ्च, पङ्ख की लम्बाई छः इञ्च, मुख्यपाद (गुल्फ) तथा चोंच की लम्बाई लगभग एक इञ्च होती है।

लघु भारत हापुत्री भारत भर में सर्वत्र पाया जाता है। ऐंडमन, निकोबार द्वीपों में नहीं होता है। नदियों की रेतीली तटीय भूमि पर मार्च से मई तक अण्डे देता है जिनकी एक इञ्च लम्बाई होती है। दो से चार तक अण्डे दिये जाते हैं। उनका रङ्ग बलुहा, हरापन युक्त भूरा या लाल होता है जिस पर कुछ हल्के धब्बे होते हैं।

कर्कटाश वंश

कर्कटाश

कर्कटाश कौए के बराबर आकार का पक्षी है । उसी अनुपात में लंबी किन्तु सीधी चोंच होती है । मुख का छिद्र नेत्र के सम्मुख नीचे भाग तक पहुँचता है । पैर लम्बे होते हैं उस में चार पादांगुलियाँ होती हैं । पिछली पादांगुलि भी होती है जो पंकचारी पक्षियों में विशेष विकसित होती है । सामने की पदांगुलियाँ अर्द्ध अँगुलिजाल युक्त होती हैं । पंख औसत रूप के लंबे होते हैं । सिर बड़ा होता है किन्तु गर्दन छोटी होती है ।

कर्कटाश के शरीर का रंग अधिकांशतः श्वेत होता है किन्तु वयस्क पक्षियों में पीठ के बीच में पीछे की ओर एक लम्बा काला धब्बा रहता है । प्रत्येक पंख पर भी एक काला धब्बा होता है । मुख्य पंख के पतत्रों का बाह्य जाल भी काला होता है । अल्पवय पक्षियों में ऊपरी तल धूसर होता है । सिर के ऊपर तथा गर्दन के पिछले भाग में नीचे की ओर काली रेखाएँ होती है । चोंच का रंग काला, आँखों का रंग गहरा भूरा तथा पैरों का रंग धूसर होता है ।

कर्कटाश के शरीर की लंबाई सोलह इंच, पंख की लंबाई आठ इंच, मुख्यपाद (गुल्फ) की लबाई चार इंच तथा चोंच की लगभग एक इंच होती है ।

कर्कटाश खारे पानी का पक्षी है । हर समुद्र तटों तथा खारे पानी की झीलों में झुंड में पाया जाता है । यह फारस की खाड़ी और लाल सागर से मलाया प्रायद्वीप तक पाया जाता है । अंडमनद्वीप में भी यह मिलता है । यह भूमि पर दौड़ता तथा आकाश में उड़ता भी है । अधिकांशतः केकड़े

का ही आहार बनाता है। अपनी भारी चोंच से उसे चीरकर खा जाता है। उसके भयानक चंगुल को भी समूचा निकल जाता है।

यह ऊँचे समुद्र तटों पर नीचे की ओर टेढ़ी बिल बना कर उसमें एक अंडा देता है। यह ढाई इंच लंबा होता है जो इसके शरीर के आकार के अनुपात में बहुत बड़ा होता है। अंडा देने का समय मई ज्ञात होता है।

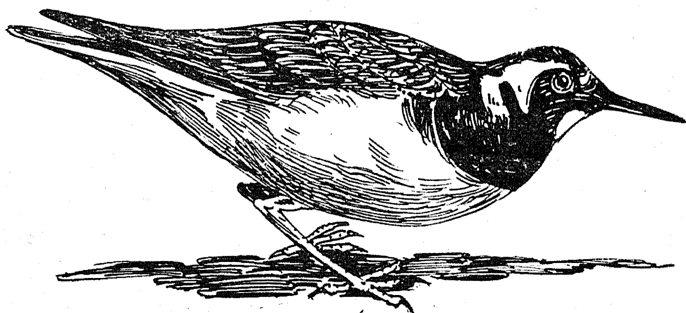
—: ० :—

टिट्टिभ वंश

अश्मान्वेषी (रेखितशीर्ष बालुक)

अश्मान्वेषी छोटे आकार का पुष्टांगीय पक्षी है इसकी चोंच मझोले आकार की तथा सीधी होती है। कबूतर या टिट्टिभों की भाँति सिर की ओर उभरी नहीं होती। पैर छोटे होते हैं, कबूतर के पैरों के अनुपात में बड़े नहीं होते। सामने की पादांगुलियों में अँगुलिजाल या अँगुलियों को जोड़ने वाली झिल्ली का सर्वथा अभाव होता है। पङ्ख लम्बे तथा नुकीले होते हैं।

शीत ऋतु में शरीर का रंग ऊपरी तल में गहरा भूरा होता है उसमें कुछ हल्के रङ्ग के धब्बों का मिश्रण होता है। कण्ठ, कटि प्रदेश,



अश्मान्वेषी

उदर तथा पूँछ के आधार भाग का रङ्ग श्वेत होता है। चोंच काली, आँखें भूरी तथा पैर चमकीले नारङ्गी होते हैं। ग्रीष्म में सिर विशेषतः

श्वेत होता है। गर्दन में कालापन अधिक होता है। पीठ पर काले तथा बादामी रङ्गों की गंगा-जमुनी-सी होती है।

अश्मान्वेषी की लम्बाई साढ़े आठ इञ्च, बन्द पङ्खों की लम्बाई छः इञ्च तथा चोंच और मुख्यपाद (गुल्फ या टखने से पहले जोड़े तक पैर का भाग) की लम्बाई एक इञ्च होती है। यह ध्यान में रखना चाहिए कि चिड़ियों [illegible] की पहली संधि पैर के मध्य भाग में होती है जो हमारे पैरों की एड़ी के पास की संधि टखने या गुल्फ के समान होती है। उस जोड़ से पक्षी अपना पैर पीछे की ओर झुका सकता है। उसके ऊपर पक्षियों का घुटना धड़ के बिल्कुल निकट होता है तथा जंघा रूप का भाग हमारे लिए अदृश्य-सा ही होता है। वह धड़ के अन्दर मांस तथा ऊपरी आवरण के अन्दर छिपा होता है। उस भाग को ही गुल्फ कहा जाता है जो भ्रमवश हमारे पैर के अधोपाद की भाँति प्रतीत होता है; किन्तु यथार्थ में टखने का ही बढ़ा हुआ भाग होता है।

अश्मान्वेषी के सन्तानोत्पादन-स्थल धुर उत्तर प्रदेश हैं। यह शीत ऋतु में हमारे देश में प्रवास करने आता है। यह समुद्र तटों पर ही दिखाई पड़ता है। भारत महासागर के द्वीपों में भी इसे पाया जाता है।

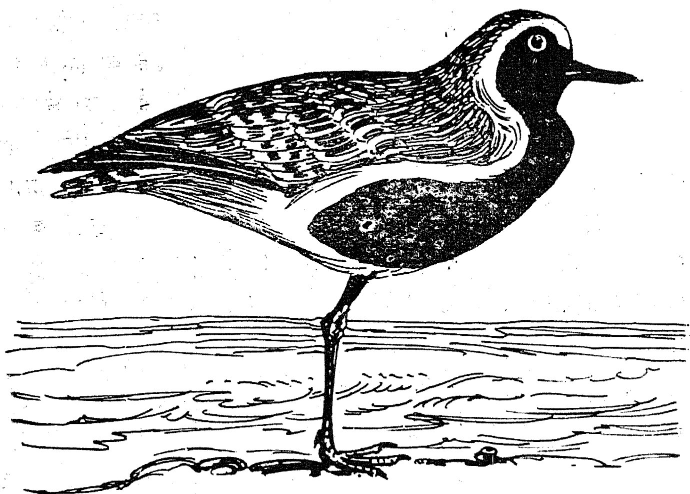
पश्चिमोत्तर धूसर टिट्टिभ

स्था० नाम—बड़ा बातन

पश्चिमोत्तर धूसर टिट्टिभ को रूपहला टिट्टिभ कहना अधिक उचित हो सकता है। यह स्वर्ण टिट्टिभ से यथेष्ट बड़े आकार का होता है। बड़ी चोंच तथा पैर में पिछली पादांगुलि छोटी-सी रहकर भी विशेषता प्रकट करती है। इसके पङ्ख के मूल भाग के नीचे पतत्र (पर) के गुच्छे निकले होते हैं। उनका रंग काला होता है। पङ्ख की श्वेत

किनारी से वे स्पष्ट विभिन्न दिखाई पड़ते हैं। परन्तु स्वर्ण टिट्टिभ में यह पंख मूलीय पतत्र (पर) पङ्ख की किनारी के रंग के ही होते हैं ।

वयस्क पश्चिमोत्तर धूसर टिट्टिभ का ऊतरी तल श्वेत होता है उसका हल्का चितकबरा रंग होता है किन्तु अल्पवय पक्षी में उसका रंग धूमिल



पश्चिमोत्तर धूसर टिट्टिभ

पीला होता है। इस पक्षी की लम्बाई एक फुट, पङ्ख को लम्बाई आठ इञ्च, गुल्फ की लगभग दो इञ्च तथा चोंच की लम्बाई डेढ़ इञ्च होती है।

पश्चिमोत्तर धूसर टिट्टिभ का सन्तानोत्पादन क्षेत्र धुर उत्तर के प्रदेश हैं। परन्तु यह प्रवास कर शीत ऋतु में भारत भर में दिखाई पड़ जाता है। इसकी संख्या प्रवासी रूप में स्वर्ण टिट्टिभ से न्यून ही होती है। यह समुद्र तटों पर विशेष पाया जाता है।

पश्चिम बालु टिट्टिभ

पश्चिम बालु टिट्टिभ का शीत ऋतु में ऊपरी तल भूरा, निम्न तल श्वेत तथा पूर्ण वक्षःस्थल तथा कण्ठ छोड़कर गर्दन का अग्र भाग भूरा होता है। पङ्ख की किनारी भूरे तथा श्वेत रंग की मिश्रित होती है तथा पक्ष मूलीय पतत्र (पङ्ख मूल के नीचे के पर) श्वेत होते हैं। अल्पवय पक्षियों में ऊपरी तल के पतत्रों की किनारी रक्तिम वर्ण की होती है। संतानोत्पादन ऋतु में वक्षस्थल का रंग बादामी तथा उसके पीछे के निम्न तल का रंग कालापन युक्त (कलौंछ) होता है। चोंच का रंग काला तथा पैरों का रंग हल्का हरा होता है।

पश्चिम बालु टिट्टिभ की लम्बाई साढ़े सात इञ्च, पङ्ख की लम्बाई साढ़े पाँच इञ्च, गुल्फ की लम्बाई डेढ़ इञ्च तथा चोंच की लम्बाई लगभग एक इञ्च होती है। इस पक्षी का आकार बृहद् बालु टिट्टिभ सा होता है। किन्तु चोंच अपेक्षाकृत छोटी होती है तथा गर्दन के अग्र भाग और पङ्ख का अधोतल भूरे रंग का होता है जो इसकी विशेष पहचान है।

पश्चिम बालु टिट्टिभ का सन्तानोत्पादन-क्षेत्र कैस्पियन से लेकर मध्य एशिया तक है। शीत ऋतु में साधारणतया अफ्रीका, तथा फारस की खाड़ी में प्रवास कर रहता है। भारत में भी इसके मिलने के कुछ प्रमाण पाये गये हैं।

पूर्वीय बालु टिट्टिभ

पूर्वीय बालु टिट्टिभ को पश्चिम बालु टिट्टिभ का ज्येष्ठ बन्धु कह सकते हैं। इसके पङ्ख की पूर्ण किनारी हल्की भूरी होती है। ग्रीष्म में सिर का पूरा अगला भाग तथा गर्दन श्वेत रंग की हो जाती है। इसके नीचे बादामी रंग होता है जो पीछे की ओर काली पट्टी में जाकर समाप्त होता

है। चोंच का रंग भूरा तथा पैरों का रंग लाल तथा मैले रंग के छींटे युक्त होता है।

इस पक्षी का आकार पश्चिम बालु टिट्टिभ तथा पूर्वी स्वर्ण टिट्टिभ सदृश समझना चाहिए।

यह पूर्वी एशियाई पक्षी है। इसका सन्तानोत्पादन-क्षेत्र उत्तरी चीन तथा मंगोलिया है। यह शीत ऋतु में प्रवास कर मलाया तथा आस्ट्रेलिया तक पहुँचता है। यह ऐंडमन में पाया जा सका है।

श्याव टिट्टिभ

श्याव टिट्टिभ के शरीर का रंग अधिकांश श्वेत होता है भाल, भौंहें, चारों ओर की गर्दन, वक्षस्थल तथा अधिकांश पूँछ तथा उदर श्वेत रंग के होते हैं। ग्रीष्म में नर के शीर्ष का रंग भूरा न होकर मंडूर (मट-मैला लाल) या मोरचे के रंग का होता है। सिर पर कुछ काले धब्बे होते हैं तथा वक्षस्थल के दोनों पार्श्व में भी काले धब्बे होते हैं किन्तु कोई पूर्ण काली पट्टी नहीं होती। पैर तथा चोंच का रंग काला होता है।

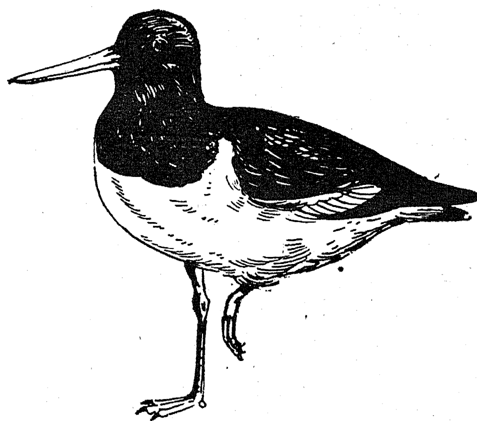
श्याव टिट्टिभ की लम्बाई साढ़े छः इञ्च, पङ्ख की लम्बाई चार इञ्च, गुल्फ की लम्बाई एक इञ्च से कुछ अधिक तथा चोंच की लम्बाई एक इञ्च से कुछ कम होती है।

श्याव टिट्टिभ पुरानी दुनिया के अधिकांश भाग में पाया जाता है। शीत ऋतु में दक्षिण भू-भागों में प्रवास करता है। भारत में यह प्रवासी रूप में अधिक स्थानों पर पाया जाता है। परन्तु सन्तानोत्पादन भी करता है। सीलोन से लेकर करॉंची तक के भूभागों में अण्डे देता पाया जाता है। अंडे की लम्बाई एक इञ्च होती है। उस पर रेखाएँ बनी होती हैं।

शङ्खिनी

स्था० नाम—दरया गजपाँव (हिन्दी)

शंखिनी कबूतर से बड़े आकार का पक्षी है। इसकी लम्बाई सत्रह इञ्च होती है। पैर मझोले आकार का स्थूल होता है जिसमें तीन उँगलियाँ होती हैं किन्तु चोंच उल्लेखनीय होती है। वह लम्बी, सीधी और गहरी किन्तु पतली होती है। उसका सिरा दृढ़ रुखानी-सा होता है। गर्दन छोटी होती है। परों का रंग श्वेत और काला होता है। अधोतल, पङ्खों के आधार स्थल तथा पूँछ के पर-दण्ड में श्वेत रंग होता है।



शंखिनी

चोंच नारंगी, पैर गुलाबी होते हैं। नर और मादा का रंग-रूप समान होता है। शिशु पक्षी के कंठ पर श्वेत पट्टी होती है।

इसके चोंच की लम्बाई तीन इञ्च, बन्द पङ्खों की लम्बाई दस इञ्च और गुल्फ की लम्बाई दो इंच होती है।

शंखिनी समुद्रतटों पर अधिक रहता है। यह एशिया और योरप के सब स्थानों में पाया जाता है। यह शीत ऋतु में भारत में प्रवास करने आता है। इसे उत्तर पश्चिमी समुद्र तट पर देखा जा सकता है। योरोपीय उपजाति का सन्तानोत्पादन-क्षेत्र आइसलैंड, फैरो द्वीप, ब्रिटेन तथा ध्रुव प्रदेश से दक्षिण पुर्तगाल तक पश्चिमी योरप का सम्पूर्ण समुद्रतट है। भूमध्य सागर के उत्तरी तट तथा काला सागर में भी इनका सन्तानोत्पादन-क्षेत्र है। शीत ऋतु में यह अफ्रीका के उष्ण कटिबन्ध तक प्रवास कर जाता है।

शंखिनी का आहार अधिकांशतः शम्बुक तथा समुद्री घोंघा है। उन्हें बड़ी कुशलता से तोड़-फोड़ देता है। यह सीप को भी खोल सकता है। इनके अतिरिक्त घोंघे, केचुए, कीट, शिशु पक्षी तथा अंडे खा जाता है। यह बराबर कुछ शब्द करता रहता है।

यह सङ्घ वृत्ति का पक्षी है, परन्तु सन्तानोत्पादन के समय एकाकी घोंसले बनाता है। तट, बालुका स्थल या घास और कंकड़ों के मध्य घोंसले बना लेता है। उसमें कोई नर्म वस्तु का अस्तर नहीं होता। दो से पाँच अंडे तक एक ऋतु में उत्पन्न करता है।

प्राच्य सर्षपी टिट्टिभ

प्राच्य सर्षपी टिट्टिभ लघु सर्षपी टिट्टिभ से बड़ा, अधिक स्थूल तथा विशेष चमकीले रंगों का होता है। इसके पैर तथा चोंच की लम्बाई तो लघु सर्षपी समान ही होती है किन्तु पङ्ख की लम्बाई पाँच इंच तथा शरीर की लम्बाई (लघु सर्षपी से एक इंच बड़ी) होती है। पैर तथा चंचु-मूल का रंग अधिक चमकीला पीला नारंगी होता है।

प्राच्य सर्षपी के शरीर का रंग लघु सर्षपी समान ही होता है, थोड़ा-बहुत अन्तर होता है। मुख्य पङ्ख के पतत्र (परों) के वृन्त (दण्ड) मूल भाग में भूरे तथा शेष भाग में पूरी लम्बाई भर में श्वेत होते हैं, परन्तु

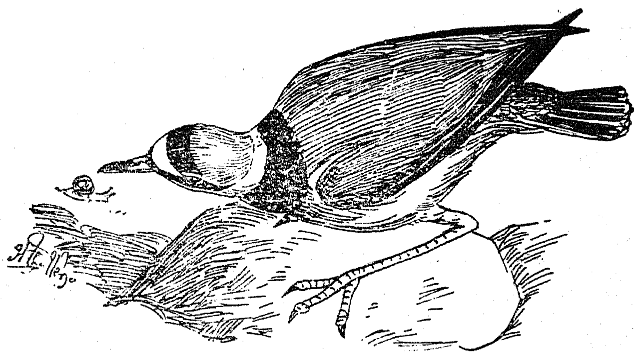
लघु सर्षपी में पूरा पतत्र वृन्त भूरे रंग का ही होता है। अन्तर्भागीय मुख्य पङ्ख पर पतत्र जाल में एक श्वेत खड़ी रेखा होती है। परन्तु लघु सर्षपी में वह पूर्णतया भूरा होता है। गौण पङ्ख तथा बाह्य पुच्छ-पतत्रों में भी श्वेत रंग के अधिक भाग होते हैं।

प्राच्य सर्षपी योरप तथा अफ्रीका में विशेष प्रसारित होता है। यह ऋतु की अनुकूलता के अनुसार ग्रीनलैंड तथा पूर्वीय उत्तर अमेरिका तक पहुँच जाता है। किन्तु एशिया में केवल पाकिस्तान तक ही आता है।

लघु सर्षपी टिट्टिभ

स्था० नाम— जिरिया,

लघु सर्षपी टिट्टिभ छोटे आकार का सुन्दर पक्षी है। यह भारत में बहुत अधिक फैला पाया जाता है। इसका सिर स्पष्ट काले तथा श्वेत रङ्गों युक्त होता है। कण्ठ श्वेत होता है जो कण्ठमाला की भाँति गर्दन



लघु सर्षपी टिटिट्टभ

के चारों ओर रहता है। इस श्वेत कण्ठमाला के नीचे काली कण्ठमाला

होती है। अल्पवय पक्षी में सिर का रङ्ग काला तथा श्वेत होने के स्थान पर रक्त तथा भूरे वर्ण का होता है।

इस पक्षी की चोंच काली होती है जो आधार स्थल पर पीली होती है। पैर का रङ्ग लाल होता है।

लघु सर्षपी टिट्टिभ के शरीर की लम्बाई साढ़े छः इञ्च, पङ्ख की लम्बाई साढ़े चार इञ्च, मुख्यपाद (गुल्फ) की एक इञ्च तथा चोंच की लम्बाई आधी इञ्च होती है।

लघु सर्षपी टिट्टिभ का प्रसार अधिक व्यापक होता है। यह योरप, उत्तरी अफ्रीका तथा एशिया में फैला पाया जाता है। भारत में भी मिलता है। यह प्रायः नदी तटों पर छोटे भुण्डों में रहता है। कुछ पक्षी तो शीत ऋतु में केवल प्रवास करने आते हैं, परन्तु बहुसंख्यक लघु सर्षपी भारत में सन्तानोत्पादन करते हैं, दक्षिण भारत में दिसम्बर से मई तक इनके अण्डे देने का प्रमाण असंदिग्ध रूप में पाया जाता है। इतने छोटे पक्षी होने पर भी इसका अण्डा एक इञ्च लम्बा होता है। उस पर पतली चित्तियाँ होती हैं।

मलयक लघु सर्षपी टिट्टिभ

मलयक लघु सर्षपी टिट्टिभ लघु सर्षपी से भी छोटा ही होता है। इसकी पीठ सिर तथा वक्षस्थल का रङ्ग अधिक काला होता है। पीठ के दोनों ओर एक-एक भूरे लाल रङ्ग का धब्बा होता है। यह उसकी विशेषता है। यह आस्ट्रेलिया का पक्षी है। मलाया भी सन्तानोत्पादन-क्षेत्र होने से मलयक नाम पड़ा है। यह भारत में भी प्रवास करने आता है।

दीर्घचंचु सर्षपी टिट्टिभ

दीर्घचंचु सर्षपी टिट्टिभ लघु सर्षपी के समान होता है, परन्तु दुर्लभ

पक्षी है। इसकी चोंच लगभग पूर्णतः काली, पैर अधिक धूमिल पीले, तथा मुख्य पङ्ख के पतत्र वृन्त (परों के दंड) गहरे रङ्ग के होते हैं। किन्तु आकार में यह प्राच्य सर्षपी से भी बड़ा होता है। इसके शरीर की लम्बाई नौ इञ्च, पङ्ख की लम्बाई साढ़े पाँच इञ्च, मुख्यपाद (गुल्फ) की एक इञ्च तथा चोंच की लम्बाई एक इञ्च होती है।

दीर्घ चंचु सर्षपी पूर्वी एशियाई पक्षी है। यह प्राच्य सर्षपी की अपेक्षा हमारे देश में अधिक पाया जाता है। उत्तरी पूर्वी भारत में नैपाल से लेकर कचार तक पाया जाता है।

काश्मीर लघु बालु टिट्टिभ

शीत ऋतु में काश्मीर लघु बालु टिट्टिभ के शरीर का ऊपरी तल भूरा तथा निचला तल श्वेत होता है। गर्दन के पिछले भाग में श्वेत रङ्ग नहीं होता। वक्षस्थल के आर-पार लगभग पूरी भूरी पट्टी होती है। ग्रीष्म में शीर्ष पर कुछ काले धब्बे होते हैं। गर्दन के पिछले और बगल के भागों तथा वक्षस्थल का रङ्ग काला होता है। चोंच काली होती है तथा पैर का रङ्ग धूसर या हल्का हरा होता है।

लघु बालु टिट्टिभ की दो जातियाँ केवल आकार में भिन्न पाई जाती हैं। छोटी तथा अधिक संख्या में उपलब्ध लघु बालु टिट्टिभ की लम्बाई साढ़े सात इञ्च, पङ्ख की लम्बाई पाँच इञ्च तथा चोंच की लम्बाई पौन इञ्च होती है। यह लघु बालु टिट्टिभ पक्षी होता है। परन्तु उससे बड़ा पक्षी वृहद बालु टिट्टिभ कहलाता है जिसे एक दूसरी जाति मानते हैं। यह लघु बालु टिट्टिभ से एक इञ्च बड़ा होता है। उसकी चोंच एक इञ्च बड़ी होती है। वह अनुपात से यथेष्ट बड़ी दिखाई पड़ती है।

लघु तथा वृहद बालु टिट्टिभ भारत के समुद्र तटों पर शीत ऋतु में प्रवास करते हैं। छोटा बालु टिट्टिभ तिब्बत तथा काश्मीर में अण्डे देता

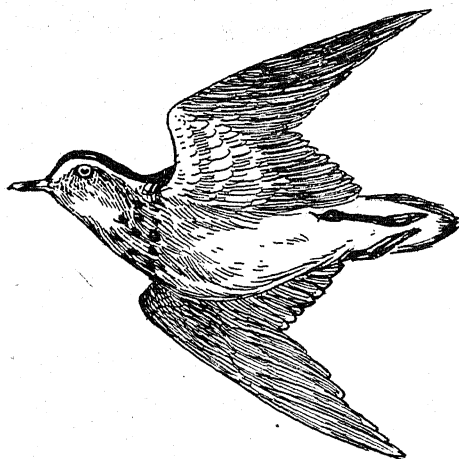
है। मध्य एशिया उसका विस्तृत सन्तानोत्पादन-क्षेत्र है परन्तु वृहद् बालु टिट्टिभ अधिक पूर्वीय भागों तक अपना सन्तानोत्पादन-क्षेत्र रखता है।

प्राच्य स्वर्ण टिट्टिभ

स्था० नाम—छोटा बातन

प्राच्य स्वर्ण टिट्टिभ का ऊपरी तल पीले तथा काले रङ्ग के धब्बों युक्त तथा अधोतल श्वेत होता है। पङ्ख की किनारी धूमिल भूरी होती है। ग्रीष्म ऋतु में अधोतल का रङ्ग काला होता है जो ऊपर के चितकबरे रङ्ग से एक श्वेत पट्टी द्वारा पृथक् हुआ रहता है। चोंच तथा पैरों का रङ्ग काला होता है।

प्राच्य स्वर्ण टिट्टिभ के शरीर की लम्बाई नौ इञ्च, पङ्ख की लम्बाई



प्राच्य स्वर्ण टिट्टिभ

साढ़े छः इञ्च, मुख्यपाद (गुल्फ) की लम्बाई पौने दो इञ्च होती है। चोंच की लम्बाई एक इञ्च से कुछ अधिक होती है।

प्राच्य स्वर्ण टिट्टिभ की एक उपजाति पुरानी दुनिया में होती है जिसे एशियाई या पूर्व देशीय पक्षी कहा जा सकता है। यह यनीसी नदी के पश्चिम क्षेत्र में सन्तानोत्पादन नहीं करती। भारत के पश्चिम के देशों में प्रवास भी नहीं करती। दूसरी उपजाति अमेरिका में उत्पन्न होती है जो उत्तर तथा दक्षिण दोनों अमेरिका में फैलती है। एशियाई उपजाति भी दक्षिण में आस्ट्रेलिया तक फैल कर प्रवास करती है।

प्राच्य स्वर्ण टिट्टिभ कीड़े-मकोड़े तथा छोटे मोटे जङ्गली फल भी खाता है। यह दलदली तथा उथले जल की भूमि में रहना पसन्द करता है। कुमुदिनी के पत्तों पर इसके विश्राम करने की बात कही जाती है।

हरित टिट्टिभ (कुयष्टिक)

स्था० नाम—टिटिहरी, टिटई, टीटी, टिट्टुरी (हि०) टिटवी (महा०)

हरित टिट्टिभ का आकार साधारण कबूतर के बराबर ही होता है किन्तु पैर बड़े होने से वह ऊँचा मालूम पड़ता है। इसके पैर में छोटी पिछली पादांगुलि होती है। इसकी आँख पर सामने तथा ऊपर की ओर निर्देशित एक चर्म अर्बुद या चपटा लटकन होता है। शरीर का ऊपरी तल हल्का भूरा, सिर तथा वक्षस्थल काला होता है। एक चौड़ी श्वेत पट्टी प्रत्येक आँख से प्रारम्भ होकर गर्दन पर उतरकर पिछले वक्षस्थल तथा उदर के श्वेत भाग से जा मिलती है, मुख्य पंख के पतत्र (पर) काले होते हैं। गौण पंख के पतत्रों पर एक श्वेत आड़ी पट्टी होती है। पूँछ का रङ्ग सिरे पर काला तथा आधार स्थल पर श्वेत होता है। नवजात पक्षी में सिर का रङ्ग भूरा तथा कण्ठ का रङ्ग श्वेत होता है।

हरित टिट्टिभ की चोंच सिरे पर काली तथा शेष भाग में रक्तवर्ण होती है। आँख के पलक तथा चर्मीय लटकन का रङ्ग भी रक्त होता है। आँखों का रङ्ग रक्तिम भूरा तथा पैरों का रङ्ग चमकीला पीला होता है।

हरित टिट्टिभ की लम्बाई तेरह इञ्च, पंख की लम्बाई नौ इञ्च, मुख्य-पाद (गुल्फ) की लम्बाई तीन इञ्च तथा चोंच की लम्बाई डेढ़ इञ्च होती है।

हरित टिट्टिभ बहुरङ्गी पक्षी है। वह 'टि टि टि टि' का शब्द कारण ही टिट्टिभ या हिन्दी में टिटिह या टिटिहरी नाम से पुकारा जाता है। यह भारत के सम्पूर्ण मैदानी भागों में पाया जाता है। पश्चिम में ईरान तथा अरब तक यह मिलता है। यह पर्वतों में अधिक ऊँचाई तक नहीं जाता। किन्तु काश्मीर में पाया जाता है। यह भारत का बारहमासी पक्षी है। मार्च तथा अगस्त के मध्य सन्तानोत्पादन करता है। अण्डे की लम्बाई डेढ़ इञ्च से अधिक होती है। यह पीले रंग की पृष्ठभूमि पर भूरे रंग के धब्बों युक्त होता है।

संघचर टिट्टिभक

सङ्घचर टिट्टिभक उत्तरी भारत में सर्वत्र पाया जाता है। इसके शरीर का ऊपरी तल भूरा, वक्षस्थल के नीचे का अधोतल श्वेत, पङ्ख तथा पूँछ का रंग श्वेत और काला होता है। शीर्ष का रंग काला तथा भूरा मिश्रित होता है। उसके चारो ओर एक लाल पट्टी घूमी रहती है। ऊपरी तल के भूरे रंग में लाल रंग की किनारी होती है।

वयस्क पक्षी कुछ विभिन्न तथा सुन्दर होते हैं। उनके सिर पर काली टोपी होती है जिसमें चारों ओर श्वेत पगड़ी तथा उसके नीचे काली रेखा होती है। पीठ पर लाल किनारी होती है। उदर का रंग काला होता है जिस पर बादामी रंग की किनारी होती है। कटि प्रदेश श्वेत होता है। चोंच तथा पैरों का रंग काला होता है। आँख का रंग गहरा होता है।

सङ्घचर टिट्टिभक के शरीर की लंबाई तेरह इञ्च, पंख की लंबाई आठ इञ्च, मुख्यपाद (गुल्फ) की ढाई इञ्च तथा चोंच की लंबाई डेढ़ इञ्च होती है।

सङ्घचर टिट्टिभक का सन्तानोत्पादन-क्षेत्र पूर्वी योरप तथा मध्य

एशिया है। शीत ऋतु में प्रवास कर दक्षिण की ओर जाकर उत्तरी भारत में उत्तर प्रदेश तथा दक्षिण में रत्नगिरि तक पहुँचने के प्रमाण हैं। यह सङ्घ या झुंड में रहने वाला पक्षी है।

सितपुच्छ टिट्टिभक

सितपुच्छ टिट्टिभक बड़े पैरों का अत्यन्त सुन्दर रङ्गों का पक्षी है। इसके शरीर का ऊपरी तल भूरा होता है। पीठ तथा पङ्ख पर सुन्दर गुलाबी दीप्ति होती है। पूँछ तथा गौण पङ्ख के पतत्र (पर) श्वेत होते हैं। कण्ठ तथा कटि प्रदेश श्वेत होते हैं। उदर का रङ्ग सुन्दर लाल, पीला तथा गुलाबी मिश्रित होता है। नवजात पक्षियों में पीठ पर गुलाबी दीप्ति नहीं होती।

इसकी चोंच का रङ्ग काला, आँखों का भूरा लाल, पैरों का पीला होता है। पलकों पर रक्त वर्ण की गोल गोट होती है। इसके शरीर की लम्बाई ग्यारह इञ्च, पङ्ख की सात इञ्च, मुख्यपाद (गुल्फ) की तीन इञ्च तथा चोंच की लम्बाई डेढ़ इञ्च होती है।

सितपुच्छ टिट्टिभक का प्रवास उत्तर दक्षिण दिशा में न होकर पूर्व पश्चिम में होता है। इसके सन्तानोत्पादन-क्षेत्र ईरान और तुर्किस्तान हैं। प्रवास-क्षेत्र उत्तरी अफ्रिका तथा उत्तरी भारत हैं।

कण्टपक्ष टिट्टिभ

कण्टपक्ष टिट्टिभ के पङ्ख के मोड़ पर यथेष्ट विकसित काँटा होता है। पैर में पिछली पादांगुलि तथा आँख पर चर्मीय लटकन का अभाव ही होता है किन्तु सिर पर एक लम्बी शिखा होती है। पैर लम्बे होते हैं। शरीर का ऊपरी तल हलका भूरा तथा निम्न श्वेत होता है। पङ्ख तथा दुम के आधार स्थल पर एक बड़ी आड़ी पट्टी होती है। शीर्ष, भाल, कण्ठ, मुख्य पङ्ख, पूँछ की छोर काली होती है। उदर पर एक काला धब्बा भी

होता है। चोंच तथा पैरों का रङ्ग भी काला होता है। आँखों का रङ्ग गहरा भूरा होता है।

कण्ठ पक्ष टिट्टिभ की लम्बाई एक फुट होती है। पङ्ख की लम्बाई आठ इञ्च, मुख्यपाद (गुल्फ) की ढाई इञ्च तथा चोंच की लम्बाई डेढ़ इञ्च होती है।

कण्ठ पक्ष टिट्टिभ गङ्गा की घाटी से लेकर पूर्व में बर्मा, थाईलैण्ड (स्याम) तथा दक्षिण चीन तक पाया जाता है। गोदावरी नदी के दक्षिण तथा पाकिस्तान में नहीं पाया जाता। यह एकाकी या जोड़े रूप में रहने वाला पक्षी है। उत्तरी भारत में मार्च या अप्रैल के प्रारंभ में सन्तानोत्पादन करता है। इसके अण्डे हरित टिट्टिभ के समान रङ्ग के किन्तु उससे कुछ छोटे आकार के होते हैं।

मणिमुख टिट्टिभक

स्था० नाम — टिटिरी, टिटई, टीटी, टिट्ठुरी (हि०)
टिटवी (महा रा०) टिटिड (बर्मा)

ब्राह्म मणिमुख टिटिट्भक रङ्ग-रूप तथा आकार में हरित टिट्टिभ से बहुत कुछ मिलता है। देखने में स्पष्ट अन्तर यह है कि इसकी गर्दन का रंग चारों ओर काला होता है। आँख के ऊपर की श्वेत पट्टी सिर के आगे नहीं जाती। काली गर्दन तथा भूरी पीठ के मध्य में एक श्वेत आड़ी पट्टी भी होती है।

इसकी तीन उपजातियाँ होती हैं (१) भारत मणिमुख (२) सिन्धु मणिमुख (३) ब्राह्म मणिमुख।

ब्राह्म मणिमुख टिट्टिभक बर्मा (ब्रह्मदेश) का पक्षी है। यह भारत में बर्मा से संलग्न मणिपुर में पाया जाता है। सुमात्रा तथा कोचीन चीन (हिन्द चीन) में भी यह देखा जाता है।

सिन्धु मणिमुख सिन्ध में पाया जाता है। भारत मणि मुख का प्रसार-क्षेत्र भारत है।

यह पक्षी नदी के तटों के निकट 'टिटिही टू' 'टिटिही टू' का शब्द उच्चारित करता मिलता है। इसलिए इस ध्वनि के ऊपर ही उसका नाम टिट्टिभ या टिटिहरी पड़ा है। यदि हम नदी के किनारे जायँ तो नर अपनी नित्य की यह बोली ही सुनाता चक्कर लगाता मिलेगा किन्तु खुले रेतीले तट पर ही उसकी मादा अण्डे के निकट होगी। वह आप को निकट जाते देख अण्डों के नष्ट होने के भय से दूर नहीं भागेगी, बल्कि साहस कर वैसा ही शब्द जोर-जोर से पुकार कर आपको भगाने का प्रयत्न करेगी। इस जाति के पक्षी भारत, मेसोपोटामिया, सिंहल, बर्मा तथा सुमात्रा तक पाये जाते हैं।

पीतमुख टिट्टिभक

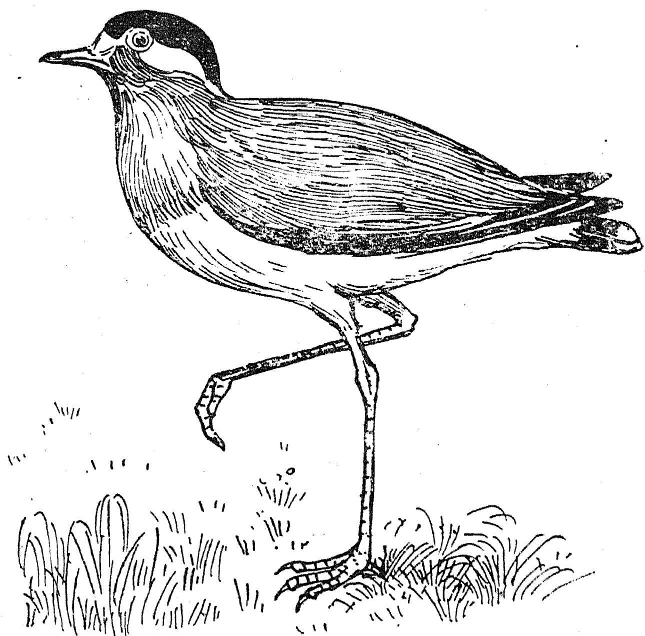
स्था० नाम – जर्दी जिठिरी (हि०)

पीतमुख टिट्टिभक की आँख के ऊपर लटकन पाया जाता है जो नीचे की ओर लटकता रहता है। सिर पर छोटी चोटी भी होती है। किंतु पंख पर काँटे तथा पैर में पिछली पादांगुलि का अभाव होता है। पैर लम्बोतरे होते हैं। शरीर का रङ्ग हलका भूरा, काला तथा श्वेत होता है। कण्ट पक्षी टिट्टिभ से रङ्ग में मिलता है किन्तु कण्ठ पर थोड़ा ही काला रंग होता है तथा एक श्वेत रेखा सिर के पीछे दोनों आँखों तक बनी होती है।

पीतमुख टिट्टिभक की चोंच तथा चर्मीय लटकन का रंग पीला होता है। चोंच की छोर काली होती है। आँखों का रंग रुपहला धूसर या पीला होता है। पैर का रंग पीला होता है।

पीतमुख टिट्टिभक की लम्बाई साढ़े दस इञ्च, पङ्ख की लम्बाई आठ इञ्च, गुल्फ की ढाई इञ्च तथा चोंच की लम्बाई एक इञ्च होती है।

पीतमुख टिट्टिभक शुद्ध देशी पक्षी है। यह भारत तथा सीलोन में सर्वत्र पाया जाता है। पाकिस्तान में दक्षिणी सिन्ध को छोड़ कर कहीं नहीं



पीतमुख टिट्टिभक

पाया जाता। यह सूखे मैदानों का प्रेमी है। जून जुलाई में दक्षिण भारत में, तथा अप्रैल मई में उत्तर भारत में अण्डे देता है। अण्डे की लम्बाई डेढ़ इञ्च होती है। उसका रङ्ग लाल, गहरा भूरा तथा नीलारुण (बैंजनी धूसर) रंगों के धब्बों युक्त होता है।

धूसरशीर्ष टिट्टिभक

धूसरशीर्ष टिट्टिभक साधारण कौए के आकार का पुष्ट पक्षी है।

इसके शरीर का ऊपरी तल भूरा, सिर धूसर तथा पंख काले और श्वेत होते हैं। पंख पर श्वेत आड़ी पट्टी होती है, मुख्य पंख-पतत्र (पर) काले होते हैं। पीतमुख टिट्टिभक का पंख इसके समान ही होता है। इसकी पूंछ भी श्वेत होती है जिसके छोर पर काला रंग होता है। उदर श्वेत होता है तथा एक काली-सी पट्टी द्वारा वक्षस्थल से पृथक् दिखाई पड़ता है। आँख के सामने एक छोटी चर्मीय लटकन पट्टी होती है। पैर में पीछे छोटी पादांगुलि भी होती है। नवजात पक्षी के वक्षस्थल पर काली पट्टी नहीं होती। उनका सिर भूरा होता है।

धूसरशीर्ष टिट्टिभक की चोंच, चर्मीय लटकन पट्टी, पलक तथा पैरों का रंग पीला होता है। चोंच की छोर काली होती है। आँखें लाल होती हैं।

इस पक्षी की लम्बाई पन्द्रह इञ्च, पंख की लम्बाई साढ़े नौ इञ्च, (गुल्फ) मुख्यपाद की तीन इञ्च तथा चोंच की लम्बाई डेढ़ इंच होती है।

धूसरशीर्ष टिट्टिभक पूर्वी देशीय पक्षी है। इसका सन्तानोत्पादन क्षेत्र मंगोलिया से जापान तक है। यह शीत ऋतु का प्रवास काल बंगाल से बर्मा तक व्यतीत करता है। ऐंडमन में भी यह पक्षी पाया जा सका है। यह शिकारियों का भोज्य ज्ञात होता है।

कालपक्ष प्रवालपाद

स्था० नाम—गज पाँव, तिंघुर (हिन्दी) लालगों, लालठेंगी, लमगोड़ा (बंगाल) गुसलिंग (सिंध)

प्रवालपाद या गज पाँव पंडुक के आकार का पक्षी है। किन्तु उनके पैर बड़े लम्बे तथा तीन उँगलियों युक्त ही होते हैं। पंख बड़े होते हैं। चोंच पतली और लम्बी होती है। पैरों को छोड़कर किन्तु चोंच को लेकर इस पक्षी की लम्बाई १५ इंच होती है। चोंच लगभग तीन इंच लम्बी

होती है। वह काले रंग की होती है। इसके शरीर के पर श्वेत रंग के होते हैं। पीठ तथा पंख का रंग चमककार हरा काला होता है। किन्तु मादा की पीठ तथा पंख के कुछ अंश का रंग भूरा होता है। शिशु पक्षी में काली टोपी भी होती है तथा गर्दन के पीछे धूसर रंग होता है।

प्रवालपाद के नर में ग्रीष्म ऋतु में सिर पर काली टोपी बन जाती है। इसका गुलाबी पैर सात इञ्च लम्बा होता है। यह उसके शरीर की सम्पूर्ण लम्बाई का आधा लम्बा होता है। उड़ान में अपने पैर पीछे फैंके रहता है। यह तीव्र गति से पङ्ख फटफटा कर पैरों से पतवार का काम लेकर सीधी उड़ान उड़ता है। उड़ान के मध्य में ही उसे एक पैर सिर खुजलाने के लिए आगे करते भी देखा जा सका है। यह छोटे-छोटे झुंडों में रहता है। यह घुटने तक पानी में खड़ा होकर पानी के ऊपरी भाग से आहार प्राप्त करता है। परन्तु भूमि पर आहार ढूँढ़ने के लिए इसे घुटने झुकाने पड़ते हैं। इसका आहार कीड़े, घोंघे, केंचुए, मेढ़क आदि हैं। यह झुंडों में ही घोंसला बनाता है।

कालपक्ष प्रवालपाद दक्षिण देशीय पक्षी है। यह अफ्रीका, दक्षिणी योरप, दक्षिणी तथा मध्य एशिया में पाया जाता है। शीतोष्ण कटिबन्ध के भागों में उत्पन्न पक्षी शीत ऋतु में उष्ण कटिबन्ध में प्रवास कर जाते हैं। भारत में कुछ स्थलों में यह सन्तानोत्पादन करता है। पश्चिमी योरप में केवल आइबेरियन प्रायद्वीप और दक्षिण फ्रांस में सन्तानोत्पादन करता है।

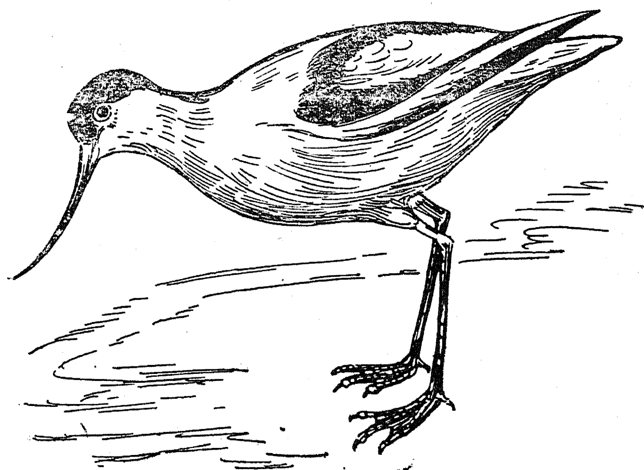
कषीका

स्था० नाम—कुस्या चहा (बिहार)

कषीका कबूतर के आकार का पक्षी है। इसकी लम्बाई लगभग १७ इञ्च होती है। इसके शरीर का रंग श्वेत होता है। परन्तु शीर्ष, गर्दन के पिछले भाग, पीठ तथा पङ्खों पर प्रमुख रूप से काली पट्टियाँ होती है।

इसकी काली चोंच तीन इंच लम्बी होती है तथा ऊपर की ओर मुड़ी होती है। नीले भूरे रङ्ग के बड़े लम्बे पैर होते हैं। अगली उँगलियाँ यथेष्ट अंगुलिजालमय होती हैं। पिछली उँगली में अल्प अँगुलिजाल ही होता है। यह भव्य रूप का कृशकाय पक्षी है।

कष्ीका एक स्वरूपवान पक्षी है। यह पानी में अपनी चोंच से टटोल कर केचुए, केकड़े, कीट आदि आहार ढूँढ़ता है। यह पुरानी दुनिया में



कष्ीका

अधिकांश भाग में पाया जाता है, परन्तु भारत में शीत ऋतु में प्रवासी की भाँति आता है। उत्तर भारत की अपेक्षा दक्षिण भारत में इसे अलभ्य ही कह सकते हैं। आसाम में भी यह पक्षी नहीं दिखाई पड़ता।

कष्ीका अपने पङ्ख स्थिरता किन्तु तीव्र गति से फटफटा कर सीधा उड़ता है। यह भूमि या उथले पानी में चलकर या पानी में तैर कर

आहार ग्रहण करता है। अपनी चोंच अगल-बगल शिकार की खोज में घुमाता रहता है। यह बराबर छोटे-छोटे झुंडों में पाया जाता है। पालतू रूप में इसे रखा जा सकता है।

कषीका के सन्तानोत्पादन का क्षेत्र निम्न है :—बाल्टिक सागर के मुख पर और योरप के उत्तर सागर तट पर, आइबेरियन प्रायद्वीप (स्पेन पुर्तगाल), दक्षिण फ्रांस, बाल्कन, काला सागर, कास्पियन तथा अरल सागर के तटों पर; पूर्व में चीन, दक्षिण में अरब सागर के तट तक, अफ्रीका के सम्पूर्ण तट पर उत्तर से दक्षिण तक। उत्तर देशीय पक्षी अफ्रीका तथा दक्षिणी एशिया तक प्रवास करते हैं।

—: ० :—

आरामुख वंश

पक्षियों का साधारण परिचय प्राप्त करने के लिए पक्षियों की जाति प्रजाति के वैज्ञानिक विभाजन की उधेड़बुन में पड़ना सुविधाजनक नहीं है। परन्तु कुछ पक्षियों के नामों तथा रूपों का स्मरण करने के लिए हम उपर्युक्त दो वंशों के कुछ पक्षियों की यहाँ पर चर्चा कर रहे हैं। ये दोनों वंश बहुत ही विस्तृत हैं तथा भूजीवी जलपंकचारी पक्षियों में बहुसंख्यक पक्षी इन दो वंशों के हैं। पक्षी विज्ञान के विशेषज्ञ निरन्तर शोध कार्य में संलग्न रहते हैं। अतएव अल्पज्ञात पक्षियों का विशेष परिचय मिलते ही उनको वैज्ञानिक विभाजन में उचित स्थान देने का प्रयत्न करते रहते हैं। अतएव आज से कुछ दिनों पहले जिन पक्षियों को एक वंश या प्रजाति का माना जाता रहा, उसे किसी दूसरे वंश या जाति-प्रजाति में गिना जाने लगता है। इस कारण इन विभाजनों की अधिक चर्चा न कर हम पृथक् पृथक् पक्षियों की पहचान ही विशेष रूप से देने का ध्यान रखेंगे।

टिट्टिभ वंश में टिट्टिभ जाति के पक्षी भी होते हैं। हम टिटिहरी नाम को अगस्त्य ऋषि की कथा में सुनते हैं। आज वैज्ञानिकों ने बहुसंख्यक पक्षियों के नाम-धाम ज्ञात कर कई नामों से उन्हें पुकार कर हमें टिट्टिभों का यथेष्ट विवरण प्रदान किया है। पंककीर नामक पक्षी आरामुख वंश में अपना एक स्थान रखते हैं। इन्हीं के बीच एक चित्रित कुनाल नाम के पक्षी को भी पाया जाता है जो न तो टिट्टिभ वंश का है और न आरामुख वंश का है। अतएव उसके विशेष रूप तथा शारीरिक रचना के कारण एक कुनाल वंश ही पृथक् रूप से मान लेना पड़ा है। इस पक्षी के कुछ परिचय प्राप्त कर हम उसके पृथक् वंश का मर्म समझ

सकेंगे। इसी तरह कुछ अन्य थोड़ी ही संख्या के पक्षी अपनी विशेषताओं से नए वंशों का नामकरण कराने के लिए विवश करते हैं, जिन्हें पहले किसी एक वंश में ही रक्खा जाता था। कर्कटाश वंश, पाणविक वंश, शार्कर वंश तथा जलकोपि वंश ऐसे ही वंश हैं जो भूर्जीवी जलपंकचारी पक्षियों के अन्तर्गत हैं।

टिट्टिभ को पंककीर से विभिन्नता बताने के साधारण लक्षण हैं। पंककीर की चोंच बड़ी लम्बी होती है। किन्तु टिट्टिभ की चोंच छोटी होती है। पंडुक की चोंच छोटेपन में टिट्टिभ की समानता कर सकती है। सभी पङ्ककीरों में चोंच की लम्बाई गुल्फ अर्थात् पैर की मध्यवर्ती सन्धि से पादांगुलि तक फैले पाद की लम्बाई के कम से कम आधे के बराबर होती है या प्रायः उससे अधिक होती है। उनके पैर की अगली तीनों पादांगुलियाँ अङ्गुलिजाल-हीन होती है। किन्तु कुछ जल रंक पक्षियों में चोंच की लम्बाई पंककीर के समान लम्बी होने पर भी पादांगुलियों में हल्का सा अँगुलिजाल होता है जो पादांगुलियों के आधार स्थल में होता है। अन्य जिन जलरंकों में तीन पादांगुलियाँ ही होती है, उनमें चोंच की लम्बाई गुल्फ की लम्बाई के अनुपात से कम ही होती है।

पंककीर की आँखें विशाल होती हैं। वे यथार्थतः बहुत पीछे की ओर कर्ण-रंध्र के ऊपर ही स्थित होती हैं। उनके शरीर का रंग विशेष उल्लेखनीय है। पीठ तथा शीर्ष का रंग अधिकांशतः काला होता है किन्तु जलरंकों का रङ्ग सदा खाकी, धूसर ताम्रवर्ण (धुँधला भूरा) या भूरा होता है।

अधिकांश पंककीरों में सिर के नीचे हल्की पीली पट्टी होती है। ऐसी ही पट्टी पीठ के बगल में भी होती है। ये पट्टियाँ विशेष दृष्टिगोचर होती हैं। पंककीर की पीठ लम्बी तथा सीधी होती है तथा गोल होती है। चोंच का ऊपरी पल्ला कुछ लम्बा होता है तथा सिरे पर कुछ

मोटा होता है। निम्न चंचु इस अर्बुद के पीछे, ऊपरी चंचु से आ मिलता है। इसलिए पूरी चोंच पंक में धँसा दी जा सकती है और कीड़े-मकोड़े पकड़े जा सकते हैं। एक यह भी विशेषता होती है कि मुँह का शेष भाग खोले बिना ही पंककीर अपनी चोंच के अगले भाग को ही खोल सकता है। उसकी चोंच लचीली होने का यह परिणाम होता है।

पंककीरों के नर-मादा का रङ्ग-रूप समान होता है। शिशु के रङ्ग में भी विशेष अन्तर नहीं होता। ये पक्षी सारे संसार में विस्तृत पाये जाते हैं। कुछ जातियाँ कहीं पर बारहमासी होती हैं और कहीं प्रवासी होती हैं। हमारे देश के पंककीर बाहरमासी हैं। इनमें भंडु तित्तिर नाम का पक्षी बड़े आकार का होता है। परन्तु महा पंककीर पक्षी इससे भी बड़ा होता है तथा ब्राजील और पारागुई में पाया जाता है। पंककीर कीटभक्षी वृत्ति के होते हैं। इसके लिए उनकी लम्बी चोंच बड़ी उपयुक्त होती है। ये पक्षी समाजप्रिय नहीं होते। प्रायः सन्तानोत्पादन ऋतु के अतिरिक्त एकाकी रहते हैं। कहीं आहार की उपयुक्त सुविधा होने पर संयोग वश अनेक पंककीरों का जमाव संभव है। ये दिन को सुस्त पड़े रहते हैं तथा रात को चारा चुगने निकलते हैं। टिट्टियों तथा जलरङ्कों की अपेक्षा पंककीरों को सुस्त पक्षी कहा जा सकता है।

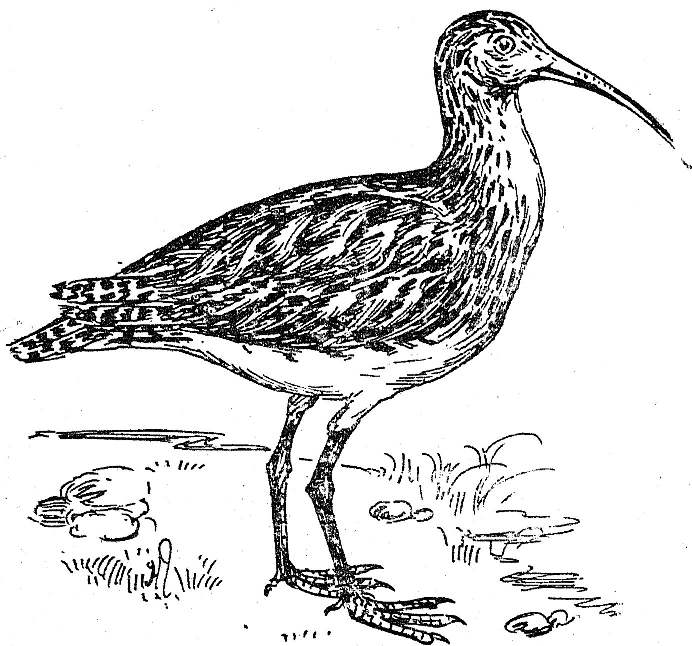
पंककीरों में भण्डु तित्तिर ही बड़ा होता है। उसकी लम्बाई लगभग चौदह इंच होती है। अन्य पंककीरों की लम्बाई एक फुट से अधिक नहीं होती। इनमें वन पंककीर तथा एकल पंककीर एक फुट लम्बे होते हैं। वन पंककीर अन्य बड़े पंककीरों से छोटे पङ्ख का होता है। पङ्ख की लम्बाई साढ़े पाँच इंच होती है किन्तु उसके पैर बड़े होते हैं। गुल्फ की लम्बाई चोंच की दुगुनी लम्बाई से अधिक होती है। इसके विपक्ष एकल पंककीर में चोंच की ही लम्बाई गुल्फ की लम्बाई से दूनी होती है। व्यजनपुच्छ पंककीर तथा शङ्कु पंककीरों की लम्बाई नौ दस इंच तक होती है। इनको पूँछ के विचित्र आकार से ही पहचाना जा

सकता है। व्यजन (पङ्खा) की तरह परों के फैले गुच्छ द्वारा निर्मित पुच्छ रखने वाला पंककीर व्यजनपुच्छ कहलाता है किन्तु जिसकी पूँछ के दोनों ओर तार समान नोकीले पर लगे होते हैं उन्हें शंकु पंककीर कहते हैं।

नक्त कुररी

स्था० नाम—गोआर, गौंघ, बड़ा गुलिंदा (हिन्दी)

नक्त कुररी का आकार चोंच छोड़कर दो फीट लम्बा होता है। चोंच बड़ी लम्बी होती है। उसकी लंबाई पाँच इंच होती है तथा वह नीचे की



नक्त कुररी

ओर अत्यधिक झुकी होती है। इसके परों का रङ्ग रेखाओं युक्त भूरा होता है। यह लज्जालु पक्षी है। गर्दन छोटी होती है। नीचे भूरी चोंच दूर से ही दिखाई पड़ जाती है। यह कठिनाई से उड़ता है। यह गहरे पानी में भी चल सकता है। अपनी लंबी वक्र चोंच से घोंघे, कीड़े, केंचुए केकड़े, मछली, मेढक आदि ढूँढ़ता फिरता है।

नक्त कुररी के घोंसले झुंड में नहीं बनते। घास के मैदान, जलीय वनस्पतियों आदि में घोंसले बनते हैं जिनमें घासपात की नर्म तह बिछी होती है। सन्तानोत्पादन ऋतु में नर उछलकर अपने पंखों को त्रिशूल के बाह्य फलकों की तरह ऊपर उठा देता है जिससे पंखों का श्वेत अधो-तल दिखाई पड़ जाता है। नर-मादा इसी प्रकार खेल करते हैं।

नक्त कुररी का सन्तानोत्पादन-क्षेत्र ध्रुवीय योरप (आइसलैंड छोड़ कर) उत्तरी फ्रांस तक; पूर्व में योरप की पूर्वी सीमा तक है। इसी जाति की दूसरी उपजाति एशिया में होती है। योरप का उत्पन्न पक्षी शीत ऋतु में दक्षिण अफ्रीका तक प्रवास कर जाता है।

उप कुररी

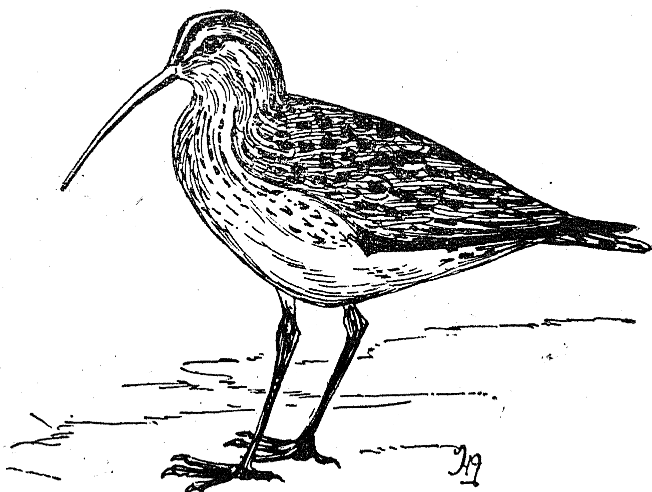
स्था० नाम—छोटा गोंघ, छोटा गुलिंदा (हिन्दी)

उप कुररी की लम्बाई चोंच छोड़कर पन्द्रह इञ्च होती है। चोंच ३ इञ्च लम्बी होती है। इसकी चोंच नक्त कुररी के समान लम्बी या उतनी मुड़ी नहीं होती। शरीर का रङ्ग रेखान्वित भूरा होता है। शीर्ष पर दो गहरी रंगीन पट्टियाँ होती हैं जिनके बीच में हल्के रङ्ग की पट्टी होती है। यह नक्त कुररी की अपेक्षा पालतू होता है। उड़ान में इसके पङ्ख अधिक फटफटाते हैं। यह चोंच से टटोलकर मकड़ी, घोंघे, कीड़े मकोड़े, केंचुएँ आदि खाता है। झरबेरियाँ भी खा लेता है।

उप कुररी के शिशु भी नक्त कुररी की भाँति होते हैं परन्तु रंग

हल्का होता है। उसके बदन पर पूर्ण पतत्र दूसरी ऋतु के आगमन तक ही उगते हैं।

उप कुररी ध्रुवीय तथा उप ध्रुवीय क्षेत्रों में सन्तानोत्पादन-क्षेत्र रखता है। साइबेरिया, रूस, स्कैंडिनेविया, आइसलैंड, फेरो द्वीप तथा



उप कुररी

उत्तरी ब्रिटेन आदि सन्तानोत्पादन-क्षेत्र हैं। शीत ऋतु में यह दक्षिणी अफ्रीका तथा दक्षिणी अरब तक प्रवास करने पहुँचता है। यह रात्रि को प्रवास यात्रा करता है। ऊँचाई पर ही उड़ता है, परन्तु इसकी मुख ध्वनि से पहचान की जा सकती है।

कालपुच्छ आरामुखी

स्था० नाम—गुडेरा, गैरिया, जंगराल, खाग (हि०), मलमुझा (नैपा०), जौराली बंग

कालपुच्छ आरामुखी मझोले आकार का पक्षी है। चोंच को छोड़कर

इसकी लम्बाई १६ इञ्च होती है। चोंच की लम्बाई चार इञ्च होती है। वह तनिक-सा ऊपर झुकी होती है। पैर हरामिश्रित काले होते हैं। उड़ान के समय पैर पूँछ से पीछे की ओर मुड़े रहते हैं। शीत ऋतु में इसके शरीर का साधारण रंग धब्बों मिश्रित भूरा खाकी होता है। सन्तानोत्पादन ऋतु में नर के शरीर का रंग केवल वक्षस्थल पर रक्त हो जाता है। उदर तथा दुम का अधोतल श्वेत सा ही रहता है। पङ्ख पर चौड़ी श्वेत स्फुट पट्टी रहती है। कटिप्रदेश मटमैला परन्तु दुम शुद्ध श्वेत रहती है। उस पर छोर पर चौड़ी आड़ी पट्टी होती है। शीत ऋतु में अधोतल हल्का धूसर रहता है। पीठ भूरी खाकी रहती है। अन्य आरामुखी पक्षियों की अपेक्षा अधिक काली तथा एक रूप-रंग की होती है। उड़ान के समय गर्दन छोटी दिखाई पड़ती है। यह गहरे पानी में भी चल सकता है। चोंच से टटोल कर कीड़े, केचुए, घोंघे, केकड़े आदि खाता है। मछली, मेंढक आदि भी आहार बनाता है।

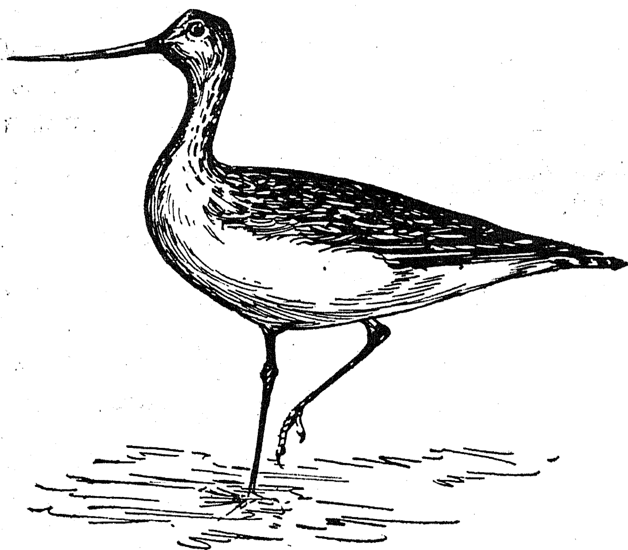
कालपुच्छ आरामुखी ध्रुव प्रदेशीय पक्षी नहीं है। इसका सन्तानोत्पादन-क्षेत्र योरप में बाल्टिक, दक्षिणी स्वेडन तथा आइसलैंड के दक्षिण के भाग हैं। इसी की एक दूसरी उपजाति उत्तरी एशिया में होती है। योरप के उत्पन्न पक्षी शीत ऋतु में प्रवास कर भूमध्य सागर होकर अफ्रीका तक प्रवास करने पहुँचते हैं। भूमध्य रेखा को भी कभी-कभी पार कर जाते हैं। शीत ऋतु में यह भारत में साधारण रूप से पाया जाता है। यह अधिकांशतः दाना चुगता है। यह प्रायः बड़े झुंड में रहता है।

पट्टिपुच्छ आरामुखी

स्था० नाम—गुडेरा, गौरैया, जंगराल

पट्टिपुच्छ आरामुखी मझोले आकार का पक्षी है। इसकी लम्बाई चोंच छोड़कर १४ इञ्च होती हैं चोंच की लम्बाई चार इञ्च होती है। यह ऊपर को स्पष्टतः मुड़ी होती है। पैरों का रंग धूसर होता है। उड़ान

के समय वे थोड़ा सा ही पीछे की ओर झुकते हैं। शीत ऋतु में इसके शरीर का साधारण रंग धब्बों मिश्रित भूरा खाकी होता है। सन्तानोत्पादन ऋतु में नर के शरीर का रंग रक्तवर्ण हो जाता है। पङ्ख पर स्फुट रंगीन पट्टियाँ नहीं होतीं। कटिप्रदेश का रंग श्वेत तथा पूँछ का रंग पट्टियों युक्त होता है। अधोतल नक्त कुररी की अपेक्षा अधिक उजलापन युक्त होता है। वक्षस्थल पर धुँधली रेखाएँ होतीं है। उड़ान के समय गर्दन छोटी जान पड़ती है। उड़ान के बाद भूमि पर बैठने के पहले कुछ दूर तक



पट्टिपुच्छ आरामुखी

हवा में तिरछे रूप में गिरता सा है। पङ्क में लम्बी चोंच से टटोल कर यह केकड़े, घोंघे, कीट आदि खाता है।

पट्टिपुच्छ आरामुखी का सन्तानोत्पादन-क्षेत्र योरप का ध्रुवीय क्षेत्र

तथा साइबेरिया है। अटलांटिक तट होकर अफ्रीका तक प्रवास करता है तथा भूमध्य सागर होकर लाल सागर तथा अदन की खाड़ी तक जाता है। दक्षिण में लगभग भूमध्य रेखा तक पहुँच जाता है। इसको करांची में प्रवास करते पाया जाता है।

तनुतुण्ड आरामुखी

तनु तुण्ड आरामुखी में पङ्कीर के समान चोंच होती हैं। वह सिरे पर चौड़ी, सीधी तथा संवेदनशील होती है। यह रंग-रूप इसे आरामुखी पक्षी की समता कराता है। शीत ऋतु में शरीर का रंग धूमिल भूरा होता है। परों में उजलापन रंग के किनारे होते हैं तथा सिर और गर्दन पर काली रेखाएँ होती हैं। ग्रीष्म में इसका रंग बादामी होता है। चोंच काली होती है। आधार स्थल पर धूमिल रंग होता है। चरण का रंग गहरा खाकी होता है।

तनुतुण्ड आरामुखी की लम्बाई एक फुट होती है। पंखों की लम्बाई बन्द रहने पर सात इञ्च होती है। चोंच की लंबाई तीन इञ्च तथा मुख्य-पाद (गुल्फ) की दो इञ्च होती है।

तनु तुण्ड आरामुखी का सन्तानोत्पादन-स्थल साइबेरिया है। भारत में यह पक्षी शीतऋतु में प्रवास करने पहुँचता है।

लघु उन्नतचंचु जलरंक

लघु उन्नतचंचु जलरंक की चोंच थोड़ा-सा ऊपर झुकी होती है। उसकी लम्बाई गुल्फ की लम्बाई से दूनी होती है। पैर छोटा होता है। इस पक्षी का रूप विचित्र जान पड़ता है। पैर की लघुता तथा चोंच की इतनी प्रलम्बता इसका उपहासास्पद रूप प्रकट करती है। इन अंगों के आकार को देखकर इसकी पहचान में भूल नहीं होनी चाहिए। अन्य रंग-रूपों से इसकी विशेषता नहीं ज्ञात हो सकती। इसका रंग धूमिल

भूरा होता है जो कोई विशेष बात नहीं है। किन्तु पैर का रंग चटकीला नारंगी होने से छोटे जलरंकों में यह विशेष स्थान प्राप्त करता है।

इस पक्षी की चोंच काली होती है जो आधार स्थल पर नारंगी रंग की बनी होती है। ग्रीष्म ऋतु में इसका रंग ऊपरी तल पर काला तथा रेखाओं युक्त होता है। इसकी लम्बाई साढ़े नौ इञ्च होती है। उसमें चोंच की ही लम्बाई लगभग दो इञ्च होती है। पङ्ख की लम्बाई केवल पाँच इञ्च तथा मुख्यपाद की एक इञ्च होती है।

लघु उन्नत चंचु जलरङ्क का सन्तानोत्पादन-क्षेत्र उत्तर पूर्वी योरप तथा उत्तरी साइबेरिया है। यह शीत ऋतु में दक्षिण जाता है। भारत में भी यह प्रवास करने आता है। इसकी संख्या थोड़ी ही होतो है परन्तु सब जगह फैला पाया जाता है।

हरित जलरंक

स्था० नाम—नेल्ला उलंका (तेलगू)

हरित जलरंक पक्षी प्रख्यात जलरङ्क की तरह हल्के हरे मिश्रित भूरे रंग का पक्षी है। ग्रीष्म में हल्के धब्बे हो जाते हैं। यह छोटे आकार का पक्षी है। इसकी लम्बाई लगभग ९ इञ्च होती है। कटिप्रदेश तथा अधिकांश पुच्छ स्पष्टतः श्वेत होती है। वन जलरङ्क की अपेक्षा यह बड़ा, स्थूलकाय तथा गहरे रंग का होता है। इसके पैर भी उससे छोटे होते हैं। उड़ान के समय पैर पूँछ से पीछे नहीं पहुँचते। पङ्ख का अधोतल कालापन युक्त होता है। शीत ऋतु में शरीर का ऊपरी तल काला, अधोतल श्वेत तथा वक्षस्थल धूसर दिखाई पड़ते हैं। ग्रीष्म में ऊपरी तल के गहरे रंग पर के श्वेत धब्बे वन जलरङ्क से छोटे हो जाते हैं तथा वक्षस्थल पर न्यून रेखाएँ होती हैं।

हरित जलरङ्क का आहार कीड़े मकोड़े, केकड़े, घोंघे आदि हैं।

यह चोंच से टटोल कर तथा चुनकर खाता है। इसके झुण्ड बड़े नहीं होते।

हरित जलरङ्क एकाकी ही घोंसले बनाता है। पुराने दलदली भागों में अन्य जन्तुओं के पुराने घोंसले को प्रयुक्त कर लेता है। औसत रूप से चार अण्डे दिये जाते हैं।

हरित जलरङ्क का सन्तानोत्पादन के क्षेत्र वन जलरङ्क के समान ही है किन्तु उतनी अधिक दूर के ध्रुवीय प्रदेशों तक नहीं है। दक्षिण में उतनी अधिक दूर तक प्रवास कर शीत ऋतु व्यतीत नहीं करता। भूमध्य रेखा से उतनी अधिक दूर या दक्षिणी अफ्रीका, या आस्ट्रेलिया तक नहीं पहुँचता। भारत में यह पक्षी उत्तर भाग में ही अधिक प्रवास करता है। यह अपनी दुम ऊपर-नीचे करता रहता है। यह जुलाई में ही पहुँच जाता है तथा मई में वापस जाता है। अतएव भारत में यह सरलतया दिखाई पड़ता है।

प्रख्यात जलरंक

स्था० नाम—पोट्टी उलङ्का (तेलगू)

प्रख्यात जलरङ्क रंग-रूप में वन जलरङ्क सदृश है। इसके शरीर का ऊपरी तल धूमिल हरा मिश्रित भूरा होता है तथा उसमें श्वेत धब्बों का अभाव होता है। चोंच का रंग गहरा भूरा तथा पैरों का रंग हरा होता है। इसकी लम्बाई ८ इञ्च, पङ्ख की लम्बाई चार इञ्च तथा चोंच की लम्बाई एक इञ्च से कुछ अधिक होती है। गुल्फ की लम्बाई एक इञ्च होती है।

प्रख्यात जलरङ्क झुण्ड में कदाचित ही दिखाई पड़ता है। यह अपना आहार कुरेद कर नहीं ढूँढ़ता, बल्कि चुन लेता है। इसका आहार उभयचारी (मेढक), मकड़े, घोंघे, केकड़े, कीट तथा केचुए आदि हैं। यह पानी के निकट अपने घोंसले बनाता है। नदी के किनारे, या घास

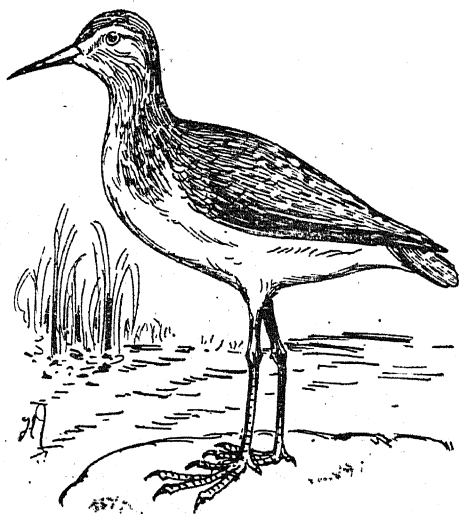
के मैदान या जंगलों में अपने घोंसले में अण्डे देता है। औसत रूप से चार अण्डे एक ऋतु में देता है। अण्डे की लम्बाई डेढ़ इञ्च होती है।

प्रख्यात जलरङ्क का सन्तानोत्पादन-क्षेत्र दक्षिणी योरप से उत्तरी योरप तथा एशिया के उत्तरी खण्ड तक है। इसको अफ्रीका में भूमध्य रेखा के निकट भी अण्डा देने की आश्चर्यजनक घटना उपस्थित करते देखा गया है। साधारणतया उत्तर प्रदेशों में सन्तानोत्पादन कर शीत ऋतु में दक्षिणी अफ्रीका, भारत सागर, पूर्वी द्वीप समूह तथा आस्ट्रेलिया तक के भूभागों में प्रवास करने पहुँचता है।

वन जलरङ्क

स्था० नाम—चुपका, चोबहा, तुतवारी (हि०)

बन जलरङ्क छोटे आकार का पक्षी है। आकार से पहचानने में



वन जलरङ्क

कठिनाई है। परन्तु इसका रङ्ग पहचान करा देता है। इसका ऊपरी तल गहरा भूरा होता है जिस पर श्वेत धब्बों की मिलावट होती है। यही विशेष पहचान है। चोंच तथा पैरों का रङ्ग हरापनयुक्त होता है। चोंच के सिरे पर काली पट्टी होती है।

वन जलरङ्क की लम्बाई साढ़े आठ इञ्च तथा पङ्ख की लम्बाई पाँच इञ्च होती है। चोंच भी लगभग डेढ़ इञ्च लम्बी होती है।

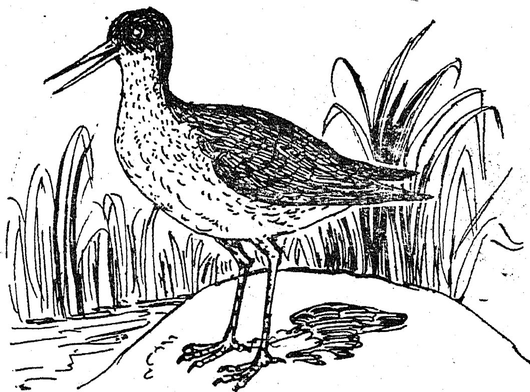
वन जलरङ्क विदेशी जन्मा पक्षी है। पुरानी दुनिया के उत्तराखंडों में जन्म धारण करता है तथा शीतऋतु में प्रवास कर दक्षिण भूभागों में आस्ट्रेलिया तक पहुँच जाता है।

वन जलरङ्क का मांस कुरुचिपूर्ण समझा जाता है। उसे शिकारी पसन्द नहीं करते।

आरक्तपाद जलरंक

स्था० नाम—छोटा बातन (हि०)

आरक्तपाद जलरङ्क का आकार छोटे पंडुक के समान होता है। इसकी



आरक्तपाद जलरङ्क

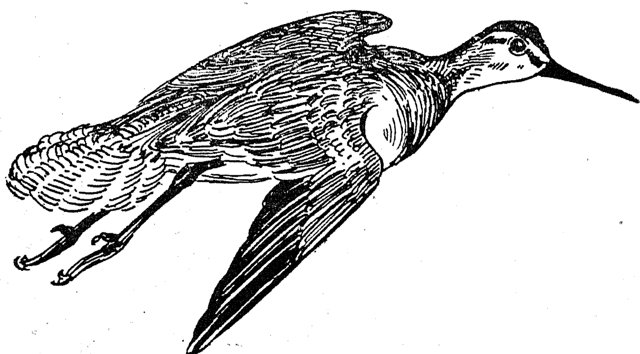
चोंच सीधी होती है। इसका ऊपरी तल हल्का पीला तथा कुछ चितकबरा होता है। प्रत्येक पङ्ख पर गौण पङ्ख के श्वेत होने से एक बड़ा श्वेत धब्बा दिखाई पड़ता है। उड़ान के समय पङ्ख खुलने पर वे स्पष्ट प्रदर्शित होते हैं। धब्बों से इसकी पहचान होती है। शिशु पक्षियों का रङ्ग अधिक लाल होता है। पैरों का रङ्ग नारङ्गी होता है। चोंच का रङ्ग काला किन्तु आधारस्थल पर रक्तिम होता है। इसके शरीर की लम्बाई ११ इञ्च होती है। पङ्ख की लम्बाई ६ इञ्च से कुछ अधिक होती है। चोंच की लम्बाई दो इंच होती है।

आरक्तपाद जलरङ्क भारत में शीत ऋतु में प्रवास करने वाला साधारण पक्षी है। यह ग्रीष्म में योरप तथा मध्य एशिया में सन्तानोत्पादन करता है। शीत ऋतु में दक्षिण प्रवास करने आता है।

विन्दुकित जलरंक

स्था० नाम बातन, गतनी, सुरमा

विन्दुकित जलरङ्क पक्षी आरक्तपाद जलरङ्क से कुछ बड़ा होता है।



विन्दुकित जलरङ्क

इसका रंग भी अधिक चितकबरा होता है। पङ्ख पर स्पष्ट श्वेत धब्बा

भी नहीं दिखाई पड़ता। गौण पङ्ख भूरे रंग की स्फुट पट्टियों युक्त होता है किन्तु शीत ऋतु में विन्दुकित जलरङ्क का रंग-रूप भी आरक्तपाद के समान ही होता है। उनके पैर एक समान रक्तवर्ण होते हैं। भारत में तो विभिन्न रंग में ही विन्दुकित जलरङ्क दिखाई पड़ता है। उसका रंग अधिकांशतः भस्मीय होता है। पैरों का रङ्ग गहरा लाल रहता है। इस पक्षी की लम्बाई एक फुट होती है। पङ्ख की लम्बाई पौने सात इंच होती है।

विन्दुकित जलरङ्क अधिक उत्तरदेशीय पक्षी है। इसका सन्तानोत्पादन-क्षेत्र पुरानी दुनियाँ के पूर्ण ध्रुवीय भाग में है। शीत ऋतु का प्रवास-क्षेत्र भी इसका बहुत दूर तक नहीं है। भारत के उत्तर भाग में तो यह दिखाई पड़ता है, परन्तु दक्षिण भारत के लिए दुर्लभ पक्षी ही कहा जा सकता है।

हरितपाद जलरंक

स्था० नाम—टिमटिम्मा, टनटन्ना (हि०), गोत्र (बं०)

हरितपाद जलरङ्क को मझोले आकार का पक्षी समझना चाहिए। कबूतर के समान बड़ा शरीर होता है। आरामुख पक्षी इसकी समानता का पक्षी है। हरितपाद जलरङ्क की चोंच गर्दन तथा पैर लम्बे होते हैं किन्तु चोंच की लम्बाई आरामुख की अपेक्षा कुछ छोटी होती है सिरे पर चपटी भी नहीं होती। शनैः-शनैः पतली बनी होती हैं। यह बड़ा ही आकर्षक पक्षी होता है। ऊपरी तल का रङ्ग हल्का पीला तथा धूसर रङ्ग की पुट युक्त होता है। सिर तथा गर्दन पर काली और श्वेत रेखाएँ होती हैं। ग्रीष्म में पीठ पर काली रेखाएँ होती हैं। चोंच खाकी होती है जो छोर पर काली होती है। पैरों का रंग पीलापन मिश्रित हरा होता है। इन रंगों के कारण इसे किसी भी बड़े आकार के जलरङ्क से पृथक् किया जा सकता है।

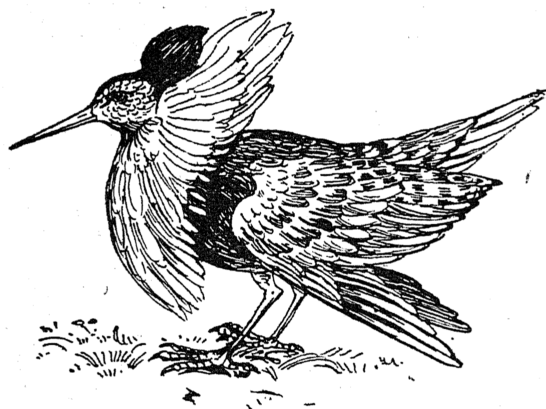
हरितपाद जलरङ्क की पूरी लम्बाई १४ इंच होती है। पंखों की लम्बाई साढ़े सात इंच तथा गुल्फ और चोंच की लम्बाई ढाई इंच होती है।

भारत में यह पक्षी प्रवास करता है। ग्रीष्म में उत्तरी योरप तथा एशिया में सन्तानोत्पादन करता है। शीत ऋतु में इसका प्रवास-क्षेत्र दक्षिणी एशिया तथा आस्ट्रेलिया तक है।

भट जलरंक

स्था० नाम—गेहवाला (हि०)

नर भट जलरङ्क मादा से अधिक बड़ा होता है। इन दोनों का रूप अन्य सभी जलरङ्कों से विभिन्न प्रकट हो जाता है। इनकी चोंच



भट जलरङ्क

सीधी तथा कुन्द होती है। नर की लम्बाई ११ इंच तथा मादा की लम्बाई ६ इंच होती है। साधारण जलरङ्क से इनका शरीर भारी होता है। चोंच का रंग काला भूरा तथा आधारस्थल में हलका होता है। पैरों

का रंग कई प्रकार का पाया जा सकता है, पीला, धूसर, या हरा हो सकता है। ऊपरी तल का रंग हल्का पीला तथा किनारों पर कुछ उससे भी हल्का होता है। शिशु पक्षियों में कुछ रक्त वर्ण मिश्रित होता है। अनेक पक्षी, विशेषतया नर गर्दन पर श्वेत रंग रखते हैं। कभी सिर का भी रङ्ग श्वेत होता है। ग्रीष्म में नर के गले में लम्बे परों की कण्ठमाला-सा होता है। पङ्ख पर अस्पष्ट श्वेत पतली स्फुट पट्टियाँ होती हैं। पूँछ के प्रत्येक गहरे रंग के क्षेत्र के दोनों ओर हल्के रंग के क्षेत्र ऐसे प्रतीत होते हैं मानो अण्डाकार धब्बे हों। शरद ऋतु में शिशु पक्षी की पीठ काले भूरे रंग से चित्रित होती है। वक्षस्थल रक्तवर्ण होता है। गला तथा अधोतल का शेष भाग श्वेत होता है। ग्रीष्म में मादा का भी रंग इसी प्रकार होता है किन्तु कुछ धूसर रंग होता है तथा वक्षस्थल पर स्फुट पट्टियाँ-सी दिखाई पड़ती हैं। शीत ऋतु में नर और मादा का रंग समान होता है जो एक रूप का धूसर ज्ञात होता है परन्तु उनके शरीर का आकार समान नहीं होता।

भट जलरङ्क का सन्तानोत्पादन-क्षेत्र फ्रांस तथा मध्य योरप से लेकर योरप के ध्रुवीय प्रदेशों तक, तथा मध्य रूस तथा साइबेरिया है। शीत ऋतु में प्रवास कर दक्षिण अफ्रीका तक पहुँचता है। भारत महासागर तथा पूर्वी द्वीपसमूह के समुद्र तटों पर भी प्रवास करता है। यह उत्तर भारत में अधिक पाया जाता है। दाना चुगने की अधिक प्रवृत्ति रखता है। यह झुंडों में पाया जाता है किन्तु परस्पर झगड़ालू भी यथेष्ट है। शिकारी इसको मांसाहार के लिए उपयुक्त समझते हैं।

भट जलरङ्क नर और मादा को भूरी पूँछ से ही अन्य जलरङ्को से पृथक् ज्ञात किया जा सकता है। ये पक्षी छोटे जलपंकचारियों में बड़े भव्य होते हैं। गले की कंठमाला का सुरम्य रंगवैचित्र्य काला श्वेत या काला और बादामी का मिश्रण दर्शनीय वस्तु है।

बालु जलरंक

बालु जलरङ्क छोटे आकार का पक्षी है। इसकी लम्बाई आठ इञ्च होती है। चोंच तथा पैर का रंग काला होता है। दौड़ने में यह तेज पक्षी है। गिरि जलरङ्क इससे कुछ ही छोटा होता है। गिरि जलरङ्क की अपेक्षा इसके पङ्ख की श्वेत स्फुट पट्टी अधिक प्रमुख होती है। शीत ऋतु में नर पक्षी का ऊपरी तल धूमिल धूसर होता है। उस पर धुँधले काले रंग के धब्बे होते हैं। सिर तथा अधोतल श्वेत होता है। इसका रूप जलप्रिय पक्षियों से मिलता-जुलता प्रतीत होने से शीत ऋतु में पहचानना कठिन हो सकता है। किन्तु यह ध्यान में रखने की बात है कि जलप्रिय पक्षियों में शीत ऋतु में मुख पर काला धब्बा होता है। वे कृशकाय होते हैं। वे हृष्ट-पुष्ट नहीं होते परन्तु बालु जलरङ्क तगड़ा पक्षी होता है। ग्रीष्म ऋतु में बालु जलरङ्क का रंग गिरि जलरङ्क से विभिन्न ही रहता है। सारा सिर, वक्षस्थल तथा गर्दन हल्के बादामी रंग की रहती है। पीठ पर काली चित्तियों युक्त बादामी रंग होता है। उड़ान के समय बालु जलरङ्क बड़े व्यवस्थित झुंड में होते हैं। भूमि पर उन्हें चीटों की पंक्ति समान चलता पाया जाता है। पङ्क तथा रेतीले तट पर चोंच से कुरेद-कुरेद कर ये पक्षी केकड़े, घोंघे, कीट आदि खाते हैं।

बालु जलरङ्क ध्रुव प्रदेशीय पक्षी है। शीत ऋतु में भूमध्य रेखा के परे तक प्रवास करता है। इसके सन्तानोत्पादन-क्षेत्र में कनाडा के ध्रुवीय प्रदेश, उत्तरी ग्रीनलैंड, स्पिट्सबर्गेन तथा साइबेरिया के भाग हैं। आइसलैंड इस क्षेत्र में नहीं आता। यह शीत ऋतु में प्रवास कर दक्षिण अमेरिका के दक्षिणी भाग, दक्षिणी अफ्रीका, पूर्वी द्वीपसमूह तथा आस्ट्रेलिया तक पहुँच जाता है। कुछ पक्षी भूमध्य रेखा के उत्तर भी रह जाते हैं। यह सिन्ध तथा बिलोचिस्तान के समुद्र तट पर प्रवास करता पाया जाता है। अन्यत्र भी भूले-भटके मिल सकता है।

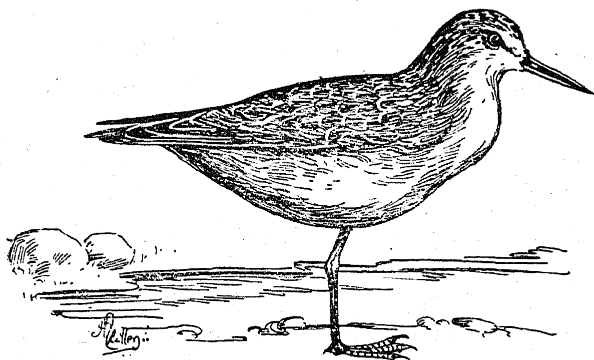
सुवचंचु जलरंका

सुवचंचु जलरङ्का गौरैया के आकार का पक्षी है। इसकी विशेष रूप की चोंच इसकी तुरन्त पहचान करा सकती है। चोंच की लम्बाई औसत रूप की होती है। सिरे पर अकस्मात् मोटी बन गई होती है। इसके शरीर का ऊपरी तल धूमिल भूरे रंग का होता है जिस पर गहरे रंग की रेखाएँ होती हैं। अधोतल श्वेत होता है। पैर तथा चोंच का रंग काला होता है। शीत ऋतु में प्रवास करने आने पर उसका यह रंग होता है जिसमें हमें वह दिखाई पड़ता है। ग्रीष्म ऋतु में यह सन्तानोत्पादन-क्षेत्रों में वापस चला जाता है। उस समय ऊपरी तल पर हल्के बादामी रंग के अंश होते हैं। ग्रीष्म में यह पूर्वी साइबेरिया में पाया जाता है। शीत ऋतु में बंगाल, बर्मा तथा चीन में दिखाई पड़ता है।

जलरंका

स्था० नाम—छोटा पनलोहा, बिरबिरीं

जलरङ्का बहुत ही छोटे आकार का पक्षी है। इसकी लम्बाई छः इंच होती है। क्षुद्रतम जलरङ्कचारी पक्षियों में इसकी गिनती होनी चाहिए।



जलरङ्का

पङ्ख पर श्वेत स्फुट पट्टियाँ होती हैं जो गौण ही होती हैं। चोंच तथा पैर का रंग श्वेत होता है। ग्रीष्म में ऊपरी तल रक्त वर्ण होता है जो काले रंग के धब्बों से चित्रित होता है। शीत ऋतु में ऊपरी तल भस्मीय भूरा रहता है। अधोतल मुख्यतया श्वेत होता है। इसको गिरि जलरङ्क के स्वभाव का समझना चाहिए। इसका आहार कीड़े-मकोड़े, केकड़े, घोंघे, केचुए तथा बीज हैं।

जलरङ्का का सन्तानोत्पादन-क्षेत्र ध्रुवीय योरप (स्पिट्सबर्गेन तथा आइसलैंड छोड़कर) तथा ध्रुवीय एशिया है। शीत ऋतु में प्रवास कर भूमध्य रेखा से परे दक्षिण अफ्रीका तथा सीलोन तक पहुँचता है।

पूर्वीय जलरङ्का

पूर्वीय जलरंका वामन जलरंका की भाँति ही एक उपजाति है किन्तु इसका आकार कुछ बड़ा होता है तथा पैर काले होते हैं। ग्रीष्म ऋतु में इसके गले तथा वक्षस्थल का रङ्ग रक्तिम होता है।

इसकी लम्बाई सवा छः इञ्च होती है। पंख की लम्बाई चार इंच होती है। चोंच वामन जलरङ्का से थोड़ी-सी बड़ी होती है।

पूर्वीय जलरङ्का पूर्वीय पक्षी है। इसका सन्तानोत्पादन पूर्वीय साइबेरिया में होता है। शीत ऋतु में प्रवास कर यह आस्ट्रेलिया तक पहुँचता है। यह बर्मा तथा अंडमन में अधिक पाया जाता है।

दीर्घांगुलि जलरंका

दीर्घांगुलि जलरंका के नाम से ही ज्ञात हो सकता है कि इसकी पादांगुलियाँ लम्बी होती हैं। मध्य पादांगुलि की लम्बाई गुल्फ की लम्बाई से अधिक होती है। शरीर का रङ्ग गहरा भूरा होता है। पार्श्व भाग कुछ हल्के रङ्ग के होते हैं। ग्रीष्म ऋतु में कुछ रक्तिम वर्ण ऊपरी तल पर दिखाई पड़ता है तथा पैरों का रङ्ग पीलापन युक्त भूरा या पीलापन लिये होता है। चोंच का रङ्ग अपेक्षाकृत गहरा होता है।

दीर्घांगुलि जलरंका की लम्बाई छः इञ्च होती है। पङ्ख की लम्बाई चार तथा गुल्फ की लम्बाई पौन इञ्च होती है। चोंच की लम्बाई गुल्फ की लम्बाई से न्यून होती है।

दीर्घांगुलि जलरंका का सन्तानोत्पादन-क्षेत्र पूर्वीय जलरंका-सा पूर्वी साइबेरिया होता है। शीत ऋतु में आस्ट्रेलिया तक प्रवास करने पहुँचता है। यह हमारे देश में बङ्गाल तथा अंडमन में प्रवास करता पाया जाता है। बर्मा तथा सीलोन में भी प्रवास कर जाता है। यह नर्म पङ्क स्थल में रहने का अभ्यस्त है जहाँ उसके पैर की लम्बी उँगलियाँ चलने-फिरने में सुविधा अनुभव करती हैं।

उत्तरापथ जलरंका

उत्तरापथ जलरंका लम्बी पादांगुलियों का ही पक्षी है। किन्तु इसे दीर्घाङ्गुलि तथा अन्य छोटे जलरंकों से पहचान सकने की यह विशेषता होती है कि ऊपरी तल सपाट रूप से मन्द ताम्रवर्ण (तांबे के समान हल्के भूरे रङ्ग) का होता है जिसमें बहुत धूमिल रेखाएँ होती हैं। पूँछ के मध्य भाग को छोड़कर शेष पूर्णतः श्वेत होता है। चोंच काली तथा पैर हल्के हरे होते हैं। ग्रीष्म में ऊपरी तल का रङ्ग हल्का हो जाता है।

उत्तरापथ जलरंका की लम्बाई छः इञ्च, पङ्ख की लम्बाई चार इञ्च तथा चोंच और मुख्यपाद की लम्बाई पौन इञ्च होती है।

उत्तरापथ जलरङ्का का सन्तानोत्पादन-स्थल पूर्वी गोलार्द्ध के उत्तर खण्ड हैं। शीत ऋतु में प्रवास करने के लिए यह बहुत अधिक दक्षिण तथा पूर्व नहीं जाता। उत्तरी अफ्रीका तथा भारत में जाड़े में प्रवास करने पहुँचता है। इसे दक्षिण भारत में दुर्लभ ही कहा जा सकता है; परन्तु उत्तर भारत में पाया जाता है। सीलोन तथा बर्मा में इसका नाम भी नहीं पाया जाता।

वक्षपट्टि जलरंक

वक्षपट्टि जलरङ्क की चोंच कृशकाय तथा सीधी होती है। पूँछ के पर, विशेषता मध्यवर्ती पर नोकीले होते हैं। ऊपरी भूरा होता है। उस पर काली रेखाएँ हो जाती हैं। किन्तु ग्रीष्म ऋतु में ऊपरी भाग प्रायः पूर्णतः काला हो जाता है। चोंच का रङ्ग काला तथा पैर का रङ्ग पीला होता है। इसकी लम्बाई साढ़े आठ इञ्च, पङ्ख की लंबाई साढ़े पाँच इञ्च तथा चोंच की लम्बाई एक इंच होती है।

वक्षपट्टि जलरङ्क एशियाई पक्षी है। इसका सन्तानोत्पादन-क्षेत्र उत्तरी पूर्वी साइबेरिया तथा अलास्का है। शीत ऋतु में यह प्रवास कर न्यूजीलैण्ड तक पहुँचता है। काश्मीर में गिलगिट में इसके नमूने प्राप्त होने का उल्लेख है।

वामन जलरंक

वामन जलरङ्क पक्षी गिरि जलरङ्क से अधिक मिलता है। किन्तु इस का आकार कुछ बड़ा होता है। अपेक्षाकृत लम्बी चोंच होती है जो नीचे की ओर अधिक स्पष्ट रूप से झुकी होती है। पूँछ के अग्रभाग के पर अधिकांशतः श्वेत होते हैं। ग्रीष्म ऋतु में यह ऊपर तथा नीचे रक्तिम वर्ण हो जाता है। वक्षस्थल का काला धब्बा नहीं रहता।

वामन जलरङ्क की लम्बाई साढ़े आठ इंच होती है। पङ्ख की लम्बाई पाँच इंच तथा चोंच की डेढ़ इंच होती है।

वामन जलरङ्क का सन्तानोत्पादन-क्षेत्र उत्तर के उच्च भूभाग हैं। शीत ऋतु में प्रवास कर गिरि जलरङ्क से अधिक दक्षिण आस्ट्रेलिया तक पहुँचता है। यह शीत के प्रारंभ में भारत में पाया जाता है। यह झुंडों में रहता है। परन्तु अधिक नहीं पाया जाता।

गिरि जलरंक

गिरि जलरङ्क बहुत छोटे आकार का पक्षी है। इसकी लम्बाई सात

इंच होती है। यह बालु जलरङ्क से थोड़ा छोटा होता है। चोंच काली, और यथेष्ट लम्बी होती है। वह बिल्कुल सीधी या तनिक नीचे की ओर मुड़ी हो सकती है। पैरों का रङ्ग गहरा जैतूनी होता है। यह दौड़ने में तेज होता है। परन्तु बालु जलरङ्क-सी तेजी नहीं होती। इसके पङ्ख पर श्वेत स्फुट पट्टियाँ तो अवश्य होती हैं। परन्तु वे बालु जलरङ्क से गौण होती हैं। शीत ऋतु में गिरिजलरङ्क का रङ्ग बालु जलरङ्क की अपेक्षा कम उजला दिखाई पड़ता है। इसका रङ्ग भूरापन युक्त धूसर होता है। गले, उदर तथा पूँछ के अधोभाग का रङ्ग श्वेत रहता है। ग्रीष्म में शरीर का रङ्ग बादामी तथा काला हो जाता है। वक्षस्थल के पिछले भाग पर काला धब्बा उत्पन्न हो जाता है।

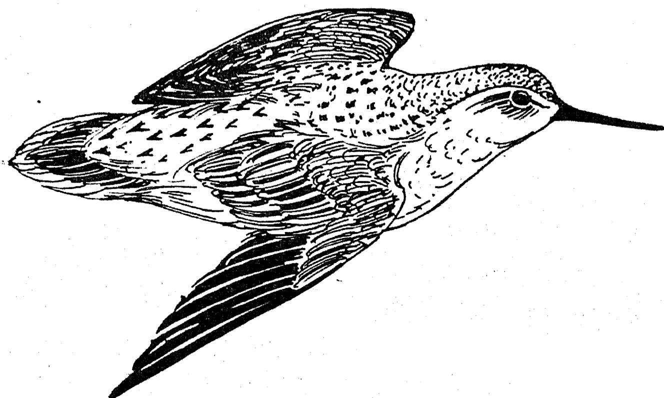
गिरि जलरङ्क की दो उपजातियों में से एक का सन्तानोत्पादन-क्षेत्र बाल्टिक सागर के चारों ओर तथा फैरो और आइसलैंड है। यह उपजाति शीत ऋतु में प्रवास कर उत्तरी अफ्रीका तक जाती है। दूसरी उपजाति का सन्तानोत्पादन-क्षेत्र योरप के ध्रुवीय प्रदेश, साइबेरिया है। इस उप-जति के पक्षी शीत ऋतु में प्रवास कर दक्षिणी अफ्रीका तथा भारत पहुँचते हैं।

पट्टिपुच्छ जलरंक

पट्टिपुच्छ जलरङ्क छोटे पैरों का स्थूलकाय पक्षी है। इसकी चोंच अपेक्षाकृत छोटी, किन्तु सीधी होती है। इसकी पादांगुलियों में आधार स्थल में अंगुलिजाल (अँगुलि बन्धक झिल्ली) नहीं होता। यह बात उसे अन्य बड़े आकार के जलरङ्कों से विभिन्न प्रकट करती है। शरीर का रङ्ग ऊपर हल्का पीला तथा नीचे श्वेत होता है। इससे उसकी पहचान में सहायता नहीं मिल सकती। पूँछ के अग्रखण्ड का रङ्ग श्वेत होता है जिसमें काले रङ्ग की स्फुट पट्टियाँ होती हैं। ग्रीष्म में यह अधिकांशतः रक्तवर्ण हो जाता है। चोंच काली तथा पैर हरेपन रङ्ग के होते हैं। इस

के शरीर की लम्बाई ६ इंच, पङ्ख की लम्बाई ६ इंच तथा चोंच और गुल्फ की लम्बाई एक इंच से कुछ अधिक होती है।

पट्टिपुच्छ जलरङ्क ध्रुवीय पक्षी है। इसका सन्तानोत्पादन-क्षेत्र साइबेरिया के धुर उत्तर भाग के टुंड्रा के भूभाग, स्पिट्ज़बर्गेन, ग्रीनलैंड तथा



पट्टिपुच्छ जलरङ्क

कनाडा के कतिपय ध्रुवदेशीय द्वीप हैं। ग्रीनलैंड तथा उसके पश्चिम पाया जाने वाला रट्टिपुच्छ जलरक्त जलरङ्क की दूसरी उपजाति है। यह शीत ऋतु में प्रवास कर काला सागर उत्तरी तथा पश्चिमी अफ्रीका तथा अरब सागर के चारों ओर के देशों तक पहुँचता है। भारत में भी इसके प्रवास करने आने के प्रमाण उपलब्ध हैं।

पृथुचंचु जलरंक

पृथुचंचु की चोंच चौड़ी चपटी तथा सिरे पर झुकी होती है। शरीर का रंग गहरा भूरा होता है, साथ ही आँखों पर स्पष्ट श्वेत पट्टी होती है। पैरों का रंग भूरा होता है जिसमें हल्के हरे रंग के छींटे होते हैं।

पृथुचंचु जलरङ्क की लम्बाई सात इञ्च, पङ्ख की लम्बाई चार इंच तथा गुल्फ की लम्बाई केवल एक इंच होती है। चोंच की लम्बाई एक इंच से अधिक होती है।

पृथुचंचु का सन्तानोत्पादन-क्षेत्र पुरानी दुनियाँ के उत्तरी भूभाग हैं। शीत ऋतु में प्रवास कर दक्षिण भूभागों में जाता है। भारत में अधिक संख्या में इन पक्षियों को प्रवास करते नहीं पाया जा सकता। वे थोड़ी संख्या में ही हमारे देश में प्रवासी रूप में आते हैं।

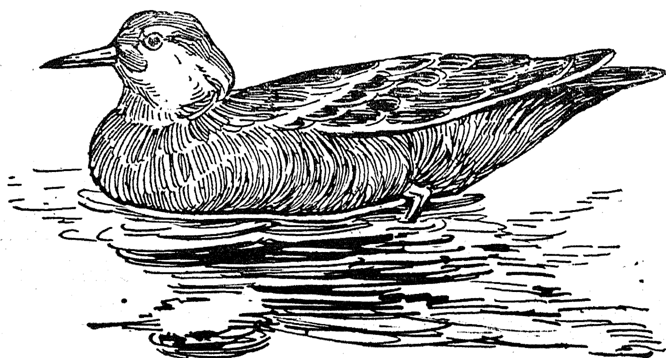
धूसर जलप्रिय (कालशीर्ष धूसर चर्मपाद)

धूसर जलप्रिय छोटे आकार रखता है। आठ इञ्च लम्बा शरीर होता है। चोंच पीली, सिरे पर काली तथा रक्तप्रिय से अधिक छोटी और चौड़ी होती है। ग्रीष्म ऋतु में सारा अधोतल बादामी, मुख के पार्श्व उजलापन युक्त, होते हैं। पीठ पर भूरी, हल्के पीले तथा बादामी रंग की पट्टियाँ होती हैं। सन्तानोत्पादन ऋतु में मादा का रंग नर की अपेक्षा भड़कीला रहता है। शीत ऋतु में रक्तग्रीव जलप्रिय से इसे भिन्न ज्ञात कर सकना कठिन होता है। बालु जलरङ्क से भी विभेद करना कठिन होता है। आकार से भी भेद समझने में सहायता नहीं प्राप्त हो सकती। चोंच के रूप तथा आकार से पहचान में सहायता मिलती है। यह रक्त जलप्रिय से अधिक एक रूपरंग की धूसर पीठ प्रदर्शित करता है। पङ्ख की श्वेत आड़ी पट्टी भी उसकी अपेक्षा गौण होती है। इन दोनों जलप्रिय पक्षियों की आँखें शीत ऋतु में काली रेखा युक्त होती हैं। बालु जलरङ्क में वैसा रूप नहीं होता। इनका शरीर अधिक कृशकाय होता है। बालु रङ्क कभी तैरता नहीं पाया जाता।

धूसर जलप्रिय का आहार केकड़े, घोंघे, कीट आदि हैं जिन्हें जल के ऊपर या पेंदे से ढूँढ़ लेता है। भूमि पर से इन्हें चुन कर खाता है।

बीज भी खाता है। सन्तानोत्पादन-काल में एकाकी रहता है परन्तु अन्य समय में झुंडों में पाया जाता है।

धूसर जलप्रिय ध्रुवीय देश में सन्तानोत्पादन करता है। टुंड्रा प्रदेश में ध्रुवीय क्षेत्र के तटों तथा द्वीपों के जल भण्डारों में सन्तानोत्पादन-स्थल



धूसर जलप्रिय

है। आइसलैंड उस क्षेत्र में है किन्तु स्कैंडिनेविया तक में भी सन्तानोत्पादन नहीं करता। शरद् ऋतु में प्रवास कर दक्षिणी गोलार्द्ध तक अफ्रीका तथा दक्षिणी अमेरिका के तटों तक जा पहुँचता है। इस पक्षी को भारत में प्रवास करने का प्रमाण है। एक पक्षी यहाँ पाया गया था जिसकी खाल कलकत्ता संग्रहालय में रक्षित थी।

रक्तग्रीव जलप्रिय

रक्तग्रीव जलप्रिय छोटे आकार का पक्षी है। इसकी लम्बाई ६ इंच होती है। चोंच काली, लम्बी तथा पतली होती है। धूसर जलप्रिय की चोंच इससे कुछ मोटी तथा कम लम्बी होती है। ग्रीष्म में अधोतल तथा कण्ठ श्वेत रहता है। पीठ का रंग स्लेटी धूसर और अग्रवक्षस्थल तथा ग्रीवा के पार्श्व में नारंगी पट्टी होती है। सन्तानोत्पादन ऋतु में नर की

अपेक्षा मादा का रंग भड़कीला होता है। शीत ऋतु में धूसर (खाकी) जलप्रिय से इसका भेद जान सकना कठिन होता है। धूसर जलप्रिय की अपेक्षा पीठ अधिक धूसर होती है तथा श्वेत खड़ी रेखाएँ अधिक होती हैं। रङ्ग की एकरूपता न्यून होती है। पङ्ख अधिक धूसर होता है तथा पङ्ख पर की स्फुट श्वेत आड़ी पट्टियाँ अधिक प्रमुख होती हैं। रक्तग्रीव जलप्रिय तैराक पक्षी है। पानी हिलोर कर भक्ष्य जन्तु ढूँढ़ लेता है। इसका आहार तैरते रहने पर कीट, घोंघे, और केचुए होते हैं। यह बीज भी खाता है।

यह ध्रुवीय तथा उपध्रुवीय प्रदेश में सन्तानोत्पादन करता है। ध्रुवीय वृत्त के चारों ओर उत्तरी अटलांटिक तथा उत्तरी पैसिफिक तक इसके सन्तानोत्पादन-क्षेत्र हैं। आइसलैंड, फैरो द्वीप, स्कैंडिनेविया तथा इङ्गलैण्ड के भी कुछ भागों में इसका सन्तानोत्पादन-क्षेत्र है। यह धूसर जलप्रिय की तरह ही शीत ऋतु में दक्षिणी गोलार्द्ध के समुद्र तटों तक प्रवास करता है किन्तु भूमध्य रेखा तक कभी-कभी ही पहुँचता है। उससे भी दक्षिण के क्षेत्र में इसका प्रवास करना बहुत ही अपवाद स्वरूप बात हो सकती है। योरोप में उत्पन्न पक्षी पश्चिमी अफ्रिका तक जाते हैं। भारत में यह पश्चिमी समुद्र तट पर पाया जाता है। पूर्वीय समुद्र तट पर मद्रास तक दिखाई पड़ता है।

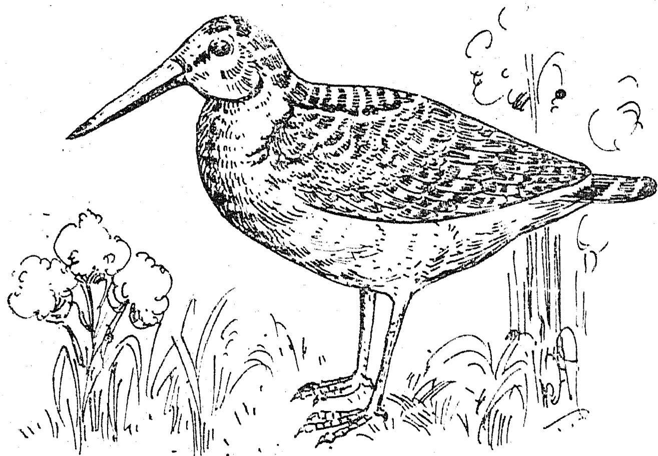
भण्डु तित्तिर (धूसर आरामुख)

स्था० नाम—खिमतीतर, तूनीतर (हिन्दी), सिमकुकरा (कमायूँ), चिनजरोले (चंबा)

भण्डु तित्तिर का आकार तीतर पक्षी समान होता है। इसकी लंबाई चोंच छोड़कर १४ इञ्च होती है। चोंच की लम्बाई तीन इञ्च होती है। तीतर की अपेक्षा इसका सिर बड़ा तथा चोंच लम्बी होती है। इसकी चोंच सीधी होती है। शरीर पुष्ट होता है। पीठ का रङ्ग काले तथा भूरे

धब्बों से विभिन्न होता है। अधोतल में धुँधले पीले रङ्ग पर गहरे रङ्ग की आड़ी पट्टियाँ होती है। उड़ान के समय मुख से शब्द नहीं निकालता। इसके पङ्ख का आकार उड़ते समय गोल दिखाई पड़ता है। यह जङ्गल में रहने वाला पक्षी है मैदानी भागों में यह सीधी उड़ान करता है। परन्तु बन में पेड़ों पर रमता उड़ता है। सन्ध्या तथा प्रातः काल आहार ढूँढ़ता है। चोंच से नर्म मिट्टी में चारा खोजता रहता है। केचुये इसके मुख्य आहार हैं किन्तु कीड़े, मकोड़े, घोंघे, तथा बीज आदि भी खाता है।

भंडु तित्तिर की आँख का कवियों ने उल्लेख किया है। उनका कथन है कि आँखों के कारण इसे तुरन्त पहचाना जा सकता है। इसके नर



भण्डु तित्तिर

और मादा का रूप समान होता है। योरोपीय भंडु तित्तिर की अपेक्षा भारतीय भण्डुतित्तिर कुछ छोटा होता है। योरोपीय पक्षी का तोल आधा सेर के लगभग होता है किन्तु भारतीय पक्षी का तोल डेढ़ पाव के लगभग ही होता है। साधारण भण्डु तित्तिर योरोप तथा एशिया में सर्वत्र पाया

जाता है। शरद् ऋतु में दक्षिण भागों में प्रवास करता है। यह भारत में पर्वतमाला में दस हजार फुट से अधिक ऊँचाई की पट्टी में सर्वत्र सन्तानोत्पादन करता है। शीत ऋतु में नीचे उतर आता है। दक्षिण भारत, सीलोन तथा बर्मा में पर्वतों तक भी प्रवास करने चला जाता है। नवम्बर मास में यह नीचे उतर आता है तथा मार्च में प्रवास से पुनः वापस चला जाता है। हिमालय में जून मास में यह अण्डे देता है। एक ऋतु में चार अण्डे दिये जाते हैं। अण्डों की लम्बाई डेढ़ इञ्च होती है। इसका रङ्ग हल्के पीले से लेकर लाल मिश्रित हल्के भूरे रङ्ग तक होता है जिस पर लाल भूरे तथा बैंजनी खाकी रङ्ग के धब्बे होते हैं।

अण्डे से बच्चे उत्पन्न हो जाने पर मादा किसी भय की आशङ्का होने पर उन्हें बचाने या किसी चारा मिलने के उपयुक्त स्थान तक ले जाने के लिए बड़े साहस का काम करती है। वह अपने जाँघों में दबा कर चोंच तथा पैर का भी सहारा देकर ले उड़ती है। बड़े आकार के बच्चे भी वह इस प्रकार लटका कर उड़ा ले जाने में समर्थ होती है। यह उसके पङ्खों की पुष्टता का प्रमाण है।

भण्डु तित्तिर को कीड़े-मकोड़े खिला कर चिड़ियाघरों में पाला जाता है परन्तु दूध, रोटी या चावल खाकर रहने के भी उदाहरण पाये जाते हैं।

वन पंककीर (वन गोभंडीर)

स्था० नाम—बनचहा (नेपाल)

वन पङ्ककीर या बनचहा बड़े आकार का पङ्ककीर है। इसका रङ्ग काला होता है। चोंच, पङ्ख तथा दुम कुछ छोटी होती हैं। मुख्य पङ्ख चौड़ी तथा मृदु होती है। दुम में दोनों ओर चार मृदु पर होते हैं। मध्य के जोड़ पर चौड़े होते हैं। दुम में कुल चौदह पर होते हैं। इसके शरीर का ऊपरी तल काला तथा धुँधले पीले मिश्रित रङ्ग का होता है। मुख्य पङ्ख के पर गहरे भूरे होते हैं। चोंच सिरे पर गहरी भूरी किन्तु आधार

स्थल की ओर धुँधली होती जाती है। पैरों का रङ्ग खाकी होता है जो पीछे की ओर रक्तवर्ण होता है।

वन पङ्कीर की लम्बाई एक फुट होती है। चोंच की लम्बाई ढाई इञ्च तथा पङ्ख की लम्बाई साढ़े पाँच इञ्च होती है। गुल्फ साधारण चहा से कुछ लम्बा होता है। इस पक्षी का आकार प्रकार, रङ्ग रूप भंडु तित्तिर तथा अन्य पङ्कीरों का मध्यवर्ती होता है। यह भारत का ही पक्षी है। अन्यत्र नहीं पाया जाता। हिमालय पर्वतश्रृंखला में छः हजार तथा दस हजार फीट की ऊँचाई के मध्य ग्रीष्मकाल में पाया जाता है। आसाम के दक्षिण मणिपुर की पहाड़ियों तथा कभी-कभी बर्मा में तनासेरिम तक पाया जाता है। शरद् ऋतु में दक्षिण भारत की पहाड़ियों पर देखा जाता है। भूले भटके रूप में अन्यत्र भी यह मिल जाता है। यह बड़ा लज्जालु पक्षी है। कठिनाई से ही दिखाई पड़ता है, यह दृढ़तापूर्वक किन्तु मन्द गति से उड़ता है। इसका स्वभाव एकाकी रहने का ही है। जंगलों के पास उथले जल भागों में इसे अड्डा जमाए पाया जाता है। यह छोटे-मोटे कीड़े तथा नवजात कीट खाता है। जङ्गली झरबेरियाँ भी खाता जान पड़ता है।

प्राच्य एकल पंककीर

स्था० नाम—बनचहा (हिन्दी)

प्राच्य, एकल पंककीर को भी बनचहा कह कर लोग पुकारते हैं। यह भी बड़ा चहा है। इसकी लम्बाई एक फुट से तनिक अधिक होती है। पङ्ख की लम्बाई साढ़े छः इञ्च तथा चोंच की लम्बाई पौने तीन इंच होती है। गुल्फ की लम्बाई डेढ़ इंच होती है। शङ्कु पङ्कीर का रूप इससे मिलता है। उसके गुल्फ की लम्बाई भी इतनी ही होती है किन्तु उसके शरीर के नमूने पर इसका बड़ा आकार होता है। ऊपरी तल पर काले हल्के पीले तथा श्वेत रङ्ग के धब्बों की खिचड़ी सी बनी

होती है। अन्य पङ्कीरों की अपेक्षा इसके शरीर के ऊपरी तल में श्वेत रंग अधिक होता है। अधोतल में वक्षस्थल के परे श्वेत रङ्ग पर पार्श्व भागों में गहरे भूरे रङ्ग की स्फुट पट्टियों की पंक्तियाँ होती हैं।

एकल पङ्कीर की चोंच लम्बी तथा उदर भाग श्वेत होने से इसे वन पङ्कीर से विभिन्न समझ लेना सरल है। इसको वन पंककीर के समान अन्य रूपों में देखकर भी इन विशेषताओं से पहचान लिया जाता है। इन दोनों पक्षियों को साथ देखने का एक बार अवसर मिल जाने पर दोनों के पहचानने में भ्रम नहीं हो सकता।

प्राच्य एकल पंककीर पूर्वी एशिया का पक्षी है। पूर्वी मध्य एशिया से जापान तक इसका प्रसार है। हमारे देश में हिमालय में सर्वत्र यह पक्षी निवास करता है। शरद् ऋतु में पाकिस्तान में बिलोचिस्तान तथा भारत में गारो तथा खासी पहाड़ियों (आसाम) में प्रवास कर रहता है। कभी-कभी अन्यत्र भी देखा जाता है। उड़ान के समय इसे देख शङ्कु पङ्कीर होने का भ्रम हो जाता है। इसकी उड़ान तथा गतिविधि शङ्कु पङ्कीर से मिलती है। यह नवजात कीट और अन्य कीड़े खाता है। मैदानी भागों में चारा चुगते इसे देखा जाता है। मई में हिमालय में एकल पङ्कीर अण्डे देता है। इसके अण्डे विशेष रङ्गीन होते हैं। उनका रङ्ग गुलाबीपन युक्त हल्का पीला तथा खैरे तथा बैंजनी रङ्ग के धब्बों युक्त होता है।

प्रख्यात या व्यजनपुच्छ पंककीर

स्था० नाम—चहा, चहा चिड़िया (उत्तर प्रदेश), चेग्गा, खड़ा कोचा (बंग) तिबुड़, पनलवा (महा०) लिक पखी (सिंध), भारक (नेपाल), चेक लोंबी (मैनपुरी),

साधारण चहा ही प्रख्यात या व्यञ्जनपुच्छ पङ्कीर नाम से पुकारा जाता है। यह पङ्कीरों में सबसे अधिक व्यापक रूप से प्रसारित पक्षी

है। इसके शरीर के ऊपरी तल का रंग काला तथा हल्का पीला का मिश्रण होता है। सिर पर तीन पीले रंग की खड़ी पट्टियाँ होती हैं। एक तो मध्य भाग से नीचे जाती है तथा अन्य दो आँखों के ऊपर होती हैं। पीठ पर पीछे भी दो धुँधले पीले रंग की खड़ी पट्टियाँ होती हैं। पूँछ पर कुंकुमे रंग (दारु सितोदर या पीत रक्त) की आड़ी पट्टी छोर के पूर्व होती है। वक्षस्थल के परे अधोतल श्वेत तथा पार्श्व मटमैली स्फुट पट्टियों की पंक्तियों युक्त होता है। पंखों पर भी किनारी को गहरे भूरे तथा श्वेत रंग की स्फुट पट्टियों की पंक्तियों युक्त पाया जाता है किन्तु स्फुट पट्टी विहीन एक श्वेत धब्बा का स्थल भी होता है। मुख्य पंख के परों में वाह्य जाल श्वेत होता है। ये विशेषताएँ इसकी मुख्य पहचान हैं।

पङ्ककीर की लम्बाई चोंच छोड़कर आठ इंच होती है। चोंच ढाई इंच लम्बी होती है। चोंच को उड़ते समय भी स्पष्ट देखा जा सकता है। वह बड़ी लम्बी तथा सीधी होती है। यह भण्डु तित्तिर से कुछ कृश रूप का होता है। इसके शरीर का रंग भण्डु तित्तिर की तरह धब्बों युक्त न होकर व्यवस्थित रूप से रंगीन स्फुट पट्टियों से सज्जित प्रतीत होता है। माथे पर एक मध्यस्थ हल्की पीली पट्टी होती है। कड़े शब्द उच्चारित कर भूमि से उठता है तथा टेढ़े-मेढ़े रूप में उड़ता है। उड़ान के समय इसके पंख नोकीले प्रतीत होते हैं। सन्ध्या वेला तथा प्रातःकाल ही आहार ढूँढ़ता है। कीच में केचुए ढूँढ़ता रहता है। किन्तु कीड़े, घोंघे, केकड़े, तथा बीज भी खाता है। शीत ऋतु में यह १०० तक के झुंड में पाया जाता है।

इस चहा की चोंच सिरे की ओर स्थूल बनी होती है तथा दुम चौदह या सोलह परों युक्त होती है। इसके शरीर के रंग में कुछ विभिन्नताएँ भी पाई जाती हैं।

योरप तथा एशिया में भंडु तित्तिर के सन्तानोत्पादन क्षेत्रों में यह

भी अण्डे देता है। भंडु तित्तिर ध्रुवीय क्षेत्रों या उष्ण भागों में सन्तानोत्पादन नहीं करता, किन्तु पङ्ककीर उत्तर ध्रुवीय क्षेत्र तथा भंडु तित्तिर के सन्तानोत्पादन क्षेत्र से कुछ दक्षिण तक स्पेन पुर्तगाल आदि में भी अण्डे देता है।

साधारण चहा पुरानी दुनिया के अधिकांश स्थलों में पाया जाता है। शीत ऋतु में उत्तरी अफ्रीका, दक्षिणी योरप तथा भारत में प्रवास करता है। दक्षिण भारत, आसाम, बर्मा आदि में अल्प संख्या में ही प्रवासी पाया जाता है। अगस्त तक नीचे उतर आता है और मई तक मैदानी भागों में रहता है। किन्तु साधारणतया सितम्बर से मार्च तक ही मैदानी भागों में पाया जाता है। यह पंक से आहार प्राप्त करता है। पानी वक्ष से छुलाना नहीं चाहता। नर्म कीचड़ से सहज आहार निकाल सकने का स्थल इसे प्रिय है।

साधारण चहे का आहार जलीय कीट तथा कवचीय मत्स्य आदि हैं। प्रातः तथा सन्ध्या की गोधूलि बेला में ही इसे अधिक क्रियाशील पाया जाता है। रात को भी आहार ढूँढ़ता पाया जा सकता है। परन्तु दिन को घास-पात में सुस्त पड़ा ही रहता है। यदि भोजन यथेष्ट हो तो पानी में तट से दूर भी तैरते घास-पात के मध्य बैठा रह सकता है। भारत में इन्हें कभी वृक्षों पर बैठते नहीं देखा जा सकता। केवल पर्वतीय भागों, उत्तर एशिया, या योरोपीय देशों में सन्तानोत्पादन ऋतु में यह वृक्ष पर आसन जमा सकता है। यह मादा को आकर्षित करने ऊपर आकाश में उठ जाता है तथा उच्च स्वर कर पंखों को फैलाए अकस्मात् तीव्र गति से नीचे उतरने लगता है। उस समय इसको कुछ शब्द उत्पन्न करते पाया जाता है। कदाचित् दुम का वायु से सङ्घर्ष होने से वह शब्द सनसनाहट सा उत्पन्न होता है। उस समय मुख से शब्द नहीं निकालता। किन्तु उतरने के बाद ही उड़ान प्रारम्भ करने पर पुनः

दूने स्वर से मुख से ध्वनि उत्पन्न करना प्रारम्भ कर देता है। कोई खटका होने पर मादा भी सनसनाहट का शब्द उत्पन्न करती है।

भारत में साधारण चहा काश्मीर तथा संथाल परगना में सन्तानोत्पादन करता है। यह कहीं घास-पात में प्यालीनुमा छेद बनाकर घोंसले का काम लेता है। उनमें चार अण्डे देता है। अण्डों का रंग धूमिल हरा होता है जिस पर अनेक प्रकार के भूरे रंगों के धब्बे होते हैं। बड़े छोरों पर वे बहुत गोल तथा छोटे छोरों पर अत्यन्त नोकीले होते हैं। उनकी लम्बाई एक इंच होती है। इतने छोटे पक्षी के लिए ऐसा अण्डा बहुत बड़ा कहा जा सकता है।

वृहद पंककीर

वृहद् पंककीर बड़े पहाड़ी चहा के आकार का पक्षी है। यह व्यञ्जन पुच्छ पंककीर के रंग रूप का होता है। इसकी पूँछ पंककीर सी होती है, परन्तु चोंच पतली तथा अपेक्षाकृत अधिक छोटी होती है। पैर भी छोटे होते हैं। आकार में यह पक्षी व्यञ्जन पुच्छ से बड़ा होता है फिर भी चोंच उससे छोटी और पतली होती है। इन लक्षणों से इसकी पहचान हो सकती है। एक और भी उल्लेखनीय विशेषता है। इसकी दुम के परों में बाह्य तीनों जोड़े पर श्वेत होते हैं। केवल आधार स्थल पर तनिक काले होते हैं। शिशु पक्षी में भी यही रंग होता है किन्तु उस पर गहरे भूरे रंग की स्फुट आड़ी रंगीन पट्टियाँ भी होती हैं। मुख्य भूमि श्वेत ही रहती है किन्तु व्यञ्जनपुच्छ में यह बादामी रंग की होती है। वृहद् पंककीर की लम्बाई ६ इंच तथा चोंच की लम्बाई ढाई इंच होती है।

वृहद् पंककीर पाश्चात्य पक्षी है। यह योरप तथा एशिया के उत्तर प्रदेशों में यनीसी नदी तक बाल्टिक, स्कैंडिनेविया से लेकर पूर्वी एशिया तक सन्तानोत्पादन क्षेत्र रखता है। वहाँ इसे व्यञ्जनपुच्छ की अपेक्षा बहुसंख्यक पाया जाता है। शीत ऋतु में प्रवास करने के लिए

अफ्रीका तथा दक्षिणी योरप तक पहुँचता है। ईरान तथा भारत में भी इसके प्रवास करने के प्रमाण उपलब्ध हैं।

शंकु पंककीर

स्था० नाम—पंककीरों के ही नामों से यह भी पुकारा जाता है। बर्मा में इसकी जाति म्याय वूट कही जाती है। वहाँ इस जाति की प्रधानता है।

शंकु पंककीर देखने में व्यजनपुच्छ पंककीर (साधारण चहा) सा ही प्रतीत होता है केवल रंग कुछ धुँधला पाया जाता है किन्तु इन दोनों में अनेक उल्लेखनीय अंतर होते हैं। शंकु पंककीर की चोंच उतनी लंबी नहीं होती। सिरे पर स्थूल भी नहीं बनी होती। दुम भी व्यजन पुच्छ पंककीर से छोटी होती है। इसकी दुम में परों की संख्या भी अधिक होती है। छब्बीस पर तक शंकु पंककीर की दुम में पाए जाते हैं। उनमें केवल दस मध्यवर्ती पर ही व्यजनपुच्छ समान चौड़े तथा मृदु होते हैं। वाह्य परों के दल कांटों समान ही होते है। इसलिए इसका नाम शंकु पंक-कीर या कंटकपुच्छ पंककीर हैं। किन्तु दुम के परों की संख्या निश्चित नहीं समझना चाहिए। उसमें विभिन्नता भी होती है किन्तु वाह्य तल के परों से इसका नाम सदा ही सार्थक पाया जाया है।

शंकु पंककीर के मुख्य पङ्ख के परों का रङ्ग पूर्णतः भूरा होता है किन्तु व्यजन पुच्छ में उस में श्वेत किनारे भी होती है। शङ्कु पङ्ककीर के पङ्ख की किनारी सर्वत्र स्फुट रङ्गीन पट्टियों से मंडित होती है। उसमें श्वेत धब्बों का स्थल भी नहीं होता। अन्य बातों में शङ्कु पङ्ककीर को व्यजनपुच्छ के सामान रङ्ग रूप रखते पाया जाता है। परन्तु शङ्कु पङ्क कीर के रङ्गों में अधिक हेर फेर पाया जा सकता है। उसके अधोतल को पूर्ण तथा स्फुट रङ्गीन पट्टियों से मंडित देखा जा सकता है।

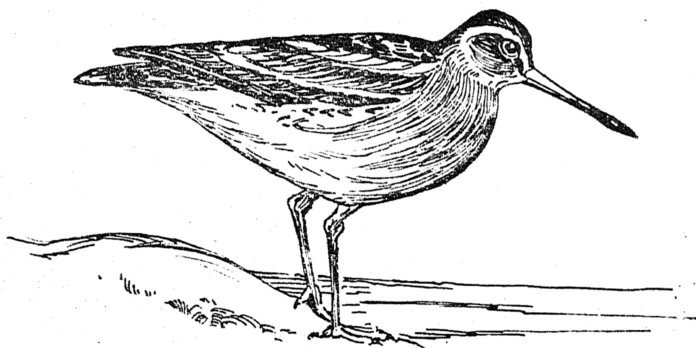
शङ्कु पङ्ककीर पूर्वीय देशों का ही पक्षी है। पाश्चात्य देशों में नहीं पाया जाता। पूर्वी एशिया में यनीसी नदी से लेकर पैसिफिक सागर तक

इसका सन्तानोत्पादन क्षेत्र है । यह शीत ऋतु में मलाया तथा भारत में आकर प्रवास करता है । उत्तर तथा पश्चिम भारत में यह अलभ्य पक्षी है । दक्षिण तथा पूर्व भारत, बर्मा आदि में बहुसंख्यक प्रवासी रहता है । व्यजनपुच्छ पङ्कीर के पूर्व ही आता तथा उसके बाद जाता है । कदाचित भूले भटके पक्षी अंडा देने के लिए आसाम की ओर रह भी जाते हैं । इसके अन्डे व्यजनपुच्छ से होते हैं ।

अर्द्ध पंककीर (द्विपद्दि पंकिल)

स्था० ना छोटा चहा (हिन्दी,) तिबुड, पनलवा (महा०)

अर्द्ध पङ्कीर या छोटा चहा को उसके छोटे आकार के कारण अन्य पङ्कीरो (चहा) से पृथक पहचान लेना सरल है । इसकी दुम में बारह पर होते हैं । वे नोकीले होते है । किन्तु साधारण चहा की तरह ही मृदु होते हैं । रंग में यह पक्षी व्यजनपुच्छ से मिलता है । किन्तु इसके सिर पर



अर्द्ध पङ्कीर

मध्यवर्ती रंगीन पट्टी नहीं होती । इसकी पीठ का रंग हरे तथा बैंजनी (नीलारुण) का मिश्रण होता है । ऐसा रंग किसी भी अन्य पङ्कीर का

नहीं होता। सिर पर दो ही रंगीन पट्टियाँ होने से इसकी जाति का नाम द्विपट्टि पंकिल पड़ा है।

अर्ध पङ्ककीर की लम्बाई चोंच छोड़कर सात इंच, पङ्ख की चार इंच, दुम की दो इंच, गुल्फ की एक इंच तथा चोंच की लंबाई डेढ़ इंच होती है। इसकी चोंच अन्य पङ्ककीरों से अपेक्षाकृत स्थूल तथा छोटी होती है।

अर्द्धपङ्ककीर को व्यजनपुच्छ की अपेक्षा अधिक उत्तर देशीय कहा जा सकता है। यह सन्तानोत्पादन के लिए उत्तरी ध्रुव वृत्त के भी परे चला जाता है। उतने शीत भूभाग में योरप तथा एशिया के ध्रुवीय देशों में इसे अंडे देते देखा जा सकता है। शीत ऋतु में प्रवास करने के लिए दक्षिण चला आता है। उत्तरी अफ्रिका, भारत आदि इसके प्रवास स्थान है। चीन में भी इसे प्रवास करने के लिए पहुँचा देखा जाता है। बर्मा के दक्षिण भाग तथा सीलोन में यह नहीं पाया जाता परन्तु ऐंडमन द्वीप जाने के प्रमाण हैं। उत्तरी भारत में यह सर्वत्र फैला मिलता है किन्तु व्यजनपुच्छ तथा शंकु पङ्ककीर समान बहु संख्यक नहीं मिलता।

अर्द्ध पङ्ककीर एकाकी वृत्ति का है। उपयुक्त पंककीरों से यह विशेषता उसमें होती है। घने वृक्षों में छिपा होता है। एक स्थान पर ही रहना पसंद करता है। मैदानी भाग के नदी या जलाशय तट रुचिकर नहीं। सूखी भूमि भी पसंद नहीं करता। केंचुए, कीड़े, कवचीय मत्स्य तथा वानस्पतिक पदार्थ खाता है।

—:०:—

मत्सरङ्क वंश

भारत कपर्दिक मीनरंक

स्था० नाम—करियाला, किलकिला (हि०) फटका, मछरङ्गा,
करिकटा (वङ्ग०)

आकार—पङ्ख—५ या ५$\frac{3}{4}$ इञ्च, पूँछ—३ इञ्च, गुल्फ—लगभग $\frac{1}{2}$ इञ्च, चोंच—२ या २$\frac{1}{2}$ इञ्च ।

कपर्दिक या चित्रित मीनरंक (किलकिला) का आकार मैना तथा कबूतर के मध्य का होता है । यह स्फुट आड़ी पट्टियों तथा धब्बों के श्वेत तथा कृष्ण रङ्गों से सज्जित होता है । इसकी चोंच पुष्ट तथा सङ्गीन समान होती है । मादा का रङ्ग कुछ भिन्न होता है, किन्तु बहुत कुछ रङ्ग मादा समान ही होता है । यह अकेले या जोड़े रूप में नदियों, तालाबों आदि के निकट चट्टानों पर बैठा या जल के ऊपर मँडराता मिल सकता है ।

इसका प्रसार सारे भारत में है । बिलोचिस्तान, काश्मीर, बर्मा, हिन्द चीन तथा दक्षिणी चीन तक पाया जाता है । यह किसी भी खुले मैदान में मिल सकता है जहाँ जलखण्ड हो । यह ज्वारभाटा वाली नदियों, तालाबों, नहरों तथा सड़क के पार्श्ववर्ती खड्डों तक से मछली पकड़ता है । इसका आहार जलजन्तु विशेषतया क्षुद्र मत्स्य हैं किन्तु यह छोटी मेढकी, अल्पवय मेढक, तथा अन्य जलजन्तु भी खाता है । अन्य मीनरंक जहाँ किसी वृक्ष की डाल पर से पानी में शिकार पकड़ने के लिए कूद कर डुबकी लगा लेते हैं, वहाँ यह जल के तल से दस से लेकर तीस फुट की ऊँचाई तक मँडराता रहता है और कोई मछली दिखाई पड़ते ही

पानी के तल पर कूद पड़ता है। प्रायः पानी के भीतर तक भी गहराई तक चला जाता है। उड़ते समय बराबर शब्द किया करता है।

इसका जननकाल शीतकाल में अक्तूबर से अप्रैल तक है। प्रायः दो बार अण्डे देता है। इसका विवर नदी के कगारों में ही सदा बना होता है। विवर दो से लेकर छः फुट तक गहरा होता है। एक पर्यवेक्षक ने एक द्वार के ही विवर के दो फुट फैले गड्ढे में तीन जोड़े पक्षियों को अण्डा देते देखा था। नग्न रेत पर चार, पाँच छः अण्डे तक एक बार में देता है। अण्डे श्वेत रङ्ग के होते हैं।

प्रख्यात भारत मीनरङ्क

स्था० नाम—छोटा किलकिला, निक्का या निटा मछराल (हि०) खण्ड् खण्ड् या (महारा) छोटा मशरङ्गा (वङ्ग०), दाव नाट् काशित्रा (कच्चरी)

आकार—पङ्ख—३ इञ्च, पूँछ—$१\frac{१}{४}$ इञ्च, गुल्फ—$\frac{१}{३}$ इञ्च, चोंच—$१\frac{१}{२}$ इञ्च।

प्रख्यात भारत मीनरंक (छोटा किलकिला) का आकार गृहकुलिंग (घरेलू गौरैया) के बराबर होता है। इसका रङ्ग नीला हरा संयुक्त होता है। अधोतल का रङ्ग गहरे मटमैले लाल (मुर्चे के रङ्ग) रङ्ग का होता है। पूँछ छोटी और ठूँठ समान होती है। चोंच लम्बी, नुकीली तथा सीधी होती है। नर और मादा का रङ्ग रूप समान होता है। यह सोतों, तालाबों या गंदली तलैया (गड़ही) के निकट अकेले रहता है। जल खण्ड के पास किसी वृक्ष की शाखा पर बैठा या जल के तल के बिल्कुल निकट उड़ता दिखाई पड़ता है।

भारत मीनरंक का प्रसार बङ्गाल, आसाम, बर्मा, हिन्दचीन से लेकर जापान तथा कोरिया तक है। दक्षिण में फिलीपाइन, मलाया, सुमात्रा और बोर्नियो तक है। भारत में उड़ीसा तथा दक्षिण भारत के शुष्क

भूभागों, और उत्तरी पूर्वी मध्य प्रदेश नेपाल, सिक्किम तक है। यह सिन्ध तक भी फैला पाया जाता है। हिमालय की तराई में गढ़वाल तथा कमायूँ में कदाचित् रहता है।

दक्षिण भारत में सिंहल मीनरंक होता है जो दूसरी उपजाति है। एक तीसरी उपजाति पारसीक मीनरंक की होती है जो पश्चिम के भाग में अफगानिस्तान, ईरान, पाकिस्तान तथा काश्मीर तक पाई जाती है, परन्तु शीतकाल में भारत के मैदानी भाग में भारत मीनरंक के साथ मिली-जुली मिलती है। दोनों की मध्यवर्ती नस्लें भी मिलती हैं। हिमालय के ऊँचे पर्वतों के मीनरंक कदाचित् पारसीक जाति के हों।

भारत मीनरंक का जननकाल नीची पहाड़ियों में मई जून और मैदानों में मार्च से मई तक है। नदियों और सोतों के कगारों में छोटे विवर एक फुट से लेकर चार फुट तक गहरे बनाते हैं। अण्डा देने के स्थान में बिना पचे मत्स्य अस्थियाँ, कूड़ा कबाड़ पक्षी द्वारा निःसृत पड़ा रहता है और बड़ा बदबू करता है।

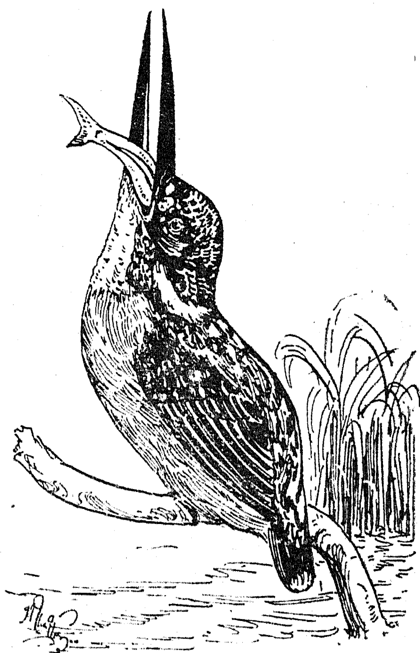
रेखिशीर्ष मीनरंक

स्था० नाम—दाव नातू देदाव (कच्चरी)

आकार—पङ्ख—पौने चार या चार इञ्च, दुम—२ इञ्च से कुछ कम, गुल्फ—आधा इञ्च से कम, चोंच—दो इञ्च।

यह भाल से पिछली गर्दन तक कलौंछ होता है। प्रत्येक पर (पतत्र) की छोर पर नीलापन युक्त पट्टी होती है, तथा केन्द्रीय रूप में एक नीला धब्बा होता है। पीठ तथा कटि प्रदेश चमकीला मटमैला नीला होता है। ऊपरी पुच्छ-आच्छादक वैसे ही किन्तु अधिक गहरे रङ्ग का होता है। पूँछ कलौंछ होती है। पङ्ख कलौंछ होते हैं। नेत्रपटी (नेत्र के सम्मुख मुख का भाग) कलौंछ होती है और आँख के निकट ही मटमैले हल्के पीले रङ्ग का धब्बा होता है। एक दूसरा धब्बा आँख के नीचे होता है।

कपोल और कनपटी कलौंछ होती है। उसे नीली पट्टियों से ढका सा पाया जाता है। गर्दन के दोनों ओर श्वेत या हल्के पीले रङ्ग का धब्बा होता है। ठुड्डी तथा कण्ठ का रङ्ग श्वेत या हल्का पीला सा होता है। शेष अधोतल तथा निम्न पक्ष-आच्छादक गहरे प्रवालीय (मूँगे से लाल)



रेखिशीर्ष मीनरङ्क

रङ्ग के होते हैं। चोंच काली, आँख रक्त वर्ण, मुख का अन्तर भाग भी रक्त वर्ण, तथा पैर मूँगे से लाल होते हैं। मादा की निम्न चोंच का आकार स्थल लाल सा होता है।

रेखिशीर्ष का प्रसार क्षेत्र सिकिम से पूर्वी आसाम तक है। कच्चर,

सिलहट, मनीपुर तथा चिन पहाड़ियों में पाया जाता है। पूर्वी आसाम में १००० फुट ऊँचाई तक की पहाड़ियों में मिलता है। दक्षिण आसाम में २००० से ४००० फुट तक की पहाड़ियों में रहता है। यह लज्जालु और बस्ती से दूर रहने वाला पक्षी है। घने जङ्गलों में ही निवास करता है। जल के निकट नीची झाड़ियों पर भी बैठा पाया जाता है। मछली का शिकार कर यह एक स्थान पर ही बार-बार आकर बैठता दिखाई पड़ता है। मछली विशेष आहार है। कीट भी खाता है।

रेखिशीर्ष मीनरंक का जननकाल अप्रैल से जून तक है। यह छोटे नालों के कगारों या सघन हरियाली के जलहीन खड्डों में विवर सा बना कर अण्डे देता है। इसकी सुरङ्ग २$\frac{1}{2}$ या ३ इञ्च चौड़ी होती है। उसमें अण्डा देने का स्थान छः या आठ इंच लम्बा और चौड़ा होता है। यह विवर ऊपर की ओर खुदा होता है, केवल अंतिम छोर पर घूमा होता है और अण्डा देने के स्थल पर पहुँचता है। चार से लेकर छः अण्डे तक एक बार देता है। नर और मादा बिल्कुल निकट बैटते हैं। उन्हें सुरङ्गनुमा घोंसले में सहज पकड़ा जा सकता है।

वभ्रुशीर्ष गुरुतुंड मीनरंक

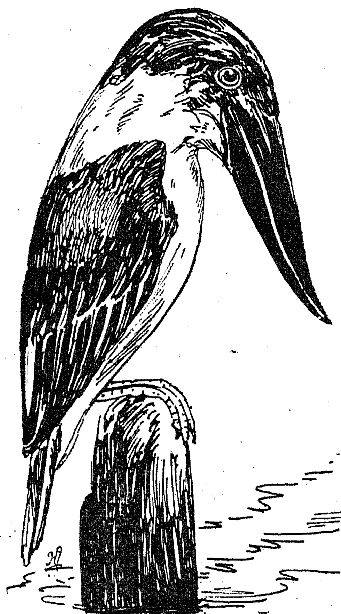
स्था० नाम या पर्याय नाम—बादामी कौड़िल्ल (हि०)
गुरियल (वङ्ग०)

आकार—पङ्ख—५$\frac{3}{4}$ से ६$\frac{1}{2}$ इञ्च तक, पूँछ— २$\frac{3}{4}$ इंच, गुल्फ—$\frac{2}{3}$ इंच, चोंच—३ या ३$\frac{1}{2}$ इंच।

गुरुतुंड मीनरंक (बादामी कौड़िल्ल) का आकार कबूतर से थोड़ा सा छोटा होता है। अन्य सभी रङ्गीन मीनरंकों से इसकी विशेष पहचान हो सकती है। इसका आकार बड़ा होता है। चोंच रक्त वर्ण की अत्यधिक नोकीली तथा बड़ी होती है। नर और मादा का समान रूप होता है।

यह अकेले या अलग-अलग जोड़ों रूप में जंगल के मध्य सोतों के निकट पाया जाता है।

इसका प्रसार भारत तथा सिंहल के सभी आर्द्र स्थलों में है। यह पक्षी निडर होता है। आदमियों की दृष्टि पड़ने पर भी यह नहीं भागता।



बभ्रुशीर्ष गुरुतुंड मीनरङ्क

परन्तु इसके मिलने के स्थान प्रायः घने वृक्षों युक्त या गहरी घाटियाँ, सोते, खड्ड आदि होते हैं अतएव यह अधिकतर नहीं दिखाई पड़ता। मछली के शिकार की टोह में यह कहीं झाड़ी या छिपे स्थान में पड़ा रहता है। शिकार पर दृष्टि पड़ते ही झपट पड़ता है। मछली को पकड़ने के लिए यह पानी में कभी-कभी डुबकी लगाकर भी उसका पीछा करता है।

इसका मुख्य आहार मछली है किन्तु और भी बहुतेरे जन्तु खाता है। मेढक, छोटे गिरगिट, घासों के साँप, केकड़ा, टिड्डी, टिड्डे आदि भी उसके आहार बनते हैं। घोंसलों से अल्पवय पक्षियों को भी चुराकर खा जाता है। इसकी उड़ान शक्तिशाली और तीव्रगति की होती है किन्तु गहरी छाया में धीरे-धीरे उड़ने का स्वभाव इसमें पाया जाता है।

इसका जननकाल जनवरी से जुलाई तक है। इस अवधि में कभी-कभी दो बार अण्डे देता है। जंगल के किसी सोते के खड़े कगारे में बिल खोदकर अण्डा देने का स्थान बनाता है। विवर का व्यास चार इंच तथा गहराई दो या तीन फुट होती है। चार या पाँच अण्डे एक बार में देता है। सभी मीनरंकों की भाँति इसके अण्डे भी श्वेत चमकीले होते हैं।

चन्द्रकान्त मीन रंक

स्था० नाम—किलकिला (हि०) दलेल (सिन्ध) बुल्ला
मछराला (चंबा)

आकार—पङ्ख—५ इंच, पूँछ—३ या ३$\frac{३}{४}$ इंच, गुल्फ—$\frac{१}{२}$ इंच से अधिक, चोंच—२ या २$\frac{१}{२}$ इंच।

चन्द्रकान्त मीनरंक (किलकिला) का आकार मैना और कबूतर के मध्य का होता है। यह चमकीले नीले रङ्ग का पक्षी है। गले से लेकर वक्षस्थल तक का भाग श्वेत होता है परन्तु शेष अधोतल, सिर तथा ऊपरी गर्दन का रङ्ग भूरा होता है। इसकी चोंच लम्बी, नोकीली भारी और लाल होती है। उड़ान के समय पङ्ख पर श्वेत धब्बा स्पष्ट दृष्टिगोचर हो सकता है। नर और मादा के समान रूप होते हैं। यह खेतों, बागों आदि में जलखंडों के निकट या दूर भी पाया जाता है।

साधारण चन्द्रकान्त या श्वेतवक्ष मीनरंक का प्रसार क्षेत्र एशिया माइनर, सीरिया, अरब, मेसोपोटामिया, ईरान, अफगानिस्तान, पश्चिमी

पाकिस्तान पंजाब तथा काश्मीर है। योरप में भूले भटके साइप्रस (भूमध्य सागर) तथा डेनमार्क तक पहुँचा पाया गया है।

इसकी अन्य उपजातियाँ भारत चन्द्रकान्त, सिंहल चन्द्रकान्त तथा कृष्णद्वीप (ऐंडमन) चन्द्रकान्त होती हैं। भारत चन्द्रकान्त मीनरंक सारे भारत में पाया जाता है। सिंहल तथ कृष्ण द्वीप उपजातियों में ऊपरी तथा अधोतल दोनों का रङ्ग गहरा होता है परन्तु साधारण या पाश्चात्य और भारत उपजातियों में ऊपरी तथा अधोतल दोनों हल्के रङ्ग के होते हैं। साधारण उपजाति में ऊपरी तल पर हरा रङ्ग अधिक और नीला रंग न्यून होता है परन्तु भारत उपजाति में ऊपरी तल पर नीला रंग अधिक और हरा रंग न्यून होता है।

चन्द्रकान्त मीनरंक बहु प्रचलित पक्षी है। यह धान के जलमग्न खेतों, कच्चे कुओं, गड़हियों, तथा रेतीले समुद्र तट पर बस्तियों से दूर या निकट पाया जाता है किन्तु यह जल पर उतना अधिक अवलम्बित नहीं रहता। जलखंडों से बहुत दूर भी पाया जा सकता है। जंगलों के बीच केचुए, गिरगिट, टिड्डे या अन्य कीट खाकर निर्वाह कर लेता है। चूहियों और छोटे पक्षी भी पकड़कर खा जाता है।

मार्च से जुलाई तक जननकाल है। कगारों में ६ या ७ फुट गहरा बिल बनाता है। ४ से ७ तक श्वेत अण्डे एक बार में देता है।

—:०:—

पक्षियों का प्रसारक्षेत्र

साधारण रूप में संसार के भिन्न-भिन्न देशों के राजनीतिक विभाजन के अनुसार हम जीव-जन्तुओं का भी विभाजन करने की प्रवृत्ति रख सकते हैं, परन्तु संसार के जीव-जन्तु, विशेषकर पक्षी हमारे राजनीतिक विभाजनों के बन्धन में बँधे नहीं हो सकते। फलत: संसार के विभिन्न भागों की प्राकृतिक अवस्था तथा जलवायु के अनुसार ही पशु-पक्षियों का विभाजन पाया जा सकता है। पक्षियों के प्रसार के सम्बन्ध में पक्षी-विज्ञान के विद्वानों ने इस प्रकार के कई विभाजन कर संसार के पक्षियों के विभिन्न प्रसारक्षेत्र मानने का प्रयत्न किया है। इन प्राकृतिक प्रसार-क्षेत्रों में एक विशाल विभाग महाध्रुववर्ती भूभाग कहा जा सकता है। इसमें समस्त उत्तरी गोलार्द्ध है जिसमें योरप, अफ्रीका का कुछ भाग, उत्तरी तथा मध्य एशिया, तथा उत्तरी अमेरिका सम्मिलित हैं। अन्य पक्षीप्रसार विभागों में इथ्योपिया, प्राच्य देश (भारत, चीन, सिंहल मलाया आदि), न्यूजीलैंड, आस्ट्रेलिया तथा पाश्चात्य ऊष्ण भूभाग (मेक्सिको से हार्न अंतरीप तक) नाम के पाँच क्षेत्रों को माना जाता है। इस प्रकार संसार को कुल छः प्राकृतिक पक्षी-प्रसारक्षेत्रों में विभाजित किया गया है।

महाध्रुववर्ती भूभाग के एक उपक्षेत्र की सीमा भारत के साथ हिमालय, अफगानिस्तान तथा बिलोचिस्तान की सीमा के लगभग अनुवर्ती पाई जाती है। यह उपक्षेत्र प्राच्य ध्रुवीय कहा जाता है। पाकिस्तान के पञ्जाब, सिंध तथा भारत के राजपूताना के मरुस्थल उस विशाल प्राच्य ध्रुवीय मरुक्षेत्र के भाग हैं जो उत्तरी अफ्रीका के अटलांटिक महासागर तट से लेकर मध्य चीन तक प्रसारित है।

भारत क्षेत्र या प्राच्य क्षेत्र का उप-विभाजन किया गया है। हिमालय, सिंहल, तक बर्मा को उप-भारत क्षेत्र नाम से एक उप-विभाजन माना जाता है किन्तु हिमालय का क्षेत्र इनसे समानता न रखकर चीन से अधिक साम्य रखता है अतएव उसे चीन तथा मलाया के साथ एक दूसरा उप-क्षेत्र मानते हैं।

इस रूप में यह स्पष्ट अनुभव किया जा सकता है कि पक्षियों के प्रसार की दृष्टि से भारत को एक इकाई मानना बहुत भ्रान्तिपूर्ण हो सकता है। यह कहना अनुचित हो सकता है कि भारत तथा हिमालय में पाए जाने वाले समस्त पक्षी भारतीय हैं। हमारे देश में तो बारहमासी या सदा रहने वाले पक्षी भी विभिन्न वातावरण होने से विभिन्न कोटि की रहन-सहन रंग रूप वाले होंगे। इसी दृष्टि से समस्त भारत को कई अनुभागों में विभाजित किया जाता है। इनका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार अनुमानित किया जा सकता है :—

(१) प्रथम पक्षी-प्रसारक्षेत्र गंगा का मैदान कहा जा सकता है जो पश्चिम में सिन्ध के मैदान को भी सम्मिलित कर अरब सागर से लेकर बङ्गाल की खाड़ी तक एक विस्तृत पट्टी बनाता है। इस प्रकार पश्चिमी पाकिस्तान का भाग भी हमारे देश के इस स्वाभाविक अनुविभाग के ही साथ तथा अनुरूप पाया जाता है। इस संयुक्त क्षेत्र की ऊपरी सीमा करांची से पेशावर तक की पहाड़ियों की श्रेणी से लेकर उत्तर में हिमालय की बाह्य श्रेणियों (उप हिमालय) का भूटान तक का भाग है। वहाँ से फिर दक्षिण की ओर बढ़कर यह सीमा पूर्व में सुन्दरबन तक फैली है। पक्षी-प्रसारक्षेत्र के इस अनु-विभाग की दक्षिणी सीमा रन की खाड़ी काठियावाड़ से लेकर दिल्ली तक, पुनः दिल्ली से दक्षिणपूर्व घूम कर आगरा से राजमहल तक है जहाँ से पुनः बङ्गाल की खाड़ी तक जाती है।

(२) द्वितीय अनुक्षेत्र इस मैदानी भाग का दक्षिण का शेष भारत कुमारी अन्तरीप तक कहा जा सकता है जिसका नाम अंग्रेज लेखकों ने पशुपक्षियों के वर्णन में सदा ही भारत प्रायःद्वीप रक्खा है। विन्ध्य मेखला से दक्षिण की भारतीय अधित्यका के साथ राजपूताने को भी मिला कर ही इस अनु-विभाग का विस्तार अनुमानित करना चाहिए।

(३) तृतीय अनुक्षेत्र हिमालय पर्वतमाला है । इसका विस्तार हिमालय के निम्न अञ्चल या तराई से लेकर ऊपरी शृङ्खला या पर्वतमाला में वृक्ष-वनस्पति उगने की रेखा तक है। वृक्षोत्पादन अन्तिम रेखा के परे का भाग तो महाध्रुवीय पक्षी-प्रसारक्षेत्र के विशाल भाग का ही भाग बनता है।

(४) चतुर्थ अनुक्षेत्र आसाम माना जाता है जिसके अनुरूप ही बर्मा भी है।

इन पाँच अनुक्षेत्रों में भी बर्षा की न्यूनता या बहुलता की दृष्टि से पुनः विभाग किए जाते हैं। इसी प्रकार हिमालय की विभिन्न ऊँचाइयाँ भी अपने क्षेत्र में विशेष रूप के जीव-जन्तु को प्रश्रय देती है।

भारतीय पक्षी नाम से हम जिन पक्षियों को साधारण रूप में पुकारना चाह सकते हैं, उनका प्रसार कुछ निश्चित रूप से व्यवस्थित पाया जाता है। हिमालय के पक्षियों की जातियाँ पूर्वी तथा पश्चिमी विभेद प्रकट करती दिखाई पड़ती हैं। इन दोनों का प्रसार-क्षेत्र में मध्य में नैपाल में परस्पर मिलता-सा है। पूर्वीय उप-जातियाँ प्रायः विशेष गहरे रंग की तथा छोटी होती हैं तथा पश्चिमी उप-जातियाँ प्रायः अपेक्षाकृत हल्के रंग की तथा कुछ बड़ी होती हैं। भारतीय प्रायद्वीप की उपजातियाँ भी उस जाति के पूर्ण बिस्तार-क्षेत्र की दृष्टि से परस्पर कुछ भेद-प्रभेद प्रकट करती हैं। यदि किसी पक्षी की जाति व्यापक क्षेत्र में प्रसारित होकर सारे भारत में तथा अन्य समीपवर्ती प्राच्य उप-क्षेत्रों में पाई जाती

है तो उसमें प्रायः यह देखा जायगा कि कई उपजातियाँ निम्न रूप की हैं :—

(१) उत्तर-पश्चिमी भूभाग के अर्द्ध मरुस्थल की उपजाति।

(२) आसाम के आर्द्र क्षेत्र तथा पूर्वी उप-हिमालय की तराई के क्षेत्र की उप-जाति।

(३) दक्षिण में उत्तरी कनारा से लेकर त्रावणकोर पहाड़ियों की अन्तिम छोर तक निम्न पच्छिमी घाट के वर्षा-बहुल क्षेत्र की उप-जाति।

इनके अतिरिक्त सिंहल एक चौथा भूभाग है जो प्राच्य क्षेत्र का ही एक पृथक उप-क्षेत्र है जहाँ चौथे प्रकार की उप-जाति पाई जायगी।

(४) इन उप-जातियों के प्रसार क्षेत्रों के मध्य भारतीय प्रायःद्वीप में एक उप-जाति से बदल कर दूसरी उप-जाति में मिलते हुए रूप की मध्यवर्ती उपजातियाँ भी पाई जा सकती हैं।

यदि किसी पक्षी का इतना विस्तृत प्रसार-क्षेत्र न होकर संकुचित प्रसार-क्षेत्र ही हो तो उपर्युक्त छोटे अनु उपक्षेत्रों को उप-जातियों का रूप विभिन्न करने में विशेष सक्रिय नहीं पाया जायगा। अतएव उसकी अनेक उपजातियों का अनुमान करना भी कठिन ही होगा। सिद्धान्त यह है कि आर्द्र स्थलों में गहरे रङ्ग के पक्षी उत्पन्न होते हैं तथा अनावृष्टि के स्थल या मरुप्रदेश में धूमिल रंग के पक्षी होते हैं। उत्तर तथा पश्चिम के भूभागों में आकार बड़ा होता है तथा दक्षिण पूर्व में उनका आकार छोटा होता है।

पक्षियों पर प्रवास का भी प्रभाव पड़ता है। जो बारहमासी पक्षी हैं उनका भी प्रसार-क्षेत्र किसी एक वर्ग-मील स्थल में भी अपरिवर्तित नहीं रह सकता। जो बहुसंख्यक प्रवासी पक्षी दल के दल अनुकूल ऋतु होने पर हमारे देश में ठेले चले आते हैं, उनके आगमन का तुरन्त प्रभाव पड़े बिना हमारे बारहमासी पक्षियों का प्रसार-क्षेत्र भी नहीं रह सकता। इनकी भी कुछ न कुछ व्यवस्था परिवर्तित स्थिति के कारण करनी ही

पड़ जाती है। आहार तो वही रहता है परन्तु उसके ग्रहण करने वालों में संख्या वृद्धि के साथ अपेक्षाकृत एक दूसरे से प्रबल या दुर्बल जातियाँ भी कुछ समय के लिए घुल मिल कर अपने अस्थायी प्रवास का काल काटने के लिए आ पहुँची हैं।

प्रवास के जो कारण हो सकते हैं उनमें ऋतुवैषम्य के साथ उत्तराखंडों में आहार की न्यूनता भी एक है। अतएव उत्तरी अक्षांशों पर निवास करने वाले पक्षी अपेक्षाकृत दक्षिणी अक्षांश के आहारप्रचुर भूभागों में पहुँचते हैं। अतएव वर्ष के एक विशेष मस में ये पक्षी प्रवास कर दक्षिण के भूभागों में पहुँच कर निवास करते हैं। इन प्रवासी पक्षियों को उत्तर के स्थलों में रहने पर सन्तानोत्पादन भी करते देखा जाता है जिसका समय उत्तरी गोलार्द्ध का ग्रीष्मकाल होता है। अतएव उत्तर के भूभागों में इनको ग्रीष्म-प्रवासी कहा जाता है। उत्तर के स्थलों को ग्रीष्म प्रवासस्थल अथवा सन्तानोत्पादन क्षेत्र भी कहा जाता है। इसके विपरीत दक्षिण के स्थलों में ग्रीष्म और वर्षा के बाद इनके आगमन का समय शीतकाल होता है अतएव इन भूभागों को इनका शीतकालीय या शरद् प्रवास कहा जाता है। कुछ पक्षी इन प्रवासों के मार्ग में कतिपय स्थलों पर उतरते भी हैं। उन स्थलों को केवल प्रवास-गमन-स्थल कहा जाता है तथा उन स्थानों पर दिखाई पड़ने वाले पक्षियों को प्रवास-यात्री पक्षी कहते हैं।

भारत की अवस्थिति उत्तरी तथा मध्य एशिया के विशाल क्षेत्र के दक्षिण हैं। इन क्षेत्रों में शरद्कालीन वातावरण बड़ा भयानक तथा कष्टप्रद होता है। उसके विपक्ष भारत में शरद ऋतु उतनी भयानक भी नहीं होती और कीड़े मकोड़े, अन्न तथा अन्य वानस्पतिक खाद्य पदार्थ आदि का प्रचुर आहार भी सहज सुलभ होता है। अतएव यह सर्वथा स्वाभाविक है कि उत्तर के इन स्थलों में अल्पकालीन किन्तु सुखद

ग्रीष्मकाल की समाप्ति पर बहुसंख्यक पक्षीदल दक्षिण की ओर प्रयाण करें।

भारत में उत्तर की ओर से पक्षियों के दलों का प्रवास जुलाई में ही प्रारम्भ हो जाता है, किन्तु सितम्बर में अधिकतम संख्या के पक्षी आते हैं। हिमालय की दोनों छोरों तथा मध्यवर्ती भागों से भी पक्षी पर्वतमाला पार कर भारत में प्रविष्ट होते हैं। इस रूप के प्रवासी पक्षी सारे भारत में फैल जाते हैं जिनकी पहुँच की अंतिम सीमा सिंहल है। ग्रीष्म के आगमन पर इन आगन्तुक दलों की संख्या न्यून होने लगती है। ये अपने पूर्व स्थलों को वापस जाने लगते हैं। फरवरी के अंत में इनकी लौटानी प्रवास यात्रा प्रारम्भ हो जाती है तथा मई के अंत तक सभी प्रवासी पक्षी भारत से वापस चले जा चुके होते हैं।

सिंहल या सीलोन संसार के उन इने गिने भूभागों में है जहाँ ग्रीष्म-प्रवासी पक्षी नहीं होते। यह भारत होकर प्रवास मार्ग की अंतिम दक्षिणी छोर पर स्थित है जिसके दक्षिण बहुत दूर तक कहीं भी स्थल भाग का नाम नहीं है।

भारत के शुष्क ग्रीष्मकाल की अपेक्षा वर्षा के पश्चात् शरद काल अधिक सुहावना, हरा-भरा तथा मनोमोहक होता है जिसका आनन्द पक्षी-जगत लेना चाहता है। अतएव भौगोलिक तथा प्राकृतिक परिस्थिति के कारण भारत को पक्षी-प्रसारक्षेत्र की दृष्टि से ऐसा देश पाया जाता है जहाँ भारत की सीमा से परे के भागों से आए ग्रीष्म-प्रवासी पक्षी नहीं होते। अपवाद स्वरूप केवल पश्चिमी पाकिस्तान तथा उसके निकटवर्ती भारत के कुछ भाग में ऐसे ग्रीष्म-प्रवासी पक्षी हो सकते हैं जो शरद् काल अफ्रीका में व्यतीत करते हैं तथा अरब का चक्कर लगा कर ग्रीष्म काल इधर व्यतीत करने आते हैं।

पक्षियों के प्रसार तथा प्रवास के विचार से हमें पक्षी-जगत के कई रूप दिखाई पड़ते हैं। इनमें पहले तो बारहमासी पक्षी हैं जो हमें अपने

बीच वर्ष के प्रत्येक मास में दिखाई पड़ते हैं। तोता, घरेलू गौरैया (गृह कुलिंग) कौआ, चील, गिद्ध, पीलक (कांचन), नीलकण्ठ (चाष) कबूतर, पण्डुक आदि सैकड़ों पक्षी हमें ऐसे रूप के अपने देश में मिलते हैं। इनको छोड़ कर अन्य पक्षियों में कुछ आंशिक प्रवास करने वाले पक्षी हो सकते हैं। ऐसे पक्षियों में हम पीतगल गौरैया (पीतगल कुलिङ्ग) तथा भारत नीलारुण शीजिरिका या बैंजनी शकरखोरा का नाम ले सकते हैं जो केवल उत्तर-पश्चिम में ग्रीष्मकाल में प्रवास करने पहुँचते हैं। सिंध में भी इन्हें ग्रीष्म-प्रवासी पाया जाता है तथा शीत काल में ये पश्चिमी भूभागों में चले जाते हैं। किन्तु इन पक्षियों की उपजातियों में ही कुछ को दक्षिणी पञ्जाब तथा सिंध (पाकिस्तान) में जहाँ ग्रीष्म-प्रवासी पाया जाता है वहाँ शेष भारत में इनकी अन्य उपजातियों को बारहमासी पाया जाता है। अतएव अपने प्रसार-क्षेत्र के केवल उत्तरी भाग में ही ये आंशिक रूप में प्रवासी होते हैं। ये ही ऋतु की अनुकूलता देखकर यदि वर्षा के आगमन पर कुछ बिलम्ब से प्रवास करने आते हैं तो इनको वर्षाऋतु-प्रवासी भी कहा जाता है।

बहुसंख्यक पक्षियों का दल हमारे देश में शरद्-प्रवासी रूप में आता है। ये पक्षी उत्तर के शीतोष्ण तथा शीत भागों में हिमालय के पार के भागों में सन्तानोत्पादन कर जाड़े में भारत में प्रवास करने पहुँचते हैं। इनमें उथले जल के पक्षी तथा हंसक, वक आदि की भी गणना है। किन्तु कुछ उथले जल के पक्षी, वक आदि बारहमासी भी पाए जाते हैं। हमारे देश का कोई भी शरद्-प्रवासी पक्षी दक्षिण की ओर से नहीं आता। हमारे ही देश के अपेक्षाकृत दक्षिणी भागों तथा सिंहल तक शरद् प्रवास के लिए जाते या वापस होते हुए पक्षी मध्यवर्ती स्थानों में हमें केवल प्रवास-यात्री रूप में दिखाई पड़ सकते हैं। इन स्थानों में अल्प कालीन विश्राम के समय इनकी संख्या अधिक भी होती है। पाटल चटक (गुलाबी तूती) तथा नारङ्गवक्षस शलभाश ऐसी ही पक्षी हैं।

पक्षियों के इन विभाजनों का पूर्णतः पृथक् रूप मानना उचित नहीं हो सकता। उनका रूप एक दूसरे विभाग से मिला या परिवर्तित भी हो सकता है। जो पक्षी शरद्-प्रवासी माना जाता है उसी के दल में से अधिकांश जहाँ ग्रीष्मकाल में हमारे देश से बिदा हो चुके होते हैं, वहाँ कुछ पक्षी उनमें से पीछे छूट कर बारहमासी रूप में पाए जा सकते हैं।

इन स्थितियों के अतिरिक्त हमें स्थानीय प्रवासी पक्षी भी मिलते हैं जो स्थान-स्थान पर अनावृष्टि, अतिवृष्टि आदि कारणों में से किसी असुविधा के कारण अपना जीवन कार्य कठिन जान कर अन्यत्र चले जाते हैं या किसी एक स्थान पर ही पहले सुनसान रहने पर भोजन की प्रचुरता तथा वातावरण की अनुकूलता हो जाने से बारहमासी पक्षियों का ही भारी दल आ पहुँचा हो सकता है।

हिमालय की सभी ऊँचाइयों के स्थल विभिन्न ऊँचाई के कारण विभिन्न स्थिति तथा हरियाली, कीड़े पतिंगे आदि के विभिन्न रूप प्रदर्शित करते हैं। उनमें ऋतु-परिवर्तन के कारण घोर हेर-फेर भी होता है। अतएव एक ऋतु की अपेक्षा दूसरी ऋतु की सुविधा तथा असुविधा के कारण पक्षियों का भी दल स्थानान्तरित पाया जा सकता है। एक ऊँचाई की अपेक्षा दूसरी ऊँचाई या ऊँची पर्वतमाला के स्थान पर तराई या दूर के मैदानी भागों तक पक्षियों को स्थानान्तरित होते पाया जाता है।

पुनर्वासित कषीका (कुस्या चहा)

पक्षियों का स्वाभाविक रूप से जो प्रसारक्षेत्र होता है उसमें परिवर्तन उपस्थित करने में मनुष्य या अन्य शक्तियों का हाथ भी हो सकता है। संसार में कितनी ही जाति के पशु-पक्षियों को मानव की आखेट-वृत्ति या अन्य प्रबल पशुओं के आक्रमण से कुछ समय में सर्वथा विलुप्त भी हुए पाया जाता है। कितने ही अवसरों पर किसी जाति के पशु या पक्षी का पूर्ण लोप होने की आशंका से उनकी रक्षा के कुछ कृत्रिम साधन उत्पन्न करने

से उनकी जाति लुप्त होने से बचा ली जाती है। कभी ऐसा भी होता है कि किसी विशेष क्षेत्र में किसी जाति के पशु पक्षी का प्रसार है किन्तु कालान्तर में संसार से तो उस विशेष जाति का बिल्कुल लोप नहीं हो जाता किन्तु उस विशेष क्षेत्र से ही उनको नष्ट होते देखा जाता है। ऐसी स्थिति में किसी प्रकार मानव-प्रयत्नों से उस विशेष क्षेत्र में उस विशेष जाति के पशु या पक्षी का पुनः प्रसारित करना या लुप्त होने से बचा सकना सम्भव हो सकता है। ऐसे जन्तुओं में कषीका पक्षी का भी नाम लिया जा सकता है जिसे हैवरगेट द्वीप में पुनः बसा कर इगलैंड में पक्षियों की जातियाँ रक्षित करने का एक अनुपम उदाहरण पाया जा सकता है।

कषीका या कुस्या चहा हमारे देश में भी होता है। इसकी चोंच हँसियानुमा लम्बी तथा ऊपर की ओर थोड़ी झुकी होती है। शरीर का रङ्ग काला तथा श्वेत होता है। आज से तीन सौ वर्षों पूर्व यह पक्षी इंगलैण्ड में नारफोक के तटीय दलदली स्थलों में ग्रीष्मकाल में पाया जाता था। उन्नसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में जब तटीय भागों में बाँधों की व्यवस्था कर पानी सुखा दिया गया और ग्रामीण जनता अपनी पहुँच वहाँ तक कर सकी तो कषीका के अंडों को बहुसंख्यक रूप में लोग सहज प्राप्त कर आहार का भाग बनाने लगे। परिणाम निश्चित ही था। इसकी जाति लुप्त हो चली। कषीका को गोली का शिकार बना कर उसके सुन्दर परों को भी मछवाहे प्राप्त कर विक्रय करते। एक ओर तो अंडे ही हड़प लिए जायँ और दूसरी ओर वयस्क पक्षी गोली के निशाने बनते रहे उस स्थिति में इसकी रक्षा कैसे होती। अतएव उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य भाग में कुछ बचेखुचे घोंसलों के स्थल भी नष्ट हो गए। यदि बाद में कुछ कषीका इक्के दुक्के आकर अपने घोंसले बनाते भी तो आखेटक उनको गोली से मार कर पक्षी त्वचा संग्रह करने वालों तथा अन्य संग्रहकर्ताओं के हाथ

उनका शव बेच कर लाभ उठाते। अतएव जन्तु रक्षा अधिनियम घोषित होने पर भी कषीका का इंगलैंड में निवास या ग्रीष्म प्रवास एक भूतकाल की ही घटना हो गई, परन्तु उत्तरी सागर के पार ये पक्षी अन्यत्र ग्रीष्म प्रवास कर सन्तानोत्पादन करने का क्रम संचालित ही रखते रहे। केवल इंगलैंड के इस नारफोक तटीय प्रवास स्थल से उनका लोप हो गया।

कषीका की पूर्व ग्रीष्म-प्रवास कथा सुन कर इंगलैंड के अनेक पक्षी विज्ञान प्रेमियों के हृदय में अभिलाषा उठती थी कि उनके देश में भी एक बार फिर कषीका पूर्ववत ही अपना ग्रीष्म-प्रवास तथा सन्तानोत्पादन स्थान बनावे। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में इस दिशा में भारी कठिनाइयाँ थीं। एक तो उपयुक्त स्थल नहीं रह गए जहाँ कषीका पक्षी आकर अपने घोंसले बनावें। दूसरे पर्यवेक्षकों तथा छायाचित्र (फोटो) उतारने वालों की भीड़ के कारण कषीका इंगलैंड की भूमि में ग्रीष्म-प्रवास कर नहीं पाता था।

१६३२ ई० में कषीका को ग्रीष्म-प्रवासी देखने के लिए इंगलैंड में एक अद्भुत प्रयत्न किया गया। उस समय दो जोड़े कषीका ने आयरलैंड में आकर अपने घोंसले बनाए थे। उधर १६३६ में द्वितीय महायुद्ध छिड़ गया। पूर्वी ऐंगीलिया समुद्रतट जनशून्य सा बन गया। जहाँ-तहाँ इक्के दुक्के कषीका आकर इन निर्जन स्थानों में घोंसला बनाते, परन्तु उनके अंडे नष्ट हो जाते। १६४० तथा १६४६ में ऐसी घटनाएँ हुईं १६४४ में तो कषीका को शिशु के साथ देखा गया परन्तु बात यहाँ तक ही रही। १६४७ में इंगलैण्ड के उसी समुद्रतटीय भागों में कुछ आशाप्रद घटनाएँ घटित हुईं। कषीका का पुनर्वास एक तथ्य सिद्ध होता दिखाई पड़ा। सफोक प्रदेश में चार जोड़े कषीका ने आठ शिशु उत्पन्न कर पोषित किए तथा हैवरगेट द्वीप में उसी समुद्रतट पर चार या पाँच जोड़े

कषीका ने आठ शिशु उत्पन्न किए। पक्षियों के इन दोनों छोटों उप-निवेशों की रक्षा करने के यथेष्ट प्रयत्न किए। पक्षी-संरक्षक राजकीय परिषद् ने भी बड़ी क्रियाशीलता दिखाई। स्थान को किराये पर ले लिया गया तथा सन्तानोत्पादन काल में उनके पर्यवेक्षण तथा रक्षा के लिए कर्मचारी नियुक्त किए गए। १९४८ में सफोक के सन्तानोत्पादन स्थल का तो कषीकाओं ने परित्याग कर दिया परन्तु हैवरगेट को लौट आये तथा किसी अन्य स्थल पर वहाँ अपना ग्रीष्म-प्रवासस्थल बनाया। उस वर्ष कुल २३ शिशु कषीका उत्पन्न हुए। इस घटना से उत्साहित होकर पक्षी-संरक्षक राजकीय परिषद् ने उस द्वीप को क्रय कर लिया। उस २०० एकड़ विस्तार के द्वीप की रक्षा तथा सुधार के विभिन्न उद्योग किए गए। मारक चूहे नष्ट कर दिए गए। बाँध सुधारे गए। पानी का तल नियन्त्रित किया गया तथा कुशल पर्यवेक्षकों का दल नियुक्त किया गया।

१९४९ में सत्रह जोड़े कषीका ने ३१ शिशु उत्पन्न किए। अगले वर्ष २१ जोड़ों ने ४० से भी अधिक शिशुओं को उत्पन्न तथा पोषित करने में सफलता प्राप्त की।

कषीका ने मनुष्य की कोमल वृत्तियों से लाभ उठाकर अपने लिए सुरक्षित सन्तानोत्पादन स्थल प्राप्त किया। उनकी क्रमशः वृद्धि होती गई परन्तु १९५३ के प्रारम्भ में एक प्राकृतिक विपत्ति आ खड़ी हुई। समुद्र की लहरों के भयानक प्रकोप ने हैवरगेट द्वीप को मग्न करने का सङ्कट खड़ा किया। परन्तु मानवबुद्धि तथा कौशल ने केवल कषीका के स्वागत के लिए स्थायी क्षेत्र सुरक्षित रखने का भगीरथ प्रयत्न किया। बाँधों की मरम्मत प्रारम्भ हुई। पंप लगाकर द्वीप समाधिस्थ करने वाले जल को उलीच फेंका गया। कषीका के ग्रीष्म-प्रवास के लिए आने के ठीक पूर्व तक द्वीप का रूप निवास योग्य बना दिया गया। उस समय तक पानी ही उलीचा जा सका था। सारी भूमि बाढ़ के वापस चले जाने पर उजाड़खंड सी प्रतीत होती थी। परन्तु कषीका ने ऐसे रूप के स्थल को

भी अपने ग्रीष्म प्रवास तथा सन्तानोत्पादन के लिए ग्रहण किया। उसे भूमि पर घोंघों का प्रचुर आहार सुलभ हुआ। १६५२ में चालीस जोड़े कष्पीका प्रवासी बने थे। १६५३ में भी तूफान का सङ्कट मानवप्रयत्नों से दूर होने पर उतनी ही संख्या के जोड़े कष्पीका ने वहाँ अपना प्रवास-स्थल बनाया। यह पक्षी-विज्ञान प्रेमियों के लिए बड़े हर्ष का संवाद था। कुछ लोगों का यह भी कथन है कि महायुद्ध काल में हालैंड में समुद्र की बाढ़ तथा अन्य कारणों में कुछ कष्पीका ने हालैंड का परित्याग कर इंगलैण्ड में अपना ग्रीष्म-प्रवासस्थल बनाना निश्चय किया हो। बात चाहे जो हो, परन्तु इंगलैण्ड के पक्षी-विज्ञान प्रेमियों का उद्योग तथा तत्परता अवश्य ही सराहनीय कही जा सकती है जिसके कारण कष्पीकाओं ने किसी प्रकार इंगलैण्ड में ग्रीष्मकाल में जाने पर अपने सन्तानोत्पादन में भारी बाधा का अनुभव करने का अवसर नहीं प्राप्त किया।

कष्पीका एक विचित्र पक्षी है। उसके ग्रीष्मकालीन प्रवास में पक्षी-पर्यवेक्षकों ने उनके जीवन-क्रम का सूक्ष्मतापूर्वक निरीक्षण का अवसर प्राप्त कर बहुत सी बातें ज्ञात कीं। उनके व्यक्तिगत तथा सामूहिक जीवन-घोंसला, निर्माण, अंडों की विभिन्नता, अंडे सेने, शिशुपालन, तथा शिशुओं के उड़ान-प्रयास आदि के सम्बन्ध में यथेष्ट जानकारी उनके सदुद्योगे का ही प्रतिफल कहा जा सकता है।

—:०:—

सरल विज्ञान पुस्तकमाला

शिकारी पक्षी

सुपर्ण पक्षी का नाम उपनिषदों में आता है। रामायण में जटायु का उल्लेख पाया जाता है। उलूक (उल्लू), श्येनक (बाज), सञ्चान (शिकरा) गिद्धराज, श्वेतभासक (भंगी गिद्ध) आदि नाम भी हम भूलते जा रहे हैं तथा नागरिक जीवन के प्रसार से प्रकृति के इस मनोरम क्षेत्र के परिचय से हमें वंचित रखा जा रहा है। पक्षी ग्रंथावली की इस पुस्तक में इन पक्षियों की पहचान, आकार-प्रसार क्षेत्र आदि सरल रूप में दिया गया है। हिंदी में यह एक नया प्रयास है। अधिकांश पक्षियों के चित्र उनके वर्णनों को सजीव बना देते हैं। सब पक्षियों के स्थानीय या पर्याय नाम भी यथासम्भव दिये गये हैं।

पक्षियों के परिचय के साथ कुछ अध्याय पक्षियों के जीवन के सम्बन्ध में भी है। कुछ पक्षी क्यों प्रवास करते हैं, एक अध्याय में इसकी भी चर्चा है। पक्षियों के अङ्गों को भी अन्तिम अध्याय में चित्र देकर वर्णित किया गया है।

पक्षी ग्रन्थावली के शेष चार ग्रन्थ भी शिकारी पक्षी की तरह पृथक्-पृथक् पूर्ण हैं जिनमें चित्र देकर अन्य पक्षियों का वर्णन है। वे सब प्रकाशित हो चुकी हैं। हिंदी में अभी तक कोई ऐसी ग्रंथावली पक्षियों के सम्बन्ध में नहीं निकली है जिसमें इतने अधिक पक्षियों का वर्णन सचित्र रूप में एकत्र पढ़ने को मिल सकता हो।

मूल्य २) रु०

किताबमहल ※ प्रकाशक ※ इलाहाबाद